Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोगेंद्र पॉल

बयानात

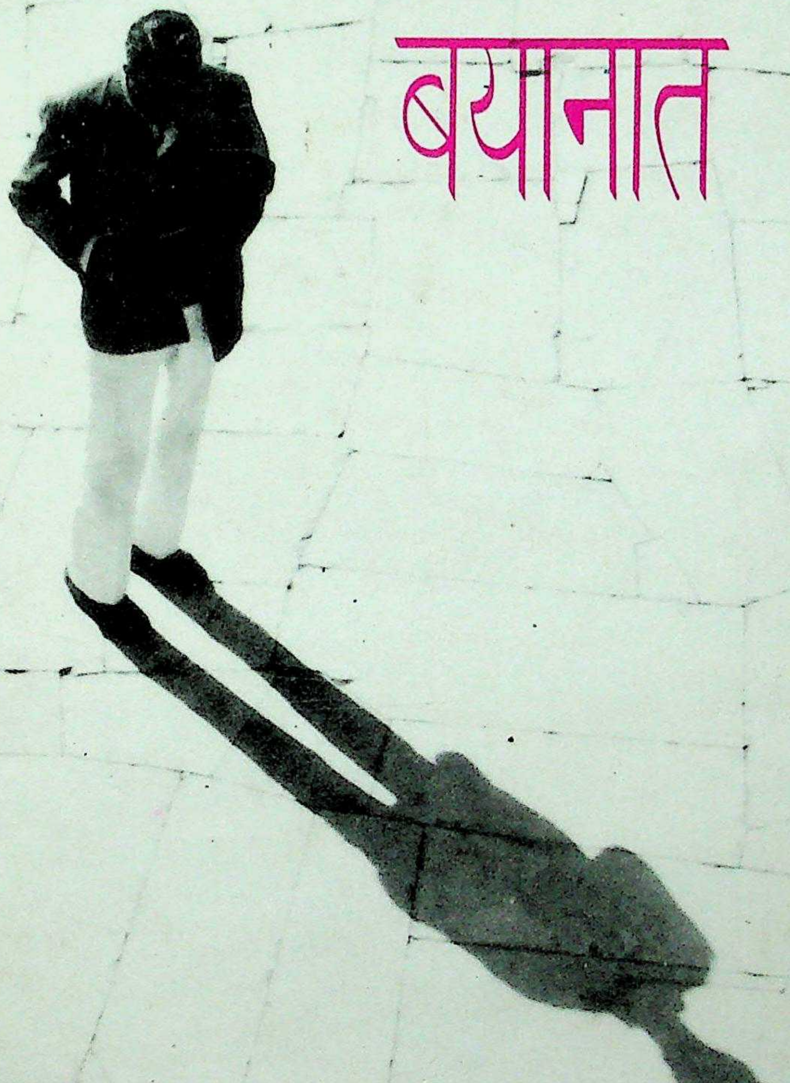

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समकालीन उर्दू कथा-साहित्य में जोगेंद्र पॉल से ज़्यादा शायद ही कोई कथाकार इतना सृजनात्मक और चिंतनशील रहा है कि इन दोनों पहलुओं पर बात करते हुए जोगेंद्र पॉल से बचना संभव नहीं है। उसने भावनाओं की पेचीदगी के लिए जिस तहदार भाषा का इस्तेमाल किया है उससे एक सृजनशील कलाकार के निरीक्षण और चित्रण के समूचे तनाव अभिव्यक्त हो जाते हैं। उसकी इस अद्‌भुत विशेषता ने उर्दू को अचानक बहुत समृद्ध बना दिया है और वह हमारे कथा-साहित्य में सिर्फ अपने इस कमाल ही की बुनियाद पर जिंदा रहेगा।

मोहम्मद अली सिद्दीक़ी :
जोगेंद्र पॉल का फ़न

बयानात में जोगेंद्र पॉल का वर्णनात्मक गद्य कहानी के साथ-साथ अर्थ की एक पूरी दुनिया उद्‌घाटित करता है। आज की विश्व-सभ्यता में जिन तीनों शक्तियों के बीच संघर्ष हो रहा है वे हैं—विज्ञान, कला और जीवन। प्रस्तुत उपन्यासिका में दिलीप विज्ञान और टैक्नोलॉजी की देन यांत्रिक संस्कृति का प्रतीक है जो इस संस्कृति की ही तरह निष्फल और अनुत्पादक है। सृजनशील कलाकार साहू कला और साहित्य की रचनात्मक प्रक्रिया का प्रतिनिधि है जो आज भी मानवीय मूल्यों और भावनाओं से प्यार करता है। और कहानी की नायिका सीमा स्वयं जीवन है जो विज्ञान और कला के दो दायरों के बीच सरहद पर खड़ी है। प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का यही कमाल जोगेंद्र पॉल की दूसरी कहानियों में भी मिलता है।

क़मर रईस :
जोगेंद्र पॉल, फ़न और शख़्सीयत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सारांश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बयानात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकमात्र वितरक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोगेंद्र पॉल

बयानात

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

हिंदी अनुवाद
कृष्णा पॉल

अक्षरा फाउण्डेशन
सोराब हाउस, कोलाबा कॉज़वे
मुम्बई, द्वारा प्रदत्त
उपहार

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No....5153....
Dated.....28/12/23

सारांश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्य : रु. 75.00

सर्वाधिकार © जोगेंद्र पॉल

प्रकाशक : सारांश, 14 स्कूल लेन, नई दिल्ली-110001; पहला संस्करण: अगस्त 1994; लेजर सैटर: कंप्यूटेक सिस्टम्स, शाहदरा, दिल्ली-110032; मुद्रक : जुपिटर ऑफसेट प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-110032

BAYANAT

Novel by Joginder Paul

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साहित्यकार होने के नाते मेरे व्यक्तित्व की कोई पहचान नहीं है, या मेरी पहचान के चिह्न सृष्टि के सभी ऐसे स्रोतों में हैं जो मेरी नज़र से बाहर नहीं। मैं जो कुछ भी देखता हूँ, वही बन जाता हूँ, यही मेरी पहचान है।

जोगेंद्र पॉल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं सच बोलूँगा
सारे का सारा सच
और सच के सिवा कुछ नहीं !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका पति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

एक

सच्चाई के कई रूप हैं और इनमें से सबसे आकर्षक रूप झूठ का है, यही कारण है कि मैं झट ही सीमा से विवाह करने पर तैयार हो गया हूँ, वरना मैं इतनी नेकनीयती से इतना बड़ा झूठ कैसे बोल सकता हूँ ?

''क्या तुम, दिलीपचंद्र, पुत्र ज्ञानचंद्र, सदा के लिए अपना सारे का सारा सीमा, पुत्री उमेश राय, के हवाले करते हो ?''

यह क्योंकर संभव है कि मैं सदा के लिए अपने आपको एक ही सीमा के हवाले कर दूँ ? इस सीमा के पार अनगिनत सीमाएँ हैं और उनके पार और अनगिनत सीमाएँ, किंतु मेरे पल भर के जज़्बे से मेरी आँखें खुली रह गई हैं और मेरी अंधी अंधी मुखरता ने बड़े भोलेपन से स्वीकार कर लिया है कि मुझे यही सीमा सदा के लिए स्वीकार है। पर एक पल की बात सदा की बात नहीं होती, सदा की बात पल बे-पल हो जाती है। मैं चाहूँ तो भी एक पल की कैफ़ीयत को सदा के लिए अपने ऊपर कैसे लादे रखूँ ? — मेरे सारे वादे मुँह से निकलते ही उसी पल निभ जाते हैं और न भी निभें तो मैं जिम्मेदार नहीं, क्योंकि एक आदमी सदा वही नहीं होता, बस उसी एक पल वही एक होता है। अपना कोई वादा निभाने का यत्न किए जाना व्यर्थ ही किसी मर-खप गए पुरुष के वादे को अपने ऊपर लादे चले जाना है। वादा करना शायद अस्वाभाविक नहीं परंतु वादा निभाना बड़ा अस्वाभाविक है। मैं अपनी एक क्षण-भर की भावना के लिए सारी उम्र क्यों बलि चढ़ा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूँ ? एक सीमा इतनी बड़ी ज़िंदगी को कैसे समेट सकती है ?

सीमा का बाप डॉक्टर राय कई प्रोफेशनल साइंटिफ़िक प्रोजेक्ट्स में मेरा सीनियर सहकारी रहा है। मुझे वह विज्ञान की कोई प्राचीन टाईप रेफ्रेंस बुक लगता है जिसके पहले तथा बीच के अध्याय तो प्रचलित शब्दावली से भरे पड़े हैं और अंतिम अध्याय उसकी घरेलू पसंदों से। इन पसंदों में उसकी बेटी सीमा सबसे आगे है।

"दिलीप–"

"जी ?"

"आज मेरी बेटी सीमा आ रही है।" डॉक्टर राय की बेटी बनारस में पी. एच. डी. के लिए फ़िक्शन की किसी समस्या पर काम कर रही थी। मैं प्रायः हँसा करता कि केवल फ़िक्शन से किसी को क्या समस्या पेश आ सकती है।

"तुम उससे मिलकर बहुत खुश होगे दिलीप।" डॉ. राय को मुझसे अपना कोई पेपर पढ़वाना होता तो वह यही कहता, "इसे पढ़कर तुम बहुत खुश होगे दिलीप।" और मैं तुरंत उत्तर देता, "मैं इसे ज़रूर पढ़ूँगा डॉक्टर।"

"मैं उससे ज़रूर मिलूँगा डॉक्टर।"

मेरे भोले और वृद्ध मित्र को मेरे आदरपूर्ण परिहास का एहसास न हुआ। परंतु सीमा को देखकर मैं ठिठककर रह गया, जैसे कैमरे के दिल पर एकाएक सामने आए हुए व्यक्ति का चित्र उतर आता है। पर मेरा दिल कोई साधारण फ़ोटोकैमरा नहीं, बल्कि एक्सरे मशीन है। उस पर किसी लड़की की बाह्य छवि उतरने की अपेक्षा उसका बेशकल-सा बिंब बनता है और बस। परंतु आश्चर्य है कि सीमा का पूरा नाकनक़्श मेरे दिल और दिमाग़ की दीवार पर खिंच आया। कथा साहित्य की यह विद्यार्थी मुझे इतनी असत्य मालूम हुई कि यथार्थ पर से मेरा विश्वास स्वयं ढीला पड़ गया।

वह किसी अविश्वसनीय कथा-पात्र के समान अत्यंत मनोरम लग रही थी। इतनी कि मुझे भी पता न चला कि मैं उसमें भरपूर रुचि ले रहा हूँ। मैंने तो यूँ ही ज़रा देखने के लिए किताब का एक पन्ना पलटा था, पर देखते-देखते कहानी में उलझकर रह गया—फिर ?''' फिर ?''' और'''

और डॉक्टर ने सुझाया कि तुम दोनों आपस में इतने घुल-मिल गए हो, शादी क्यों नहीं कर लेते ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन दिनों मैं एक पौधे पर रिसर्च कर रहा था। उस पौधे की जाति के नर और मादा एक-दूसरे से दूर-दूर उगते हैं और ऊपर-ऊपर एक-दूसरे को देखकर उनकी जड़ें नीचे-नीचे एक-दूसरे की ओर बढ़ती चली जाती हैं और अंत में मिलते ही लिपट जाती हैं।

''बताओ भाई, मेरी बेटी से शादी करोगे ?''

''जी हाँ।'' मैंने बिना सोचे-समझे उत्तर दिया, यद्यपि मुझे विश्वास है कि बिना सोचे-समझे मैं अपने माँ-बाप के यहाँ पैदा भी न हुआ हूँगा।

''अगर तुम्हें सोचना है तो सोच लो।''

परंतु जिस भलेमानस की जड़ें अपनी मिट्टी के भीतर ही भीतर इस प्रकार जकड़कर रह गई हों, वह खाक़ सोचेगा···

''मैंने खूब सोच लिया है डॉक्टर, यदि सीमा को कोई आपत्ति न हो तो मुझे यह संबंध स्वीकार है।''

परंतु मेरी पहली शादी ? डॉक्टर राय को मालूम न था कि मैं दूसरी शादी कर रहा हूँ, कि मैं अपनी पहली पत्नी को अंत समय तक तलाक़ नहीं दे सकता, और कि अपनी पहली पत्नी के प्रेम में मुझे अपने तन-मन का होश नहीं रहता। वास्तव में मेरा प्रेम तो वही है। सीमा तो मेरी एक छोटी-सी इच्छा है जो भड़क-भड़ककर मेरी कामना बन गई है। अपनी प्यारी पत्नी के होते हुए किसी अन्य स्त्री पर दिल आ जाए तो आदमी इस दूसरी स्त्री से केवल इसीलिए ब्याह करता है कि उसे कुछ दिनों के लिए रखैल बना ले, बस इतने दिन कि कामना भड़क-भड़ककर बुझ जाए। सदा के लिए तो पत्नी ही होती है जो बच्चे जनती है, जो हमारे मरने के बाद हमें मर जाने से बचा लेते हैं। मेरी पहली पत्नी साइंस है। साइंस की आत्मा मेरी आत्मा में समा गई है। हम दोनों की आत्माओं के मिलने से कई सूरमा पैदा होंगे और उनके कारण मेरा नाम बना रहेगा।

मेरी संतान केवल साइंस की कोख में से जन्म ले सकती है क्योंकि पाँच वर्ष पहले मैंने अपना ऑपरेशन करवा लिया था। मुझे डर था कि साइंस बेवदन है, ऐसा न हो कि किसी सुंदर बदन की चाह मुझे उसके बच्चों का बाप बनाकर साइंस से जुदा कर दे, मेरी पहली मुहब्बत के बच्चे अपने जन्म से पहले ही मर जाएँ···

परंतु मैंने सीमा से शादी कर ली है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर बड़ी इच्छा की पूर्ति से पहले दूसरी इच्छाएँ मनुष्य को अपनी ओर खींचती हैं। मेरी राह में भी सीमा खिंच आई है और मेरे क़दम रुक गए हैं। और मुझे अपनी इस छोटी-सी इच्छा पर विश्वास किए बिना बन नहीं पड़ी है। झूठ इतना प्यारा लगने लगे तो हम उसे बड़ी सच्चाई से बोल देते हैं। सीमा से शादी करके मैंने सचमुच झूठ ही बोला है क्योंकि उसने मेरे बच्चों की माँ बनने के लिए मुझसे शादी की है, लेकिन मैंने अपनी काम-वासना को इस सामर्थ्य से इसलिए वंचित कर दिया है कि मेरी जायज़ संतान की अधिकारी केवल मेरी मुहब्बत है, और मेरी मुहब्बत केवल साइंस है।

तो फिर मैंने सीमा से शादी क्यों की है ?

सीमा मेरी ज़रूरत की ज़रूरत है, मेरे खाने-पीने की इच्छा। मैं भूखा रहा तो मुहब्बत कैसे करूँगा ? लँगड़े को भी भूख सताने लगे तो उसका सारा शरीर टाँगें बनकर उसे भोजन के निकट ले आता है और वह भूल जाता है कि उसकी टाँगें नहीं हैं। सीमा के पिता को विवाह की स्वीकृति देते हुए सचमुच मुझे याद नहीं रहा कि मैं ऑपरेशन करवा चुका हूँ। मैं अभी भूला-भूला-सा हूँ और बड़े आनंद और मस्ती से बंजर भूमि पर हल चला रहा हूँ, पत्थर को पानी दे रहा हूँ जो सिंचित होने की अपेक्षा ऊपर-ऊपर से भीग-भीग जाता है।

हमारे शहर के उजड़े हुए पश्चिमी भाग में एक बहुत बड़ा मंदिर है जिसमें स्थान-स्थान पर आदमक़द गोलमोल छिले हुए पत्थर पड़े हैं और जिन नारियों के संतान नहीं होती वे प्रतिदिन सूर्यास्त के पहले यहाँ आती हैं और इन पत्थरों पर पानी डाल-डालकर इन्हें खूब नहला देती हैं। परंतु दूसरे दिन उनके आने पर ये पत्थर यथापूर्व सूखे होते हैं मानो उनके शरीर में पानी की एक बूँद भी न समाई हो। शायद ये छिले हुए पत्थर वे लोग हों जो मेरी तरह किसी आदर्श से ब्याह रचाकर भगवान बन जाना चाहते हैं लेकिन भगवान न बन सकने के डर से अपना पुरुषत्व तरशवा लिया है…

मैं सोचता हूँ मैंने ऑपरेशन क्यों करवाया। खेतों की ओर उमड़ते हुए पानी का रुख वापस पानी ही की ओर क्यों मोड़ दिया ? मिट्टी में समो-समोकर पानी तृप्त होता है, अपने-आपमें डूबकर उसकी प्यास नहीं बुझती। परंतु क्या करूँ, मुझे एक सीमा या दस सीमाओं की आबादकारी का काम भी पसंद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं। घरेलू विस्तरों की सीमाओं की आबादकारी से पहले ही हमारी दुनिया के ज़रूरतमंदों और गुलामों की संख्या बेहिसाब हो रही है। मैं साइंस और सच्चाई को वश में लाकर उन्हें फलदायक और उपयोगी बनाना चाहता हूँ। मुझ जैसे लोग न होते हो सच्चाइयाँ बाँझ की बाँझ रह जातीं, और तो और वह अपने झूठ भी पैदा न कर पातीं।

मैंने सीमा से शादी करके झूठ अवश्य बोला है, किंतु हम जब सौ झूठों का पोषण करते हैं तो कहीं एक सत्य जन्म लेता है। इस झूठ से मेरी सृजन की वेदना सो जाती है तो मैंने क्या बुरा किया है ? पहली बार सीमा को देखकर मुझे बड़ा आनंदमय एहसास हुआ कि प्रकृति मेरे शरीर में मार्फिया इंजैक्ट कर रही है। (अधिक काम के कारण कई बार मुझे नींद न आती तो मैं अपने-आपको मार्फिया का इंजैक्शन लगाकर मज़े से पड़ जाता।)

''इससे तो अच्छा है कि घर में कोई औरत डाल लो... '' मेरा एक डॉक्टर-मित्र मुझे राय दिया करता था (मेरी सेक्रेटरी मिस अमीर का भी कहना था कि मैंने औरत के बिना नाहक अपने जीवन को इतना कठिन बना रखा है।)

''औरत क्या मार्फिया की शीशी है डॉक्टर ?'' मैंने उससे पूछा था।

''यैस... ए... नेचर मेक ! नो बैड आफ्टरइफैक्टस ! जब चाहो तर-बतर होकर मज़े से सो जाओ।''

''ना बाबा, औरत बड़ी डिस्टर्बिंग होती है।''

''तो मैस्टरवेशन कर लिया करो मेरे भाई, पर अपने इस मार्फिया से छुट्टी लो।''

मैंने अपने आदर्श के साथ इसलिए विवाह किया था कि भगवान बन जाऊँ। परंतु भगवान् भी मेरी तरह बड़ा मेहनती वैज्ञानिक है। वह भी अपने सारे दिन के परिश्रम और चिंतन से थककर चूर हो जाता है और उसका आदेश है कि रात अपनी सितारोंवाली चादर ओढ़कर उससे मिलने के लिए प्रतिदिन आसमान पर हाज़िर हो। अँधेरा सोया पड़ा रहने के लिए है। ज्यों-ज्यों भगवान की नींद गहरी होती जाती है त्यों-त्यों रात की सितारोंवाली स्याह चादर भी और गहरी होती जाती है और उसकी स्वप्नमय कालिमा पर तारों की चमक और चमकीली, और भगवान मदहोश होकर सोया पड़ा रहता है, चाहे इस बीच पाप-लोक के वासी अँधेरे-अँधेरे में अपने झंडे क्यों न गाड़ लें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमा को पाकर मेरे लिए दिन के अटूट चौबीस घंटे, दिन और रात में संतुलित हो गए हैं। ऋषियों-मुनियों की समाधियाँ केवल इसलिए नहीं टूटतीं कि अप्सराएँ इन्हें तोड़ने के प्रयास में होती हैं, बल्कि इसलिए भी कि ऋषि-मुनि भी बंद आँखों से दूर-दूर के विस्तार पर नज़र जमाए अचानक अपनी आँखें खोल लेने को बेचैन हो जाते हैं।

"नहीं सीमा, जाओ नहीं। मैं वास्तव में तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था।"

शायद यूँ होता है कि दूर-दूर के दृश्यों की झलक के लिए हम अपनी आँखें बंद कर लेते हैं और जब आँखें बंद किए होते हैं तो जो कुछ दूर-दूर होता है वह बिल्कुल सामने आ जाता है और सामने का दृश्य कहीं पार्श्व में चला जाता है; और फिर यूँ होता है कि जब हम नियमबद्ध आँखें बंद किए दूर-दूर के दृश्य अपने ऐन सामने देख रहे होते हैं तो फासलों पर नज़र जमाने की चाह से बेचैन होकर सामने से नज़र हटाकर पार्श्व की तरफ देखने लगते हैं—यानि वही कुछ जो आँखें खोलने पर हमारे ऐन सामने होता है, और हम अनायास आँखें खोल लेते हैं।

"आओ सीमा, मुझे विश्वास नहीं होता तुम मेरे इतनी निकट हो। मेरी निगाहें दूर-दूर फैली हुई थीं और तुम्हारी धुँधली शक्ल मुझे इससे भी दूर दिखाई दे रही थी। परंतु तुम तो यहाँ हो... मेरे पास... "

यदि सारी सृष्टि की दूरी हमारे इतने निकट हो जितना हमारा ज़ेहन तो नज़दीकियाँ दूर क्यों लगें ? निरीक्षण का वैज्ञानिक अंदाज़ तो यह है कि आँखें खोलकर अपने आस-पास भी देखो और बंद करके दूर-दूर भी। यह सच नहीं कि बाहर देखने से अंतर्दृष्टि मे ख़लल पैदा होता है, बल्कि सच तो यह है कि बाहर देखने से अंतर्दृष्टि बसी-बसी-सी मालूम होने लगती है और उस पर विश्वास होने लगता है।

"आओ सीमा, मेरे गले लग जाओ।"

सुहागरात को मैं अपने सोने का कमरा खोल रहा हूँ और मुझे लग रहा है कि सीमा के पिता डॉ. राय ने मुझे अपना कोई अधूरा प्रयोग भेजा है। उस मध्यम-बुद्धि के वैज्ञानिक को अपने किसी आनंदमय क्षण में एक बिल्कुल अछूता ख़याल सूझा था जिसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसने बीस साल बड़ी लगन से इतना बड़ा किया और अब उसकी सारी योग्यता समाप्त हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गई है तो अपने इस अधूरे वैज्ञानिक प्रयोग की पूर्ति मेरे सुपुर्द कर दी है।

"दिलीप बेटा, मैं तुम्हें अपने दिल का टुकड़ा सौंप रहा हूँ ...।"

कमरे का दरवाज़ा खुला है तो मुझे वह वहाँ बैठी हुई नज़र आई है और फिर ... केवल वह ही वह नज़र आने लगी है। इतनी सुंदर कि उसे देख-देखकर आदमी अंधा हो जाए और फिर भी वह साफ़ दिखाई देती रहे, निरा शीशा जिसमें डॉ. राय के स्नेहपूर्ण गीले-गीले बेचैन रंग बड़ी शांत अवस्था में सुरक्षित हैं। मेरा अनायास जी चाहा कि इन रंगों को हिला दूँ और इन्हें हिलते हुए देख-देखकर मुझे महसूस हो रहा है ये यथावत् शांत हैं, मैं ही इन्हें देखकर बेचैन हो रहा हूँ।

डॉक्टर राय का यह विज़न अनछुआ और कुँआरा है और इस पर हाथ डालने की इच्छा के बावजूद हाथ डालते हुए, इसकी पूर्ति की ज़िम्मेदारी स्वीकार करते हुए, डर-सा लगता है। परंतु मैंने झूमते हुए उसे गले लगा लिया है। (झूमना मेरी आदत में बिल्कुल शामिल नहीं)

"सीमा ! ... सीमा ... ! ... सीमा ... ! ... "

मैं बार-बार उसका नाम दोहरा रहा हूँ किंतु हर बार मुझे लग रहा है कि मैं कोई नई और अनोखी बात कर रहा हूँ।

"सीमा !"

मैंने मानो अकस्मात् किसी वैज्ञानिक प्रयोग की टोह पा ली हो और मेरे हाथ अपनी अप्रत्याशित सफलता पर बौखलाई हुई तेज़ी से गतिशील हों। मैं न जाने क्या कह रहा हूँ। मैं इतना खुश हूँ कि अपने खुश होने का भी मुझे पता नहीं रहा है।

"सीमा !"

"क्या तुम सारी ज़िंदगी यूँ ही मेरे नाम की माला जपोगे, दिलीप ?"

"हाँ सीमा ... "

यद्यपि वह साफ़ मेरी बात का विश्वास कर रही है, फिर भी मेरा जी चाहा है कि उसे विश्वास दिलाने के लिए अपने बचपन की आदत के अनुसार धर्म की सौगंध खा लूँ। धर्म में अब मेरा विश्वास नहीं रहा, किंतु बचपन में मुझे धर्म की क़सम और गुलाब जामुन खा-खाकर बड़ा मज़ा आता था।

"परंतु मैंने तो सुना है दिलीप, तुम सारा दिन अपनी लेबॉरेट्री से बाहर नहीं निकलते।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तुम कहोगी सीमा, तो मैं लेबॉरेट्री में जाना ही छोड़ दूँगा।" इतना बड़ा झूठ मनुष्य को झूठा साबित नहीं करता, उसे मासूम साबित करता है।

"नहीं बाबा, तुम्हारे चौबीस घंटों के प्यार से मेरा बदन दुखने लगेगा। मेरे लिए केवल रात की बात काफी है।"

हल्की-सी चुप जिसे मेरे जिस्म के शोर ने सिर पर उठा रखा है।

"सीमा !"

"हाँ !"

"चुप क्यों हो गईं ?" (बड़ा शोर मचा हुआ है)

"इसलिए कि सभी बातें एक ही समय करने को जी चाह रहा है परंतु मुँह से एक समय केवल एक ही बात निकलती है।"

"तो अपनी सारी बातें एक-एक करके सुनाओ।"

"मैं तुम्हारी तरह वैज्ञानिक नहीं हूँ, दिलीप। एक-एक करके सुनाना शुरू करूँ तो अंत में वह बात भूल ही जाऊँ जिसे मुझे सुनाना हो··· मेरे साथ प्रायः ऐसा होता है दिलीप। मैं बातें कर रही होती हूँ तो लगता है किसी बात को याद कर रही हूँ।"

"मुझे भी तुमसे एक बात कहनी है सीमा··· " मैंने बड़ी मुश्किल से अपने-आपको यह कहने से रोका है कि मैंने ऑपरेशन करवा रखा है, "कि··· कि··· कि··· "

"कहो··· कह भी डालो न··· क्या तुम यह कहना चाहते हो कि हमारी शादी से पहले तुम्हारे संबंध किसी और स्त्री से भी थे ?··· थे तो क्या हर्ज है ? मुझे भी एक ज़माने में एक कहानीकार बहुत अच्छा लगता था··· साहू··· उसका नाम साहू है··· तुम मुझे छोड़ दो तो आज भी मेरा दिमाग़ भागकर उसके पास जा पहुँचे। दिलीप··· तुम जैल्लस क्यों नहीं हो रहे हो, दिलीप ?··· "

(हाँ, मुझे जैल्लस होना चाहिए··· नॉनसैंस ! मैं जैल्लस हो-होकर अपना समय क्यों बरबाद करूँ ?)··· "क्या तुम सचमुच उसे चाहती थीं सीमा ?"

"हाँ ! यदि वह ज़रा भी पहल करता तो मुझे विश्वास है मैं उसके साथ भागने पर भी तैयार हो जाती, किंतु बेचारा डरपोक था··· मेरी समझ में ही न आता था। तुम मेरी बातें सुन-सुनकर ज़रा से नाराज़ हो जाओ तो मुझे खुशी होगी। हस्बैंड जैल्लस होने लगे तो किसी दूसरी स्त्री की ओर उसका

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ध्यान नहीं जाता।''

उसकी खुली-खुली बातें सुन-सुनकर मैं अचानक अपने लड़कपन के बग़ीचे में जा घुसा हूँ और मेरा हाथ हरसिंगार की टहनी को जा लगा है और फूलों के ढेर के ढेर आ गिरे हैं। मैं फूलों पर झुक रहा हूँ··· गोरे-चिट्टे सुगंधित फूल जिनके ऊपर सफेदी की ओर तह का केसर उड़ा चला आ रहा है। परंतु यहाँ नीचे-नीचे ही रुककर गाढ़ा होने लगा है··· मैं झुकता जा रहा हूँ···

''ठहरो दिलीप, शराफ़त से काम लो।''

मैं शराफ़त से काम लेकर रुक गया हूँ।

''तुमने अभी तक मुझे अपनी वह बात तो सुनाई ही नहीं दिलीप ?''

''हाँ, वह बात यह है कि मैं··· '' (फिर वही ऑपरेशन की बात)

''कि मैं तुमसे बेहद प्यार करता हूँ।''

''है-है-हा-हो ! क्या तुम्हें यह डर था मिस्टर साइंटिस्ट, कि मुझे यह न बताते तो मैं समझ लेती, तुम मुझसे नफ़रत करते हो ? हाऊ सिंपल लाइक साइंस !''

मुझे यह महसूस करके बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि सीमा को मैं मूर्ख-सा नज़र आ रहा हूँ··· (हैलो मिस्टर वाइज़मैन !)

फिर वही चुप !

इस खामोशी में मैंने सुना है कि हमारे शरीर हमसे भी अधिक तन्मयता से एक-दूसरे से बातें कर रहे हैं।

''सीमा, तुम बहुत अच्छी हो, कितनी अच्छी हो तुम ?''

''हूँ !''

''क्या तुम्हें मालूम है सीमा कि तुम इतनी अच्छी हो ?''

मुझे महसूस हो रहा है कि मूर्खतापूर्ण बातों के बिना मेरी चाह प्यासी रह जाएगी।

''नहीं, तुम्हें मालूम नहीं। सुंदरता स्वयं अंधी होती है, केवल अपने चाहनेवालों की आँख से ही अपने-आपको देख पाती है।'' मैंने कहा।

''है-है-हा ! साइंस के लोग सावधानी बरत-बरतकर नाकारा हो जाते हैं, परंतु कभी अनजाने से असावधान हो जाते हैं तो बड़े काम की बातें करते हैं।''

''तुम बेहद अच्छी हो सीमा !'' मेरी आदत है कि अपने हर लर्नेड पेपर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की मुनासिब शब्द-बंदी से पहले मैं अपने परिपक्व विचारों की कच्ची अभिव्यक्ति दोहराता रहता हूँ।"

"और तुम बुरे हो।"

"बुरा ?"

"हाँ, मैं जानती हूँ मैं तुम्हें इसलिए इतनी अच्छी लग रही हूँ कि तुम्हारी नीयत अच्छी नहीं।"

फिर वही चुप ! गहरी होती हुई चुप !

हमारे शरीर इतने निस्संकोच वार्तालाप करने लगे हैं कि विश्वास नहीं होता आज पहली बार मिल रहे हैं। मैंने आपस में उनकी गूँगी बातचीत पर कान धरकर दम साध लिया है और सीमा ने भी।

किंतु हमारी समझ कहीं घास चर रही है और ख़ामोशी इतनी गहरी हो गई है, जैसे सारी बातें खा चुकी हो।

स्विच ऑफ़... ! और घुटन और गर्मी की लज़्ज़त... और...

और...

और...

और-र-र-र !

बूँदाबाँदी शुरू हो गई है। मेरे सृजन की मस्त और आनंदमय वेदना की आँख लग रही है—मार्फ़िया-ए-ब्यूटीफुल नेचर-मेक !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो

कोई छह महीने दिन-रात वही सुहागरात, डॉ. राय के अधूरे प्रयोग की पूर्ति के लिए बार-बार वही तन्मयतायुक्त कर्म, समय का लेटा बदन जो मानो निद्रा में चल-फिर रहा हो। अपनी इस निद्रा के बावजूद मैं अपने दैनिक कर्तव्यों का भली-भाँति पालन कर रहा हूँ। एक वह समय था कि सारी-सारी रात कान खड़े करके पड़े रहता किंतु नींद की आहट तक न आती, और एक यह, कि जागे-जागे भी सोया पड़ा रहता हूँ और मालूम नहीं होता कि सोया हुआ हूँ। और मेरी बुद्धिमत्ता का यह हाल है कि मेरे इन दिनों के लिखे हुए दो-एक लेखों की ओरिजिनैलिटी से साइंस की दुनिया चौंककर रह गई है, किंतु मैं यथावत् अपनी सीमा से लिपटकर सोया हुआ हूँ। मेरे सोने की हद हो गई है। यहाँ तक कि इसी बीच एक बार एक विदेशी वैज्ञानिक मुझसे मिलने आया। वह बड़ा प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक भी था। मैंने हाथ मिलाने के लिए उसकी ओर हाथ बढ़ाकर कहा—''क्षमा कीजिए, मैं इस समय सो रहा हूँ।''

वह आश्चर्य से मेरी ओर देखने लगा। ग़ौर से देखता रहा।

''शायद आप बीमार हैं डॉ. दिलीप। आप पसंद करें तो मैं आपका इलाज करूँगा।''

''पहले मुझे ठीक हो लेने दीजिए प्लीज़। फिर मैं अपना इलाज कराऊँगा।''

वह मेरे बारे में निराश होकर चला गया। मैं अपने बैडरूम में लौट आया¨ या शायद डाइनिंग रूम में या किसी और रूम में जहाँ सीमा मेरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतीक्षा कर रही थी।

"तुम मुझे इतना प्यार करते हो दिलीप, कि विश्वास नहीं होता तुम वैज्ञानिक हो··· जैसे तुम मेरे प्रिय कहानीकार साहू के कोई बड़े प्यारे पात्र हो।"

सीमा ग़लत नहीं। अपना आप मुझे स्वयं फ़िक्शन-सा ही लगता है जिसे सीमा इतनी उत्सुकता से पढ़ रही है।

"उठो ! ··· उठो न !" सीमा मुझे जगा रही है, "कब तक सोए पड़े रहोगे··· उठो देखो कितना सूर्य चढ़ आया है ?"

मैं बिस्तर पर बैठा आँखें मल रहा हूँ और सोच रहा हूँ कि फिर लेट जाऊँ और सीमा को भी अपने साथ लिटा लूँ, और वह भी मज़े से अपनी प्रिय कहानी पढ़ती रहे। अपना आप तो सारा जीवन बने ही रहना है, कभी तो मनुष्य किसी और पोज़ में नज़र आए—वह पोज़ चाहे फ़िक्शन का ही क्यों न हो।

"आओ डार्लिंग, तुम भी लेट जाओ।"

"नहीं, उठो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीन

मेरी आदत बन चुकी है कि अपने व्यक्तिगत अवलोकनों की अव्यवस्थित छान-फटक कर उनके फार्मूले बना लेता हूँ और उन फार्मूलों के सामान्य सत्य के उपयोग से साँसारिक निष्कर्ष निकाल लेता हूँ, परंतु सीमा से विवाह करके अब मेरी ज़िंदगी इतनी प्राइवेट हो गई है कि मुझे अपना अस्तित्व बड़ा आकर्षक लगने लगा है और छोटे-छोटे व्यक्तिगत अवलोकन किसी सांसारिक निष्कर्ष का कारण बनने की बजाय स्वयं महत्त्वपूर्ण मालूम होने लगे हैं।

सीमा के आने पर मैंने सिर उठाकर दूर-दूर देखना छोड़ दिया है–यह मेरी सीमा है, मेरी कल्पना यहीं मेरे पास है, मेरी कल्पना कितनी सुंदर है, मेरे विचारों ने कितना सुंदर चेहरा पहन लिया है, सीमा का चेहरा !··· क्या मुझे सीमा के चेहरे से प्रेम है या अपने विचारों से, अपने ही अस्तित्व से ?··· वास्तव में मैं सीमा की बजाय अपने ही अस्तित्व के प्रेम का बंदी हूँ, अपने-आपसे बेसुध प्रेम कर रहा हूँ, अपनी ही भावनाओं के आगे बिछा जा रहा हूँ। सीमा से प्रेम कर-करके मेरी इन भावनाओं की तुष्टि हो रही है, इसलिए वह मेरी चाह का केंद्र बन गई है। पर इस केंद्र का केंद्र मैं स्वयं हूँ।

विवाह से पहले मैंने अपनी सज-धज पर कभी ध्यान न दिया था। यह हाल था कि आईने में अपनी सूरत देखकर यही विचार आता कि बस कोई चेहरा देख रहा हूँ, किसी भी इनसान का चेहरा, जो मुझसे मिलता-जुलता है–बस अपनी यही शक्ल मेरे दिमाग़ में सुरक्षित थी··· नहीं, सुरक्षित न थी, दिमाग़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में इधर-उधर न मालूम कहाँ पड़ी थी, ढूँढना पड़ जाता तो सिर पटक लेता। चंद मास पहले किसी जरनल में मेरे आर्टिकल के साथ मेरी तसवीर भी छपी। आर्टिकल में अपनी सोच की 'रूपरेखा' से तो मुझे झट ही अपनेपन का एहसास हो गया, किंतु अपनी तस्वीर को ग़ौर से देख-देखकर मैंने अपने-आपसे कहा कि यह अजनबी अपने मुँह-माथे पर इतना खुश है मानो यह मुँह-माथा ही उसकी एकमात्र पहचान हो—पहचान : ये छोटी-छोटी भली-सी आँखें जो कभी हैरान नहीं होतीं, हैरान होकर कभी खुली नज़र नहीं आतीं, ये अंधी आँखें—हैलो मिस्टर सिंपलमैन ! मिस्टर सिंपलमैन, अपने-आपसे नज़र हटाकर इधर देखो, मेरी ओर। परंतु विवाह के बाद मैं भी अपनी वह तसवीर बनकर रह गया हूँ...

मैंने अपने गले में बाँहें डाल रखी हैं और अपने दिमाग़ में बड़े प्यार से अपना समूचा शरीर सँभाल रखा है और सीमा से प्रेम करते हुए मेरा यह समूचा शरीर सदा मेरे सामने होता है, मानो सीमा मुझसे प्यार नहीं कर रही होती, मैं ही उन्मुक्त हो अपने-आपसे प्यार कर रहा होता हूँ—यदि मैंने ऑपरेशन न करवाया होता तो मुझे विश्वास है कि मेरे इस सैल्फ़-लव से सीमा की कोख में भी मेरी कोई नन्हीं-सी शक्ल साँस लेने लगती।

"दिलीप।"

"हाँ।"

"दिलीप"—जैसे सीमा, सीमा न हो, बल्कि किसी अनहोनी कहानी ने अपने जादू से सीमा के अस्तित्व को ओढ़ लिया हो, "मेरा जी चाहता है कि... " उसकी झिझक महसूस करके मुझे वह एक ऐसी अल्हड़ और भोली-सी लड़की मालूम होने लगी है जिसका शरीर उसकी पक्की सूझ-बूझ से प्रकट हुआ हो।

"हाँ, हाँ, रुक क्यों गईं ?"

"मेरा जी चाहता है कि मैं अब शीघ्र ही तुम्हारे बच्चे की... "

(1x1x1x−=1)

"हाँ कहो... "

सीमा फिर चुप हो गई।

"अब और क्या कहूँ ? तुम बड़े शरीर हो।"

वास्तव में वह चाहती कि मैं बड़ी शराफ़त से अपनी शरारतों से उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोद भर दूँ, पर एक को एक से गुणा करके मैं दो कैसे बना दूँ ?

"तुमने कभी सोचा है दिलीप, हमारा बच्चा कैसा होगा ?"

स्त्री की वही पुरानी इच्छा कि भविष्य की पर्वतीय शृंखला को अपने छोटे-से आँचल में ढाँपकर अपनी मर्ज़ी की बना ले। "मेरी कहानी और तुम्हारा अवलोकन एक ही शरीर में बसकर जीने लगेंगे तो सोचो, हमारा बच्चा कैसा होगा… तुम्हारी सतर्कता से मेरा कल्पित विश्वास विश्वसनीय हो जाएगा और मेरे विश्वास से तुम्हारी सतर्कता को साहस मिलेगा।"

(मैं उससे पूछूँ, मैं उसे बच्चा कैसे दूँ ?)

"अपने-अपने अस्तित्व के अंदर हम अधूरे हैं दिलीप, अपने बच्चे से हम पूरे हो जाएँगे।"

ऐसे समय पर मैं हँसने की कोशिश करने की सोचता हूँ परंतु सीमा के बदन की गर्मी से खुश होकर बिना कोशिश ही हँसने लगता हूँ।

"सीमा, क्या चौपाए और पक्षियों के क्रोमोज़ोम्स के कांटैक्ट से हम कोई ऐसा प्राणी पैदा कर सकते हैं जिसके चार पाँव हों और दो पंख ?"

"शटअप ! क्या पक्षी और चौपाए इसी प्रकार एक बिस्तर पर मिलते हैं जैसे मैं और तुम ?"

"हाँ सीमी डीयर, मुझे लग रहा है मेरी चार बड़ी टाँगें हैं और मेरी बौखलाहट से दो ग़ायब हो गई हैं और बेचैन हो-होकर मैंने तुम्हारे दोनों खूबसूरत पंखों को नोच लिया है… "

"ओ… यू… "

"क्या यह उचित नहीं सीमा कि हम स्वयं ही नेचर के बच्चे बने सारी ज़िंदगी गुज़ार दें ?"

वह हँसने लगी है—

"तुम साइंटिस्ट होकर भी ऐसी बातें करते हो जैसे हमारी पिछली शताब्दी के क़िस्सागो… "

सीमा का कहना ग़लत नहीं, आजकल मुझे साइंस में भी दूसरी फ़िक्शन का ही भ्रम होता है। कल मैं एक घातक क़िस्म की खुशरंग गैस को शीशी में सुरक्षित करके उसे देख रहा था कि वह मुझे कोई बड़ी खूबसूरत नारी की छवि मालूम होने लगी, जैसे मैं कोई राक्षस हूँ और अपने जादू से मैंने साढ़े-पाँच फीट की सीमा को इंचों के प्रमाण में घटाकर उसे गैस में परिवर्तित कर लिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है और उसकी यह धुँधली शक्ल मुझे इतनी प्यारी लग रही है कि जी चाहता है उसे सूँघने के लिए शीशी का कॉर्क खोल दूँ और उसे सूँघकर जान दे दूँ।

क्या ये विचार किसी ऐसे वैज्ञानिक के हैं जिसने जान-बूझकर साइंस से विवाह करके सारी उम्र कुँआरा रहने का प्रण ले लिया हो और फिर अपना यह प्रण तोड़कर निश्चय किया हो कि वह किसी सीमा को अपने रास्ते में बाधा न बनने देगा ?''' या कहीं यह तो नहीं कि मैंने अचेतन मन से यह निर्णय कर लिया है कि मेरी साधना के सभी चमत्कार सीमा के पेट में रूप धारण कर लें और वही उन्हें जन्म दे ?''' साइंस न हुई फ़िक्शन हो गई। यदि ऐसा होना संभव होता तो हर संन्यासधारी पति की उदास पत्नी घर में अकेली बैठी-बैठी अपने पति की सोचों से ही गर्भवती हो जाती।

सीमा ने मुझे बताया है कि वह अपने-आपको बड़ी भाग्यशाली समझती है कि मैं उसे मिल गया हूँ।

''मेरी बड़ी कामना थी कि मेरा विवाह एक पूरे मर्द से हो।'' (इसलिए कि वह अपने पूरे स्त्रीपन के एहसास से वंचित न रहे।)

''दिलीप, आज के साहित्य की सभी आशाएँ साइंस की मरदाना विशेषताओं से पूरी होंगी। विज्ञान और साहित्य एक-जान न हुए तो कल्पना विधवापन से सूख-सूखकर अपना कोई नामलेवा पैदा किए बिना ही मर जाएगी''' ''

(फिर वही संतान का चक्कर ! ''' बता दूँ ?''' न''' न ! ये ग़लती मत करो वरना वह तुम्हें हत्यारा कहेगी, अपने बच्चों का हत्यारा, जिन्हें पैदा होने से पहले ही तुमने मौत के घाट उतार दिया''' वह तुम्हें कभी क्षमा न करेगी''')

''सीमा डीयर, क्या साहित्य और नारी को बच्चे पैदा करने के सिवा और कोई काम नहीं ?''

कोई डेढ़ वर्ष पहले सरकार की एक असाइनमैंट के संबंध में मैंने चार-छह मास बैंगलोर लैबॉरेट्री में गुज़ारे जहाँ मेरी एक सहयोगी मिसेज़ क़ादर अपने पति से तलाक़ लेने की सोच रही थी—

''तुम अपने पति से तलाक़ क्यों लेना चाहती हो मिसेज क़ादर ?'' एक दिन जब उसने स्वयं ही अपनी फैमिली-लाइफ़ का ज़िक्र छेड़ा तो मैंने पूछ लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मेरा पति चाहता है कि मैं किसी जानवर की तरह पेट से बच्चा पैदा करूँ, परंतु मैं इनसान हूँ और चाहती हूँ मेरी सारी संतानें मेरे दिमाग़ से पैदा हों... "

मैं हँसने लगा—"अपनी ज़िद्द पर अड़ी रहो मिसेज़ क़ादर, तुम्हारा यह चमत्कार विज्ञान के संसार में हलचल पैदा कर देगा... "

"या तो तुम बहुत डल हो डॉ. दिलीप, या मज़ाक कर रहे हो। मोटी-सी बात है कि मैं अपने बच्चे क्यों जनूँ ? वह इतना ही इच्छुक है तो वह ही मेरे बच्चे क्यों न जने ? मेरा एक रिसर्च प्रोजेक्ट पूरा होता है तो दूसरा शुरू हो जाता है। सोच-सोचकर पहले ही मेरा बुरा हाल है, एक बच्चा जनना पड़ गया तो मेरी जान निकल जाएगी।"

"परंतु... "

"परंतु क्या ? क्या स्त्री को बच्चे पैदा करने के सिवाय और कोई काम नहीं ?"

परंतु सीमा की बेचैनी का एहसास कर-करके यही विचार आता है कि स्त्री पैदा ही बच्चे पैदा करने के लिए होती है।

"तुम्हारी मिसेज़ क़ादर बाह्य रूप से नारी होगी दिलीप... उसके भीतर कोई नर होगा... "

"यदि यही बात है मेरी जान, तो उसे पति की ख़्वाहिश से डर क्यों लगता था ?"

"तो फिर वह संयोग से नारी हो गई होगी।"

मैं अपनी पत्नी की अविश्वसनीय औपन्यासिकता से इतना प्रभावित हुआ हूँ कि मुझे विश्वास हो गया है कि अपनी इच्छा और प्रयत्न से नारी बनकर अपनी माँ के पेट में प्रविष्ट हुई होगी, वरना हम सब तो संयोग से ही नर या नारी बनते हैं।

"मेरी बात को मज़ाक़ में मत उड़ाओ दिलीप, मेरा विश्वास है कि... "

"मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ सीमा, हम वैज्ञानिकों का यह अवलोकन है कि कोई साधारण विश्वास जितना गंभीर नज़र आता है उसकी सच्चाई उतनी ही हास्यास्पद होती है।"

"क्या तुम्हारा यह अंधा-सा विश्वास भी हास्यास्पद नहीं दिलीप, कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच्चाई यही है जिसे तुम समझते हो ?" उसे ज़रा-सी क्रोधित देखकर मालूम होता है कि क्रोध भी उसी का शृंगार है। "वैज्ञानिक चिंतन में यह भी तो सम्मिलित है कि सच्चाई की परख में केवल अपनी पसंद से काम न लिया जाए।"

"तुम भी तो मेरी ही पसंद हो सीमा।" सीमा को मैंने इसीलिए निस्संकोच अपना लिया था। उसे देखकर मुझे महसूस होता है कि वह मुझे अपने किसी टॉप नॉच ख़याल की तरह सूझ गई है। मुझे कोई बहुत उच्च विचार सूझता है तो पहले-पहल में कई रातें उसे अपने साथ लिटाकर विता देता हूँ और फिर उसकी चीरफाड़ के लिए उसे अपनी लेबॉरेट्री में ले आता हूँ परंतु सीमा की चीरफाड़ मुझे अनुचित लगती है। जिस विचार की पूर्ति उसके झूठ से भी हो, उसे ज्यों का त्यों स्वीकार न करके बड़ा कष्ट होता है। सीमा का डाइसैक्शन मेरे लिए क्योंकर संभव है जबकि मैं उसके अर्थ से ज़्यादा उसके शरीर का मोहताज हूँ... नहीं, अपने शरीर के विना वह मेरे लिए निरर्थक होकर रह जाएगी''' जिस शरीररहित अर्थ का कोई अर्थ न हो उससे वह शरीर वेहतर है जिसकी पूर्ति से हमारी इच्छा निरर्थक मालूम न होती हो।

कामवासना की पूर्ति हमें वड़ा नेक बना देती है। यही कारण है कि बड़े-वड़े चोर, डाकू भी अपनी-अपनी प्रेयसी के बाहुपाश में ऐसे निरीह हो जाते हैं जैसे अपनी माँ की गोद में लेटे अँगूठा चूसते हुए नन्हे-मुन्ने बच्चे। इस पापी ख्वाहिश के परितोष के लिए हमारा ध्यान अनायास अपने अंतःकरण की ओर चला जाता है। मेरा भी जी चाहता है कि सीमा के सामने मैं अपने मन का हर चोर निकाल दूँ, साफ़-साफ़ सबकुछ बता दूँ, परंतु क्योंकि मैं पूरा चोर-डाकू नहीं, इसलिए मुझमें पूरा सच बोलने की हिम्मत नहीं, बस इतना सच बोलने की हिम्मत है जिससे स्पष्ट हो कि मैं सच बोल देने का इच्छुक हूँ।

"सीमा, आज मैं अपने एक अपराध को स्वीकार करना चाहता हूँ।"

"तुम ?" वह खिलखिलाकर हँस पड़ी—"तुम और अपराध ? यदि तुमने सचमुच कोई वंडरफुल अपराध किया होगा तो मैं गर्व से तुम्हें गले लगा लूँगी, किंतु मुझे विश्वास है तुम हर प्रकार की बुराई से परहेज़ करते हो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''मज़ाक छोड़ो सीमा, मैं तुम्हारे सामने अपनी बुराई को स्वीकारना चाहता हूँ।''

''ठीक है पार्टनर, शायद इस प्रकार तुम अपनी पत्नी को प्रभावित करके हीरो बनना चाहते हो। चलो यूँ ही सही, वरना तुम्हें अफ़सोस रहेगा कि कोई भोलीभाली पत्नी होती तो क्या ही अच्छा होता।''

''नहीं सीमा, सुनो ! तुम्हारे अतिरिक्त मैं एक और स्त्री के साथ भी सो चुका हूँ। एक बार नहीं, कई बार··· रजनी के भोलेपन के कारण मैं अपने-आपको आज तक क्षमा नहीं कर सका। बेहद भोली लड़की थी··· मुझे उससे मुहब्बत न थी सीमा, मुहब्बत तो मुझे सिर्फ़ तुमसे है,'' (मैं अपने लेबॉरेट्री टेबल पर मुहब्बत को भी चीर-फाड़ करके देखना चाहता हूँ, परंतु कमबख़्त का कोई शरीर हो तो चीर-फाड़ भी करूँ)··· ''नहीं, टोको नहीं सीमा, पहले मेरी बात सुन लो। रजनी ने अपना सबकुछ मेरे हवाले कर दिया और महीनों की लगातार मुलाक़ातों के बाद एक दिन कहने लगी, मेरा सबकुछ तुम्हारा है, अपनी अमानत अब तुम अपने पास क्यों नहीं रख लेते ?··· आओ विवाह कर लें।''

''पुअर चाइल्ड !'' सीमा अचेतन रूप से मुझसे परे सरककर बैठ गई, ''तो तुमने इनकार कर दिया ?''

''हाँ सीमा, मैंने उसे बताया मैंने ऑपरेशन करवा रखा है ताकि सदा के लिए मेरी संतान न हो।''

सीमा काँप-काँपकर मेरे बिस्तर से उठ खड़ी हुई, ''वा-हा-अ-ट-ट- ? !''

तुरंत मैंने अपने लड़खड़ाते हुए अंदाज में स्पष्टीकरण किया, ''नहीं सीमा, वह तो मैंने केवल उसे टालने के लिए कहा था।''

''थैंक गॉड !'' वह फिर मेरे साथ बैठ गई है, ''तुम्हारे शब्दों की डायन ने तो मेरा कलेजा ही निकाल लिया··· ''

''एक बात मेरी समझ में नहीं आती सीमा, यदि वह मुझे इतना चाहती थी तो इस छोटी-सी बात पर उसने मुझे छुट्टी क्यों दे दी ?''

मेरी कुरेद अभी तक बंद नहीं हुई।

''छुट्टी क्यों दे दी ?··· मैं यदि उसकी जगह होती··· तो-तो··· नहीं···'' उसने बड़े प्यार से मेरे कंधे पर अपनी बाँह लटका ली। (बता दूँ ?··· मूर्ख !)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज रात सीमा से लिपटे हुए मुझे अपना वैज्ञानिक होना बिल्कुल भूल गया है और मैं इस विषय पर विचार कर रहा हूँ कि क्या वह अपनी इच्छा की तीव्रता से स्वयं गर्भवती हो सकती है ?··· या··· या वह चुपके से अपने संबंध किसी और पुरुष के साथ···

"सीमा, तुम्हारी कहानी से ही मेरे यथार्थ पर विश्वास किया जा सकता है। मैं तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी करूँगा···।"

(किस प्रकार ?—मिसेज़ क़ादर की झल्लाहट कितनी साइंटिफ़िक थी—हमारी औलाद हमारे दिमाग़ से पैदा क्यों नहीं होती ?)

सीमा !··· सीमा !

सो गई ?—

कहानी सो गई है, यथार्थ को इन्सोम्निया हो गया है। फ़िक्शन नॉर्मल है और साइंस ऐबनॉरमल !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चार

आज हमारी शादी की वर्षगाँठ है। सवेरे-सवेरे मेरी आँख खुली है और अपने पहलू में सीमा का चेहरा देखकर मुझे सूर्य का ख़याल आया है जो कल इसी समय इसी प्रकार उदय हो रहा था जिस प्रकार परसों सवेरे इसी समय या इससे एक दिन पहले या एक साल पहले जब मेरा और सीमा का विवाह हुआ था या दो साल पहले जब मैंने सीमा को देखा भी नहीं था या इकतीस वर्ष पहले जब मुझे अभी एक वर्ष बाद पैदा होना था।

जिन्हें हम महीने और वर्ष कहते हैं वे हमारे हैं, समय के नहीं, वरना समय भी हमारी तरह पैदायश से पहले अनुपस्थित होता और फिर उसके माँ-बाप के संभोग के बाद उसका जन्म होता बशर्ते कि उसके पिता ने मेरी तरह ऑपरेशन न करवाया होता। फिर वह होते-होते बूढ़ा होकर मर-खप जाता। किंतु समय अनंत है, वह कभी पैदा नहीं होता, उसकी कोई आयु नहीं : आयु हमारी होती है।

पल-पल जी-जीकर हमें मालूम होता है कि हम भी समय के समान वहीं हैं जो अभी-अभी थे। अभी मेरी आँख खुली है, मैंने सीमा के अर्धस्वप्निल चेहरे को चूम लिया है, उसने भी आँखें खोल ली हैं। वह मुस्करा दी है, दिन का उजाला गाढ़ा होने लगा है। सैकंड-मिनट गुज़रते जा रहे हैं। एक मिनट, दो मिनट, तीन, चार, सैकड़ों मिनट, मुझे पता भी नहीं चला कि अभी-अभी उजाला था तो अब अँधेरा कैसे हो गया ! मैं फिर सीमा से लिपटकर सो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया हूँ।⋯ टिक ! टिक ! टिक ! सवेरे-सवेरे मेरी आँख फिर खुल गई है, सीमा के चेहरे को देखकर मुझे सूरज का ख़याल आया है जो मेरे कमरे के बाहर उदय हो रहा है⋯ दिन और रात⋯ महीने और वर्ष⋯ क्या मैं वही हूँ जो सीमा से मिलने से पहले था या वह मैं और यह मैं इतने अजनबी हैं कि मिलें तो हमारी यह भेंट पहली हो⋯

वह मैं : मैं वैज्ञानिक हूँ, और आप ?

यह मैं : मैं अपनी पत्नी का प्रेमी हूँ।

वह मैं : क्षमा कीजिए, अपनी पत्नी से प्रेम कर-करके आप साबित क्या करना चाहते हैं⋯ कि अपनी पत्नी से प्रेम करते हैं ?

हाँ, क्या मुझे अपनी पत्नी से प्रेम करने के सिवाय और कोई काम नहीं ?

सीमा यथावत् मेरी ओर देख-देखकर मुस्कराए जा रही है–

"दिलीप !"

"सीमा !"

मेरे इरादे तो ये थे कि अपने अस्तित्व को दूसरों से विरक्त रखूँगा, मुझे इतना काम करना है कि मेरी ज़िंदगी मेरे लिए काफ़ी नहीं है, इसलिए मैं अपने अस्तित्व को अपने-आपसे भी अलग कर लूँगा ताकि अपना-आप छिन जाने पर, अपनी मृत्यु पर भी जिए जाऊँ, शाश्वत हो जाऊँ। मैं वैज्ञानिक हूँ, मुझे बेहिसाब ज़िंदगी का हिसाब चुकाना है।

"दिलीप डीयर !"

"सीमा !"

यदि दो अक्षर 'सीमा' का अर्थ सीमा ही है तो बार-बार सीमा कहकर मैं अपने-आपसे क्या पूछना चाहता हूँ ? या सीमा मुझसे क्या पूछना चाहती है ?

"कहो सीमा ?"

"दिलीप !"

मेरे बिस्तर पर लेबॉरेट्री का दृश्य बना हुआ है और मैं मुहब्बत की चीरफाड़ कर रहा हूँ।

"दिलीप !"

"कहो सीमा !"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"दिलीप !"

"कहो !"

"मुझे कुछ भी नहीं कहना दिलीप, तुम भी मेरा नाम लेकर मुझे पुकारो।"

"तुम मेरे पास ही तो बैठी हो।"

"नहीं दिलीप, कई बार मैं बहुत दूर निकल जाती हूँ, तुम्हारी आवाज़ मुझे सुनाई न दी तो मुझे डर है कि मैं और दूर निकल जाऊँगी और खो जाऊँगी और मुझे डर है कि मैं खो गई तो तुम तुरंत दूसरा विवाह कर लोगे और मैं तुम्हें इस तरह भूल जाऊँगी जैसे तुम्हें पिछले जन्म की पत्नी भूल चुकी है।"

"सीमा !"

"हाँ··· "

"एक बात बताऊँ ? इस जन्म में भी तुम मेरी दूसरी पत्नी हो।"

"वा-ह-अ-ट-ट ?"

"मेरी पहली पत्नी का नाम साइंस है।"

"शुक्र है, तुमने तो मेरी जान निकाल ली थी··· " वह बिस्तर से उठ बैठी—"यदि तुमने सचमुच एक और विवाह किया होता तो··· "

सचमुच ? सीमा ठीक कहती है। यदि मैंने साइंस से सचमुच विवाह किया होता तो दूसरा विवाह क्यों करता ? उससे मैंने दिखावे का विवाह रचा लिया था ताकि अपनी पत्नी से, या किसी और स्त्री से पब्लिक लाइफ़ में फ्लर्ट करने के बावजूद भद्र लोगों में गिना जा सकूँ। साइंस से भी मेरा प्रेम वैसे ही निष्फल और संदेहपूर्ण है जैसे सीमा से। मैं अपने आदर्श से भी निष्प्रेम इंटरकोर्स करता हूँ ताकि अपने ज़ेहन का सुखदायक निकास कर-करके हल्का होता रहूँ। मैं हैवान हूँ और इनसान केवल इसलिए मालूम होता हूँ कि अपनी दुम को शरीर के अंदर छिपा लेने में समर्थ हो चुका हूँ··· जिसे हम इनसानियत कहते हैं वह हमें जीवन के भद्र निष्कर्षों की सोशल लूटमार से प्राप्त नहीं होती बल्कि अपने-आपको साधना और प्रेम से इन निष्कर्षों को सौंप देने से होती है। हमारा प्रेम हमारा बंदी नहीं, हम ही अपने प्रेम के बंदी हैं।

नहीं, मुझे मालूम हुआ है कि मेरी सोच कुँआरी नहीं रही है। उसके शरीर से सीमा के पतित्व की बू आने लगी है, वरना कोई वैज्ञानिक कब अपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेम या घृणा का बंदी हुआ है ? वैज्ञानिक प्रेम करता है न घृणा, वह तो केवल करता है, अर्थात अपने प्रेम या घृणा के पक्षपात से काम नहीं लेता⋯ वैज्ञानिक के कर्तव्य में पहली बात यह शामिल है कि वह अपनी प्रेमिका और छिपकली को एक साथ, एक नज़र से देख पाए और अपनी किसी भावना के बजाय उन्हें उन्हीं की भावनाओं से पहचाने—मेरी प्रेमिका कितनी सुंदर है !⋯ यह छिपकली कितनी सुंदर है !⋯ किसी वैज्ञानिक के लिए इन दोनों वाक्यों का अर्थ एक ही है। वह स्वयं अपने-आपमें भावनाहीन होता है और उसका प्रेम उसकी प्रेमहीन रुचि के सिवाय संभव नहीं।

अपने काम पर जाने से पहले मैं ब्रेकफास्ट पर सीमा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि दरवाज़े का परदा हिलता है⋯ वह मेरे सामने खड़ी है। इतनी सुंदर लग रही है कि मुझे याद नहीं रहा है कि मैं अभी-अभी क्या सोच रहा था। मस्तिष्क अपने-आप ख़ाली होकर इतना खुला हो जाता है कि उसमें नाचने के सिवाय और कुछ करने को जी नहीं चाहता। मैं बैठा हुआ हूँ और अपने मस्तिष्क में नाचे जा रहा हूँ। जब कोई स्त्री इतनी अच्छी लगे तो उसके सामने सोचते हुए डर महसूस होता है कि सोच-सोचकर कहीं उसे खो न दूँ⋯

"सीमा !"

"दिलीप !"

"सी-मा !"

हमारे शरीरों में एक ही संगीत का रिकार्ड बज रहा है और हमारे क़दम हमारी इच्छा की प्रतीक्षा किए बिना एक-दूसरे की ओर बढ़ रहे हैं, जैसे अभी-अभी एक साल पहले मैंने उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाए हैं। उसकी तरफ़ पहली बार देखा है, किंतु उसकी सुंदरता से परिचित हूँ। हम खड़े-खड़े एक-दूसरे से आलिंगित हो गए हैं, अभी-अभी आलिंगित हुए हैं, एक साल से आलिंगित हैं या शायद उस समय से जब मैंने अभी कोई सुंदर चेहरा देखा था, या शायद उस समय से जब मैंने कोई पहला सुंदर चेहरा देखा भी न था, क्योंकि हम सुंदरता को देखे बिना भी उससे परिचित होते हैं। हमने एक-दूसरे को कसकर बाँहों में ले लिया है और इस तरह रसीले हो गए हैं कि हमारे पहलू में मेज़ पर रखा हुआ नाश्ता हमें खाने लगा है। कितना बढ़िया मांस है ! नाश्ता हमें खा रहा है और स्वाद हमें आ रहा है। मुझे अपने लैब के जूनियर साइंटिस्ट का ख़याल आने लगा है। वह मुझे दिखाने के लिए अपना एक आर्टिकल लाया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायद उस आर्टिकल के विचार से ही मुझे यह सोच आई है कि नाश्ता हमें खा रहा है···

"सर, इस आर्टिकिल में मैंने यह सावित करने का प्रयत्न किया है कि हमारी राष्ट्रीय खुराक हमें खाए जा रही है।"

"यह क्या बात हुई ?"

"यह कि हमारी खुराक बहुत स्वादिष्ट है और ऐसे पैरासाइट्स पैदा करती है कि जिनका फंक्शन केवल यह है कि हमारा शरीर चाटते रहें··· "

मैं हँस पड़ा।

"यह खूब है भई, फिर तो हमारे भोजन की समस्या हमारे भोजन से ही हल होती जा रही है।"

इस समय मेरे शरीर में भी कई पैरासाइट्स कुलवुला रहे हैं और मुझे इसलिए इतने रस का एहसास हो रहा है कि वे मेरा शरीर चाट रहे हैं। मेरी इच्छा हो रही है कि सीमा मेरी जान माँग ले। (सीमा के साथ लेटे हुए मेरी जीभ पर मेरी मनपसंद डिश घुलने-मिलने लगती है जिसे खाने से डॉक्टरों ने मुझे मना कर रखा है)

"आज हमारे विवाह का दिन है सीमा ! मुझसे कुछ माँगो··· मेरी जान माँग लो।"

उसने मेरे मुँह पर हथेली रख दी है।

"दीवाने ! तुम्हारी जान क्यों माँगू ?··· हाँ, तुम··· "

"हाँ, हाँ, माँगो। रुक क्यों गई ?"

मुझे लग रहा है कि मैं नेचर का एक चमत्कार हूँ और जो चाहूँ कर सकता हूँ (मेरी डिश के पैरासाइट्स कुलबुला-कुलबुलाकर तीव्रता से मेरा शरीर चाट रहे हैं) सारी सृष्टि मेरे ही दम से है। मैं ही सारा विश्व हूँ और प्रातःकालीन सूर्य की किरणें पहनकर अपनी सुंदर पत्नी से मिल रहा हूँ और मेरा जी चाह रहा है कि उसकी हर इच्छा पूरी कर दूँ–

सीमा वड़ी खुश नज़र आ रही है। सारा विश्व खुशी से झूम रहा है। मैं झूम रहा हूँ। (पैरासाइट्स मेरा शरीर चाट-चाट पेट भरकर और तीव्रता और आनंद से कुलबुलाने लगे हैं।)

"आज शाम को काम से जल्दी लौट आना दिलीप !"

मैं सहसा हँस पड़ा हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बस यही माँगना चाहती थीं ?"

"आज शाम को छह बजे हम अपनी मैरेज एनिवर्सरी की पार्टी कर रहे हैं।"

"तुम चाहो तो मैं छुट्टी ले लेता हूँ।" परंतु सीमा बेचारी को खटका लगा रहता है कि ऐन वक़्त पर मेरा काम मेरे सीने पर सवार होगा।

"नहीं दिलीप, यह तो मैंने यूँ ही कहा है। अपनी इच्छा मैं तुम्हें पार्टी के बाद रात को बताऊँगी।"

"रात को क्यों मेरी जान ! आओ अभी अपने बैडरूम के पर्दे खींचकर रात का समय किए लेते हैं... आओ।"

"नॉटी मत बनो। आओ अब नाश्ता करें।" वह मुझे कुरसी पर बिठाकर मेरे सामने बैठ गई है।

"अरे ! मैंने शायद तुम्हें बताया नहीं। कल शाम मुझे साहू की चिट्ठी मिली थी, आज वह यहाँ पहुँच रहा है।"

"साहू ?... अरे हाँ !... वह !"

"हाँ वही... मैं तो उसे लगभग भूल चुकी थी, उसने खुद ही अचानक अपनी याद दिला दी।" (अचानक !)

मैं यूँ ही हँस दिया हूँ।

"क्या वह आजकल भी फ़िक्शन लिखता है ?"

"हाँ, इसमें हँसने की क्या बात है ?"

"कोई बात नहीं। मुझे यूँ ही अपने कई व्यावसायिक वैज्ञानिकों का ख़याल आ गया है जो विज्ञान को भी फ़िक्शन के समान ही लिखते हैं।"

"तो क्या हर्ज है ?"

हाँ, क्या हर्ज है ? सच या झूठ को व्यवसाय ही बनाना हो तो सच हुआ तो क्या ? और झूठ हुआ तो क्या ?

"बहरहाल यह बहुत अच्छा हुआ सीमा, तुम्हारा यह मित्र भी हमारी मैरेज एनिवर्सरी में शामिल हो रहा है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाँच

संध्याकाल वही हुआ है जिसका मुझे डर था। मैं बड़े मज़े से अपने किसी महत्वपूर्ण प्रयोग की रीडिंग में व्यस्त हूँ कि सहसा घड़ी पर नज़र पड़ते ही उछल पड़ा हूँ। साढ़े पाँच बज रहे हैं। घर में अतिथि आने शुरू हो गए होंगे और मैं यहाँ बैठा हूँ। जिन बातों को मैं याद रखना चाहता हूँ, वे मुझे भूल-भूलकर याद आती हैं और ऐन समय पर भूली रहती हैं। मेरे विवाह को ही लीजिए। मैंने यह तय कर रखा था कि विवाह नहीं करूँगा किंतु ऐन वक़्त पर भूल गया और झट विवाह कर लिया।

मैं तेज़ी से अपनी लेबॉरेट्री से निकलकर गराज की तरफ़ जा रहा हूँ कि रास्ते में मुझे अपनी पर्सनल सैक्रेटरी मिस अमीर मिल गई है।

"अरे मिस अमीर, तुम भी मेरी तरह अभी तक मेरी पार्टी पर नहीं गईं ?"

मेरी कहानी इतनी लंबी हो गई है परंतु न जाने मैंने अपनी इस प्रिय सहयोगी का उल्लेख क्यों नहीं किया है। शायद इसलिए कि मिस अमीर मेरे इतने निकट है कि नज़र ही नहीं आती।

"डॉक्टर, तुम्हारी पार्टी तुम्हारे बिना कैसे शुरू हो सकती है ? मैंने सोचा तुम्हारे साथ ही चली जाऊँगी।"

"तो आओ, मैं जा रहा हूँ।"

मिस अमीर कई वर्षों से मेरे साथ काम कर रही है और मेरे दफ़्तरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामों को इस तरह सँभाले हुए है जैसे कोई पत्नी अपने पति के घरेलू काम को सँभालती है। एक स्वप्न के-से तीसरे पहर की बात है : हम दोनों ऑफ़िस में बैठे हुए थे और मैं उसे एक ऑफ़िशियल पत्र की डिक्टेशन दे रहा था कि उसने अचानक पूछा—"डॉक्टर, तुम विवाह क्यों नहीं कर लेते ?··· यह कॉन्फ्रेंस नॉर्मल परिस्थितियों में इन तीन महीनों में संपन्न नहीं हो सकती," उसने मेरी डिक्टेशन का अंतिम वाक्य लिखकर दोहराया और आगे डिक्टेशन और अपने प्रश्न के उत्तर के लिए मेरी ओर देखने लगी—

"किंतु यदि आप चाहते हैं कि यह कॉन्फ्रेंस किसी भी प्रकार इसी बीच हो तो इस कमीशन की तसल्ली के लिए उन असाधारण परिस्थितियों के विवरण से सूचित कीजिए जिसके फलस्वरूप इस कॉन्फ्रेंस का आयोजन अनिवार्य है··· "

"हाँ क्या पूछा था तुमने मिस अमीर ?"

"अनिवार्य है··· मैंने पूछा था डॉक्टर, तुम अब विवाह क्यों नहीं कर लेते ?"

"मैं विवाहित हूँ मिस अमीर, तुम हैरान हो रही हो ? अच्छा, नहीं हूँ तो मेरे ये सारे रिसर्च प्रोजेक्ट्स क्या मेरे हरामी बच्चे हैं ?··· बोलो !"

"अब मैं क्या बोलूँ डॉक्टर ? मैंने तो यूँ ही सीधा-साधा प्रश्न पूछ लिया··· पत्नी के बिना आपको घर में तकलीफ़ होती होगी।"

"यदि ऐसा है तो मेरे दफ़्तर के काम के अलावा घर की देखभाल भी अनौपचारिक कर्तव्य समझकर तुम्हीं सँभाल लो न, क्यों ?"

"औपचारिक अथवा अनौपचारिक, मैं हर हाल में तैयार हूँ डॉक्टर, कहो आज ही चली आऊँ ?" मैंने उसकी आँखों की ओर ध्यान से देखा जहाँ उसकी लुकी-छिपी लालसा अपने सारे वस्त्र उतारकर मेरी ओर तक रही थी··· (यदि मैं सीमा से विवाह न करता तो मुझे विश्वास है कि मिस अमीर एक-न-एक दिन मुझे गहरे पानी में उतार ले जाती···)

"थैंक यू मिस अमीर, किंतु इस बारे में तुम मेरे विचारों से अच्छी तरह परिचित हो··· अच्छा, अब आगे लिखो।"

मिस अमीर बीमारी का बहाना करके··· नहीं, मेरे विवाह ने उसे सचमुच बीमार कर दिया होगा··· मेरे विवाह में अनुपस्थित रही थी, किंतु आज मेरी मैरेज एनिवर्सरी पर वह बहुत खुश नज़र आ रही है, इतनी कि मानो वह हमारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर पहुँचकर असीम प्रेम से सीमा के शरीर में समा जाएगी और सीमा को बाँहों में भरकर मैं मानो उसे ही भींच लूँगा।

"निशि¨ " मिस अमीर कभी-कभी ज़बरदस्ती मेरी धड़कन में घुसकर बजने लगती तो उसका नाम मेरे मुँह से निकल जाता—"सीमा के लिए मुझे अब एक नैकलेस खरीदना है¨ " रास्ते में मैंने एक जौहरी की दुकान के सामने गाड़ी रोक ली है—"आओ, अपनी पसंद का ले दो।"

सीमा को मालूम नहीं कि मेरे जिन उपहारों को देखकर वह खुशी से मेरा मुँह चूम लेती है उनका चुनाव मिस अमीर ही करती है। मेरा ख़याल है कि वह अपने चुनाव में सीमा की पसंद या नापसंद के बारे में बिल्कुल नहीं सोचती। जो वस्तु उसकी दृष्टि में खुब जाए उस पर उँगली रख देती है परंतु उसकी चुनी हुई चीज़ें पाकर सीमा खुशी से फूली नहीं समाती—"तुम इतने बुद्धू हो दिलीप," सीमा मुझसे कहा करती है, "किंतु मेरे लिए तुम जो भी चीज़ लाते हो वह बिल्कुल मेरी पसंद की होती है।" वह प्यार से गले में लटक जाती है, "अपनी पसंद की खुद मुझे खबर नहीं होती, किंतु तुम इसे तुरंत भाँप जाते हो, कैसे ?"

ऐसे कि हर स्त्री की वही एक पसंद होती है, हर कोई यही कुछ चाहती है। कई बार मुझे लगता है कि निशि हर शाम को मुझे अपने लिए चाहकर सीमा के लिए मेरे ही शरीर का गिफ्ट पार्सल बना देती है। सीमा मुझे इसलिए चाहती है कि निशि को भी मेरी चाह है—निशि ने जौहरी की दुकान से एक नैकलेस चुना है तो मेरे मुँह से किसी तरंग में निकल गया है कि एक अपने लिए भी चुन लो।

उसने चौंककर अपनी प्रसन्न नज़रों से मेरी ओर देखा है। उसकी नज़रों की पीड़ा महसूस करके मेरे सामने इंद्रधनुष के मनोहर रंगों की कल्पना चित्रित हो उठी है जो देखते-देखते इसलिए खिंच आई है कि आकाश की धूप में पानी मिला हुआ है।

"चुन लो न अपने लिए भी !"

उसने मुँह मोड़कर नकारते हुए सिर हिला दिया है।

कई भोले-भाले पौधे केवल रात के अँधेरे में ही फलते-फूलते हैं और दिन की आभा में सिकुड़कर रह जाते हैं¨

"क्यों, इनकार क्यों कर रही हो ?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी पिछली वर्षगाँठ पर मैंने उसे एक साड़ी भेंट की थी जिसे पाकर वह बेहद खुश हुई थी किंतु जब कई दिन··· अरे ? ! मैंने ध्यान ही नहीं दिया··· आज उसने वही साड़ी पहन रखी है !··· कई दिन उसने वही साड़ी न पहनी तो एक दिन मैंने यूँ ही उससे पूछ लिया, "तुम वह साड़ी क्यों नहीं पहनती ?"

"इसलिए डॉक्टर, कि सारी ज़िंदगी उसे सँभालकर रख सकूँ··· " न मालूम किन अस्पष्ट शब्दों में उसने अपना यह मतलब व्यक्त किया।

"क्यों ?"

परंतु उसका उत्तर सुनने से पहले मैं फिर अपने प्रयोग में लीन हो चुका था।

जौहरी की दुकान से निकलकर हम वापस कार में आ बैठे हैं और छह बज रहे हैं और मैंने इगनिशन का बटन दबाया है तो मुझे जैसे सीमा की क्रोधित-सी आवाज़ सुनाई दी है—"मैंने सोचा था कम-से-कम आज के दिन तो अपना काम रोक लोगे।"

गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई है और मैंने दुबारा बटन दबाया है··· "क्या पता मेरी मृत्यु की ख़बर पाकर भी उस समय तक घर न आओगे जब तक तुम्हारा काम ख़त्म न हो जाए।"

सीमा को मैं बहुत चाहता हूँ किंतु सच यह है कि उसका संदेह उचित है : लेबॉरेट्री में मुझे उसके चल बसने की सूचना भी मिले तो तुरंत घर भागने की बजाय ज़रा ठहर जाऊँ और पहले जल्दी से अपना काम करना पसंद करूँ और फिर सीमा अपने मुर्दा शरीर से निकलकर घर से चलकर मेरे सामने आ खड़ी हो—

"मैंने कहा, मैं जा रही हूँ।"

"हैं ?··· अच्छा··· ! ··· अर-र-र ! ठहरो भई··· ठहरो··· ठ- !"

मेरी गाड़ी सरपट दौड़ रही है मानो फंक्शन पर लेट पहुँचने की चिंता मुझसे ज़्यादा उसे हो।

मुझे यह सोच आई है कि हमने मशीनों को अपने कामों पर तो भरपूर अधिकार दे ही रखा है, हमारी भरपूर कोशिश निश्चय ही उन्हें बुद्धिमान और संवेदनशील भी बना सकती है। यदि वे इनसान से कहीं ज़्यादा काम कर सकती हैं तो कम-से-कम उसकी तरह महसूस क्यों नहीं कर सकतीं ? महसूस कर-करके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँस या रो क्यों नहीं सकतीं ? हमने अकारण उनकी सीमाओं का मिथ बना रखा है और''' यदि यह मिथ नहीं है तो इनसान को यह अधिकार होना चाहिए कि इनसान पैदा करने की बजाय इनसान बना सके। बनाना भी सृजन करना है, वल्कि बनाना ही सृजन करना है। सृजन में यदि इनसान की निर्माण की कामना का हस्तक्षेप न होता तो हमारी दुनिया आज इतने घने जंगल का दृश्य प्रस्तुत करती कि उसे खड़े रहकर भी जीने की जगह नसीब न होती। सृजन को अपने तौर पर स्वतंत्रतापूर्ण शारीरिक रूप में आने से रोको वरना तुम्हारा सारा निर्माण धरा रह जाएगा। पैदा न होने दो, बनाओ। हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का भविष्य केवल बनाने से बनेगा ! नर आदमी के पुरुपत्व का चिह्न उसकी मूँछ नहीं, कोई वाह्य चिह्न उसके पुरुपत्व का सबूत नहीं। नया पुरुष अपने मस्तिष्क की मूँछ को ताव में रखता है। दूसरे शब्दों में मिसेज़ क़ादर हमारा नया पुरुष है, इतना भरपूर पुरुष की क़ादर साहब को अपनी पत्नी के मस्तिष्क की मूँछ का यह अकड़ा-अकड़ा ताव देखकर अनुभव होने लगता है कि उनका पेट भारी हो रहा है''' उन्होंने गर्भ धारण कर लिया है, उनका लिंग परिवर्तित हो गया है''' या खुदा !''' वौखलाहट की तीव्रता से अपनी पत्नी को तलाक़ देने पर उतर आए हैं।

मैं हँस रहा हूँ।

और निशि मेरी तरफ़ आश्चर्य से देख रही है, और गाड़ी लगातार दौड़ रही है। प्रायः यूँ ही होता है''' जब मैं अपनी गाड़ी को तेज़-तेज़ दौड़ा रहा होता हूँ तो मेरी सोच मुझे उससे भी तेज़-तेज़ दौड़ाने लगती है और यूँ बैठे-बैठे अपने शरीर के अंदर-ही-अंदर वेतहाशा स्पीड से मैं झट चाँद से भी आगे निकल जाता हूँ और वाह्य रूप से इसलिए अपनी सीट पर ज्यों-का-त्यों बैठा दिखाई देता हूँ कि स्पीड अपनी चरम सीमा पर अपने आप रुक जाती है और रुके-रुके अपने अंदर-ही-अंदर गतिशील होकर असंख्य फ़ासले तय करने लगती है।

मैं यह क्या ऊटपटाँग सोच रहा हूँ ! मेरी कई ऐसी स्वर्गीय सोचें मेरी कई महत्त्वपूर्ण कृतियों की माँएँ हैं।

लो सीमा डीयर, इन सब अनाथ बच्चों को गोद में ले लो''' एक-दो-तीन-चार-एक सौ एक !''' मेरे दिमाग़ में किसी कुतिया के समान एक ही समय दर्जनों पिल्ले जन-जनकर तुम्हारे लिए यह पूरी फौज तैयार कर दी है। बोलो, एक सौ एक ?''' पाँच सौ एक ?''' नहीं ?''' कोई बात नहीं, तुम्हारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए मैं एक सचमुच का बच्चा भी बनाऊँगा... नहीं सीमा, मेरा मतलब उस बच्चे से नहीं जो बिस्तर की तहें तोड़-तोड़कर बनाया जाता है। बिस्तर के परिश्रम से बड़े काम संपन्न नहीं होते। मैं तुम्हारा बच्चा लेबॉरेट्री में बनाना चाहता हूँ। मेरी केमिकल्स की यह मशीन न केवल स्वयंचालित बल्कि स्वयंचिंतनशील और स्वयंसंवेदनशील भी होगी और मेरी (तुम्हारी) यह मशीन अपने स्वभाव के अनुसार क्षण-प्रतिक्षण, दिन- प्रतिदिन, मास-प्रतिमास और वर्ष-प्रतिवर्ष छोटी से बड़ी होगी। (क्या यह संभव है ?... क्या... ?) और हम मर जाएँगे तो उसे बड़ा दुख होगा और रो-रोकर अपने दोस्तों के साथ (उसके दोस्त और दुश्मन भी होंगे) हमें अपने कंधों पर लादकर श्मशान घाट ले जाएगी और फिर बड़ी-बूढ़ी होते-होते हमें प्रायः भूल जाएगी, दुनिया से विरक्त होकर अपने काम में खो जाएगी। मौत से पहले उसे कुछ कर जाने की धुन होगी... क्या ? ... कहीं मैं ही तो... ? नहीं, यह कैसे हो सकता है ? मैं ही वही मशीन कैसे हो सकता हूँ ?... मैं तो अपने स्वर्गीय पिता का बेटा हूँ... मेरे माता-पिता का एक लाइफ़साइज़ पोर्ट्रेट हुआ करता था... कहाँ है वह पोर्ट्रेट ?... अपने माता-पिता की आकृतियाँ मेरे दिल और दिमाग़ से विस्मृत हो चुकी हैं ?... कहीं सचमुच मैं मशीन तो नहीं ?... माँ-माँ !... ''

''कहाँ जा रहे हो डॉक्टर ?''

''अपनी माँ की गोद में ?''

मैं मिस अमीर की गोद में झुक गया हूँ...

''तुम्हारे बंगले की स्ट्रीट वह पीछे रह गई है... ''

''अरे !''

मैं अपने घर से आगे निकल आया हूँ। गाड़ी को रिवर्स करके मैंने मिस अमीर की ओर देखा है जो मेरे साथ बैठी हुई मुझे इतनी दूर मालूम हो रही है कि मुझे अपनी ज़मीन के सैटेलाइट के फ़ासले के आँकड़ों का ख़याल आ गया है।

''क्या बजा है ?''

''छह बजकर पच्चीस मिनट !''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका प्रेमी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छह

मेरा बेटा इतना बड़ा हो गया है कि उसे देख-देखकर मुझे लगता है मैं छोटा होता जा रहा हूँ, और यह है भी सही, वरना सीमा मुझे अपनी रग-रग में क्यों समाई हुई मालूम होती है ? मैं कुछ और भी सोच रहा होता हूँ तो मालूम होता है मेरे भीतर से फूल निकल आया है और उसकी खुशबू-भरी निखार से मस्त हो-होकर मुझे पता ही नहीं चलता कि निखरकर कब वह मुरझा गया, मुरझाकर कब फिर निखर आया। सीमा मेरी जड़ों से जुड़ी हुई है...

मैंने कई बार यह भी निर्णय किया है कि उसका विचार छोड़ दूँ। यदि वह मेरे अस्तित्व में कहीं ऊपर-ऊपर ही होती तो मैं अपनी वे सारी टहनियाँ काट देता परंतु अपनी मिट्टी से जड़ों को ही खो देना मेरे बस में नहीं। एक बार तो मैंने ऐसा करने की भी ठान ली। सीमा के विवाह की ख़बर पाकर मुझे विश्वास हो गया कि अब मेरी जड़ें खोखली हो जाएँगी परंतु मेरी मिट्टी कुछ इतनी ही उपजाऊ होगी कि वे इस झटके से ढीली पड़ जाने के बावजूद फिर हरी-भरी होकर, कस-तन गईं, वरना मैं सूखकर नीचे आ गिरता। मेरा लहलहाते चले जाना इस बात का चिह्न है कि मेरी प्रकृति स्थिर है... सीमा किसी और की हो गई तो क्या ? मेरा प्रेम तो मेरा है, मेरी जड़ें तो मेरी हैं।

मेरी जड़ें मेरे प्रेम से हरी-भरी हैं। उनकी अनछुई सरसब्ज़ी से मुझे अपने कुँआरेपन का एहसास होने लगा है। सुननेवाले को शायद हँसी आ जाए, परंतु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं सचमुच अपने बेटे के समान अभी कुँआरा हूँ, अपना बेटा ही हूँ… यदि मैं अपना बेटा होता, नहीं, अपने बेटे से दस साल बड़ा होता यानि अपने-आपसे दस-पंद्रह साल छोटा होता तो अपने बेटे की स्वर्गीय माता से विवाह करने की बजाय सीमा से… अपने-आपसे पूछे बिना सीमा से विवाह कर लेता। परंतु मैं अपने बेटे का बाप हूँ, और यदि अपना बेटा हूँ तो अपना पिता भी हूँ। मेरा अतीत मेरे वर्तमान में इतना गाढ़ा घुला हुआ है कि आनेवाला पल भी मुझे बीता-बीता मालूम होता है। सीमा को पकड़ने के लिए मैं अपने पीछे-पीछे दौड़ रहा हूँ किंतु सीमा अपने आगे-आगे जा रही है। हर पल हमारे बीच की दूरी बढ़ती ही जा रही है—यही एहसास मेरी ट्रैजेडी है। मैं ऊँचा होता जा रहा हूँ और मेरी जड़ें गहरी होती जा रही हैं और मेरी कामना यह है कि मेरी ऊँचाई और गहराई एक ही सतह पर आ जाएँ और उस सतह पर मैं और सीमा आमने-सामने जुड़कर एक हो जाएँ किंतु यह कैसे हो सकता है ? होता तो यह है कि जिससे हमें मुहब्बत हो, हम उसकी उपस्थिति को अपनी गहराइयों में केवल महसूस करते रहें और अपनी जुदाई के अटूट एहसास से ऊँचे होते जाएँ। मेरी सारी शक्तियाँ मेरी जुदाई की भावना के कारण हैं। मैं अपने विरह के कारण ही हरा-भरा हूँ। मेरी बेचैनियों के कारण ही सीमा मुझे प्रिय है। सीमा मेरी व्याकुलता की ही मूर्ति है। मैं व्याकुल न रहूँगा तो सीमा पराई हो जाएगी…

"बकवास !" शंकर मुझे इसलिए प्रिय है कि हम दोनों की बुद्धि नदी के किनारों की तरह चौड़ाई में संघर्षमय हो-होकर आमने-सामने डटी रहती है किंतु लंबाई में बड़ी निश्चिंतता से उसी एक सीध में चली जाती है—"मैं तो मुहब्बत बाद में करता हूँ, पहले स्त्री को अपने साथ लिटाकर खूब परख लेता हूँ… "

"मैं उस मुहब्बत की बात नहीं कर रहा हूँ, शंकर !"

"हर मुहब्बत वही एक मुहब्बत है मेरे यार…केवल मुहब्बत, और अगर मुहब्बत नहीं, तो कुछ और है : बेचैनी या जलन या नफ़रत… तुम्हारी मुश्किल यह है कि तुम अपनी प्रिया से सीधी-सादी नॉर्मल मुहब्बत नहीं करते, बस व्याकुल हो… अरे भाई, पता भी चले आख़िर तुम चाहते क्या हो ? तुम्हारी प्रिया बेचारी समझे तो क्या समझे ? आख़िर सटपटाकर वही पहल करती है और तुम्हें अपना भाई बना लेती है… लो अब जी भरके मुहब्बत कर लो !"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शंकर निरा बकवासी है परंतु यह ग़लत नहीं कि सीमा से अपने प्रेम को पूरा-पूरा प्रकट न करने से मेरे और सीमा के बीच एक काल्पनिक सीमा बन गई है। सीमा को संबोधित करते हुए मैं हमेशा उस काल्पनिक सीमा के गले में बाँहें डाले होता हूँ और डरता रहता हूँ कि सीमा कहीं हमें इस हालत में देख न ले…

''डरपोक !'' एक बार सीमा ने मेरी निर्भीक कहानी पढ़कर मेरे संबंध में अपनी राय दी—''तुम बड़े डरपोक हो। यही कारण है तुम्हारी यह कहानी इतनी बेधड़क है।''

सीमा ने मेरा चोर पकड़ लिया था। मेरी सभी बेधड़क कहानियाँ वास्तव में मेरे कुछ कर गुज़रने की कामना के डर की गुप्तचर हैं। मैं बर्फ़ का इनसान हूँ और मेरे अकर्म की बर्फ़ानी तहें मेरे शरीर में एकजान हो गई हैं, परंतु मैं इसलिए यथावत् जीवित हूँ कि मेरे बर्फ़ानी शरीर के अंदर मेरी रगों में गरम-गरम खून दौड़ता रहता है। यदि मेरी हत्या कर दी जाए तो मेरी बर्फ़ की सफेदी सुर्ख हो-होकर पिघल जाए। मैं चाहता हूँ कि मेरे ढेर होने से पहले सीमा मुझे इस घायल हालत में देख ले और मेरे मरने के बाद उसे बस एक ज़रा-सा लगे कि वह विधवा हो गई है और फिर उसका पति उसे थामकर अपने किसी बड़े काम में लग जाए।

साफ़ और सीधी-सी सच्चाई है जिसे मैंने नाहक़ क़िस्सा बना दिया है—वास्तव में मेरे कहानियाँ लिखने में भी मेरी इसी आदत का हाथ है। सच्चाई को ढाँपकर प्रस्तुत करता हूँ कि किसी ने नंगे मुँह देख लिया और बदमाशी पर उतर आया तो सज्जन का रेप हो जाएगा। और तो और, मुझे अपने-आप पर भी भरोसा नहीं। मैं अपने-आपको भी अपने-आपसे परदे में रखता हूँ। उस पराये का भी क्या भरोसा कि कब नजर मैली करके ऊपर चढ़ आए।

मुझे अपनी पहचान में हमेशा बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ता है। मैं क्या चाहता हूँ ?… क्या कर रहा हूँ ?… वही कर रहा हूँ जो चाहता हूँ या ? —न मालूम मैं क्या कर रहा हूँ। यदि मुझे अपने-आप पर भरोसा होता तो परदे से निकलकर बिना झिझक अपने सामने आ जाता अपनी सच्चाई से खुले बन्दों मिल लेता, किंतु मैं अपनी सच्चाई को सचेत कर देता हूँ—न, न… यहाँ मत आओ… यहाँ मैं बैठा हूँ और मेरी सच्चाई मेरे भीतर-ही-भीतर रह जाती है और मैं शांत-सी आतुरता से अपने बाहर बैठा रहता हूँ मानो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उससे मुलाक़ात करने की प्रतीक्षा में मैंने सारी आयु यहीं पड़े रहने का निश्चय कर रखा हो हालाँकि मैं ही उसे बाहर आने से डराता रहता हूँ।

अजीब क़िस्सा है ! मैं सीमा को पाने के लिए व्याकुल रहता हूँ परंतु उसे प्राप्त करने के लिए एक क़दम बढ़ाता हूँ तो डर और झिझक से दो क़दम पीछे हट जाता हूँ। सीमा के निकट रहने का यही एक तरीक़ा है कि मैं उसे पा लेने का ध्यान ही न करूँ, जैसे है वैसे ही रहने दूँ। मुझे फाँसी के फंदे से बच-बचकर अपनी सच्चाई से प्रेम करना है। दूसरे शब्दों में सच्चाई से प्रेम करूँ या न करूँ, मुझे फाँसी के फंदे से हर प्रकार बचना है। क्या नाम है उस कीड़े का जो अपनी मादा से पागलों की तरह जुड़कर अपनी वासना पूरी होते ही दम तोड़ देता है ! मुझे उस कीड़े से ईर्ष्या होती है··· और उस पर दया भी आती है। वह कीड़ा शायद मैं ही हूँ। अपनी वासना पूरी होते ही मैंने दम तोड़ दिया तो इनसान का जन्म लिया। हाँ मैं निश्चित ही उस कीड़े का विकसित रूप हूँ। मुझमें अब भी वह कीड़ा मौजूद है, परंतु अब मैं भी उस कीड़े में शामिल हो चुका हूँ। मेरा प्रेम ज्यों-का-त्यों है। जब मैं केवल कीड़ा था तो मुझे केवल प्रेम करना होता था किंतु अब मुझे सोचना-समझना भी होता है। सोच-समझकर एक सभ्य व्यक्ति के सारे कर्तव्यों का पालन करना होता है। और इनका पालन करके अपना सम्मान बढ़ाने के कारण बनाना होते हैं और न जाने क्या-क्या करना होता है और यह सबकुछ अच्छी तरह हो जाए तो प्रेम के बारे में सोचना होता है। मेरी मुहब्बत मेरे मस्तिष्क की कालकोठरी में ज्यों-की-त्यों पड़ी है और मैं यहाँ मस्तिष्क के बाहर बैठा हूँ और कभी-कभी यहाँ बैठे-बैठे मन-ही-मन में चुपके से उस कालकोठरी के दरवाज़े पर जा पहुँचता हूँ।

सीमा··· !··· सीऽऽमाऽऽ !

मुझे अपने-आप पर भरोसा नहीं··· प्रेम कर-करके ही मैं कीड़े से इनसान बना, किंतु इनसान बन गया तो जी भरके प्रेम करने का अधिकार खो बैठा··· अब मुझे इनसान से देवता बनना है जो न किसी से प्रेम करता है न नफ़रत··· न जाने क्या करता है··· जो भी करे, कीड़ों के समान मुहब्बत कर-करके दम तो नहीं तोड़ता।

तुम्हें देवता बनना है, अपने-आपसे बेलाग होकर नश्वर लोगों की कहानियाँ लिख-लिखकर अनश्वर होना है··· मेरी अपनी भी तो एक कहानी है। तुम्हारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कहानी होती है : जन्म, विवाह, लड़का, पत्नी की मौत, बड़ी आयु में एक इश्क़··· और प्रेयसी का विवाह और··· बस, अब शेष क्या रह गया है ? एक कोने में सरककर बैठ जाओ··· चुप क्यों हो गए ? बोलो, अब आप-ही-आप तुम्हारी कहानी कैसे आगे बढ़ेगी ? बहुत करोगे तो अपने-आपसे वार्तालाप करके मरुस्थल में खोकर अपनी कहानी को लटका लोगे, और क्या करोगे ? इस मरुस्थल में घटनाएँ क्योंकर उगेंगी ? और उग भी आईं तो उनको सींचेगा कौन ? तुम ?··· तुममें तो इतनी भी हिम्मत नहीं कि एक बार परिणाम से बेख़बर होकर सीमा को बरबस अपनी छाती से लगा लो···

मैं अपने मस्तिष्क की कालकोठरी का दरवाज़ा खोले बिना लौटकर अपने बाहर आ बैठता हूँ··· मुझे अपने-आप पर भरोसा नहीं रहा, वरना···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सात

मैं यथावत् अपने शरीर के बाहर प्रतीक्षा में बैठा हूँ कि कब सीमा मेरे मस्तिष्क से प्रकट होकर कहे—'आओ, मैं तुम्हारा अपहरण करने के लिए आई हूँ—उठो।' और फिर मैं सबकुछ छोड़-छाड़कर उसके साथ हो लूँ… वही कुछ ज़ोर लगाए तो बात बने, वरना मेरी समझ-बूझ की मुहब्बत तो बात को सँवार-सँवारकर बिगाड़के रख देगी…

जब सीमा यहीं थी और मुझसे मेरी कोई कहानी सुनते हुए आवेशपूर्ण तन्मयता से तमतमाने लगती थी तो मुझे वह अपनी कोई कहानी ही मालूम होती थी—अपनी कहानियों को मैं नहीं लिखता, मेरी कहानियाँ अपने-आपको स्वयं लिखती हैं, इसलिए मेरी यह कामना मेरे स्वभाव के बिल्कुल अनुरूप है कि वही मेरी कहानी को अंत तक लाए।

लिखो मेरी कहानी, तुम ही मुझे लिखती जाओ…

सीमा ही मुझे लिखे जा रही है।

यदि मैं बेचैन हूँ तो उसमें मेरा कोई दोष नहीं, उसी ने मुझे बेचैन किया है, वही मुझे लिख रही है। मेरे बस में होता तो उसे भूल-भालकर चैन की बाँसुरी बजा रहा होता, पर इसका क्या कीजिए कि ज़िंदगी खुद ही हमें लिखती रहती है। हम ज़िंदगी को लिखने बैठ जाएँ तो जीना झूठ-मूठ-सा लगे…

किंतु मुझे याद है एक दिन मैं अपनी ज़िंदगी को अपनी मर्ज़ी से लिखने की इच्छा से बहुत बेचैन था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"सीमा..."

"कहो साहू..."

"मैंने एक बहुत अच्छी कहानी सोची है..."

"किंतु तुम्हारा तो कहना है कि तुम्हारी कहानी तुम्हें सोचा करती है..."

"नहीं, आज मैंने ही उसे सोच लिया है सीमा !"

"तो फिर यह कहो साहू कि मैंने कोई निर्णय कर लिया है, कहानी को क्यों व्यर्थ ही बीच में घसीट रहे हो ?"

शुक्र है सीमा के विवेक से मेरे मुँह पर ताला लग गया, नहीं तो न जाने वह मेरे बारे में क्या धारणा बना लेती।

मुझे डर है कि सीमा जब मेरे बारे में सोचती है तो वास्तव में मेरे बारे में नहीं, मेरे सृजन के बारे में सोचती है—मैं खुद तो उसके ज़ेहन से अदृश्य होता हूँ, हमारे संसार का रचयिता बेचारा भी इस दृष्टि से भाग्यवान नहीं। हम दिन-रात उसके गुण गाते हैं परंतु सत्य यह है कि हमारे मस्तिष्क केवल उसके सृजन के चमत्कार से भरे होते हैं, वह स्वयं हमारे मस्तिष्क से बाहर होता है। जाने किस एकांत में लुप्त होकर चुपचाप सज्जनता से अपनी महानता का दंड भुगतता रहता है।

"सीमा, क्या तुम्हें कभी यह इच्छा हुई है कि तुम और भगवान इकट्ठे बैठकर एक ही थाली में खाना खाओ।"

"मेरे पाव-भर गेहूँ से उसका पेट क्या भरेगा साहू, वह तो खाने-पीने से मुक्त है।"

सभी सोचते हैं कि महानता को भूख नहीं लगती, इसलिए जिन बेचारों पर वैभव का आभास होता है उनकी भूख की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। उन्हें भूखे मरना पड़ता है।

नहीं, मैं सीमा का भगवान नहीं बनना चाहता हूँ। भूख से मेरी जान निकल रही है, मुझे पाव-भर गेहूँ खाना है...

तो खाओ, खाना तुम्हारे सामने तैयार पड़ा है। हाथ क्यों नहीं बढ़ाते ? बस यही कमी है। यदि मैं इक ज़रा हाथ बढ़ाकर एक बार शुरू कर दूँ तो क्या हर्ज है ? बस इक ज़रा... नहीं, इक यही मुझसे नहीं हो पाता है।

"मुझे तो यह भी डर है कि सीमा यदि किसी समय अचानक मुझसे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरबस लिपट जाए... इच्छाएँ यदि घोड़े हों तो ! मूर्ख... तो मैं घबरा जाऊँ—'अरे-र !·होश से काम लो सीमा... "

"नहीं, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।"

"हाँ, हाँ, ठहरो ! हम दोनों एक दूसरे से तन-मन से प्यार करते हैं किंतु पहले ज़रा सोच-समझ तो लें।"

हमें सचमुच कहीं जाना हो तो हमारे दोनों क़दम आगे-पीछे उड़ते हुए प्रायः विचाररहित होते हैं, और सोचे-समझे बिना झट मंज़िल पर जा पहुँचते हैं, किंतु मैं सोचने का अभ्यस्त हूँ, इसलिए या तो अपनी जगह खड़ा सोचता रह जाता हूँ या मेरे क़दम चलते-चलते सोच-सोचकर लड़खड़ाने लगते हैं और मैं अपने-आपको सँभालने के लिए खड़ा हो जाता हूँ और खड़े-का-खड़ा रहता हूँ और खड़े-खड़े सीमा को भूल जाता हूँ, परंतु सीमा मुझे अंग-अंग जुबानी याद है, अतः वह मेरे मस्तिष्क के बाहर, कहीं भी नज़रों से ओझल नहीं हो पाती।

सीमा से पहली भेंट पर मुझे एहसास हुआ कि मुझे उसी की प्रतीक्षा थी। अपनी प्रेमिका से हमारी जान-पहचान उससे पहले ही हो चुकी रही होती है, परंतु उससे एक बार मिलने के बाद बार-बार मिलने पर भी यही महसूस होता है कि हम उससे पहली बार मिल रहे हैं।

शंकर ही पहली बार सीमा को मेरे पास लाया था।

"लो भई मिल लो अपने प्रिय कहानीकार से।"

मैंने सिर उठाकर अपने मित्र की साथिन की ओर देखा तो मेरे दिमाग़ में मानो कई सुंदर, सजी-धजी कहानियाँ खिलवाड़ करती हुई अनजाने में आ गईं और उन्हें देखकर मुझे यह भी न सूझा कि उन्हें आबाद कर लूँ। मैं उन्मुक्त कहानियों को चुपके से बंदी बना लेता हूँ और फिर जब वे बाहर आने के लिए मेरे मस्तिष्क का द्वार पीट-पीटकर चिल्लाना शुरू कर देती हैं तो उन्हें शब्द शब्द मुक्त कर देता हूँ। किंतु सीमा से भेंट करते हुए मैं उनकी ओर एकटक देखता अवश्य रहा लेकिन मेरा ध्यान उनकी तरफ़ नहीं गया और वे खेलती-खेलती मेरे मस्तिष्क में प्रविष्ट होकर मेरे मस्तिष्क से निकल भी गईं...

सीमा मुझे इसलिए भी देखना चाहती थी कि मैं उसका प्रिय कहानीकार हूँ, एक अद्भुत वस्तु हूँ, रोज़ा ताजमहल हूँ—वह मुझसे मिलकर बड़ी खुशनज़र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिखाई दे रही थी··· उसकी आनंदमय चकित दृष्टि का अनुभव करके मैंने आगे बढ़कर उसके हाथ अपने हाथों में ले लेने चाहे। परंतु ताजमहल की बहरी और गूँगी दीवारें अपनी नींव से एक इंच भी हिल जाएँ तो तहस-नहस हो जाएँ। दीवारों को हर सूरत अपनी ही जगह पर खड़ा रहना चाहिए।

मैं ज्यों-का-त्यों अपनी जगह पर खड़ा रहा और मेरे अंदर-ही-अंदर तूफ़ान उठते रहे किंतु देखनेवाले यही समझते रहे कि मैं निरा पुरा पत्थर हूँ, बेआवाज़-बहरा, डायनामाइट से उड़कर, टुकड़े-टुकड़े होकर, बिखरकर मुझे शांति मिल जाती परंतु मैं रास्ते के एक ओर पड़ा था, जीवन की यातायात के इतने मार्ग खुले पड़े थे कि मैं नज़र आने से रह गया··· नहीं, नज़र तो आ गया किंतु केवल नज़र ही आया, नज़र में पहाड़-का-पहाड़ बनकर पड़ा रहा। पहाड़ों पर खेतीबाड़ी करना बड़ा जानलेवा काम है। मेरी ऊँचाइयों की बीसियों छोटी-छोटी दुर्गम सतहें अपनी लंबी वीरानी से जंगल बन चुकी हैं, जहाँ भाँति-भाँति के जानवर बसे हैं जो एक-दूसरे की हड्डियाँ-बोटियाँ नोच-खसोटकर अपनी-अपनी भूख मिटाते हैं और मेरी चोटियों से नीचे की ओर बहते हुए पानी में मुँह डालकर अपनी प्यास बुझाते हैं। और जब उनकी शामत आती है तो पानी के साथ-साथ चलकर नीचे सभ्य मैदानों में उतर आते हैं जहाँ कोई शिकारी उन्हें देखते ही अपनी खुराक के लिए शूट कर देता है···

नहीं सीमा, जहाँ हो वहीं रहो, ऊपर मत आओ, वहीं सुरक्षित हो। ऊपर आके व्यर्थ का ख़तरा क्यों मोल लेती हो !··· अपनी जान की बैरी मत बनो··· मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ, तुम्हारे प्राणों का दुश्मन तो नहीं। मैं तुम्हें अपने चंगुल में नहीं फँसने दूँगा, अपने किसी रक्तपिपासु, चंचल, कपटी चौपाये के पेट को तुम्हारी क़ब्र नहीं बनने दूँगा··· मेरी ऊँचाइयों के किसी घने जंगल में तुम घुस आई तो मेरे चार-चार पैरोंवाले तुम्हें सूँघ-सूँघकर अपनी गुफाओं से बाहर निकल आएँगे और··· और··· नहीं सीमा, मैं तुम्हें अपनी नीयत की भनक भी न पड़ने दूँगा, मैं तुम्हें अपनी भयानक ऊँचाइयों से सुरक्षित रखूँगा··· नहीं··· !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आठ

शंकर पिछले कई महीनों से मेरे पीछे पड़ा हुआ है कि विवाह कर लो।

"किससे ?"

"अपने-आपसे, और कौन तुमसे विवाह करेगा ?"

शंकर ने ठीक ही कहा है। यदि मुझे अपनी संगति का आनंद प्राप्त हो जाए तो मुझे और क्या करना चाहिए। अजीब-अजीब विचारों ने मेरे और मेरे बीच एक दुनिया खड़ी कर रखी है। इस दुनिया के उस पार भी एक "मैं" हूँ जिसके बारे में मुझे ज़्यादा ज्ञान नहीं, बस ज़रा-सा सुन रखा है—होगा कोई, मुझे क्या ?... नहीं, तुम्हें नहीं तो और किसे क्या होगा ?... हाँ, यदि मेरा वह 'मैं' मुझे सदा के लिए मिल जाए तो मुझे मानो मेरी सीमा मिल जाए। जिसे अपने अस्तित्व का किनारा मिल जाए, वह डूबने से बच जाता है। सीमा !... सी... !

"यदि तुम चाहो तो सीमा से भी विवाह कर सकते हो।"

नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है ? शंकर शायद मेरे प्रेम की भनक पाकर मेरी हँसी उड़ा रहा है...

"साहू, सीमा तुम्हारे आर्ट को तुमसे भी ज़्यादा समझती है। यदि तुम्हारा व्यक्तित्व तुम्हारे आर्ट से भिन्न नहीं तो सीमा के द्वारा तुम्हारा सारे-का-सारा अपने-आप तुम्हारी समझ में आ जाएगा।"

हाँ, स्त्री वही अपनी होती है जिसे गले लगाकर हमारे अस्तित्व के सारे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भेद हम पर प्रकट हो जाएँ और जीना किसी प्राइमरी टैक्स्ट बुक के समान सरल मालूम होने लगे। सीमा के सीने से सीना जोड़कर बड़ी-बड़ी बातें मेरे लिए सहज-सी हो जाएँगी, मेरी गहराइयाँ स्वयं सतहों पर आ जाएँगी और पहुँचे फ़क़ीरों की तरह मेरा बाहर भी भीतर में डूबा हुआ मालूम होगा। शंकर का कहना ग़लत नहीं। मुझे वास्तव में अपने-आपसे विवाह करना है। किंतु सीमा से विवाह किए बिना मेरे 'मैं' और 'मैं' कुँआरे रह जाएँगे। मेरा सीमा से विवाह किए बिना चारा नहीं···

''आओ सीमा, हम विवाह कर लें !''

(अपेक्षित मौन)

उत्तर क्यों नहीं देतीं, सीमा ?

(घुटन !)

''बोलो, सीमा··· !''

परंतु सीमा है कहाँ ?··· जो व्यक्ति हमारे ख़याल में हो वह हमारे पास कहाँ होता है ?··· और यदि पास हो तो मानो हमारे ही मस्तिष्क से प्रकट होकर अपने रूप में आ जाता है और हमारा मस्तिष्क बिल्कुल ख़ाली हो जाता है और ख़ाली मस्तिष्क की भाएँ-भाएँ में हमारी समझ में नहीं आता कि हम उससे क्या कहें।

''सीमा, तुम्हें अपनी एक नई कहानी सुनाऊँ ?''

दो-चार महीनों में ही सीमा और मैं बेतकल्लुफ़ हो गए हैं।

''हाँ, सुनाओ··· नहीं, पहले मैं तुम्हें अपनी एक सच्ची घटना सुना लूँ, फिर तुम अपनी कहानी सुनाना : हुआ यूँ कि कल रात मैं तुम्हारी वह कहानी 'अपने पीछे रुका हुआ आदमी' पढ़ रही थी और··· और··· जानते हो क्या ?—मैं तुम्हारे उस कहानी के पात्र पर··· कहानी के 'मैं' पर बुरी तरह आशिक हो गई हूँ···''

''परंतु वह मैं तो मैं ही हूँ सीमा !''

मैं यह कहकर बौखला-सा गया हूँ—''नहीं, मेरा मतलब है, मैं वह कैसे हो सकता हूँ ? वह पात्र आप ही अपना-आप है।''

''तो बताओ, वह कहाँ है ?··· '' मैं उसके गले में बाँहें डाल देना चाहती हूँ··· ''कहाँ है ? बताओ ?''

''मुझे क्या पता सीमा ? मैंने तो उसे अपने मस्तिष्क से पैदा करके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
खुला छोड़ दिया है, अब पता नहीं इतनी बड़ी दुनिया में वह कहाँ घूम रहा होगा ? जहाँ मिल जाए, पकड़कर बिठा लो।''

''बड़ा विचित्र पात्र है !''

''हाँ, बड़ा विचित्र। पच्चीस वर्ष की आयु के बाद हर साल ज्यों-का-त्यों फिर पच्चीसवें वर्ष में ही क़दम धरता है। ऐसा क्योंकर हो सकता है ?''' पर क्यों नहीं हो सकता ? मुझे ही देख लो''' क्या मैं वास्तव में वर्ष-प्रतिवर्ष बड़ा हो रहा हूँ ? यदि मैं बड़ा हो गया हूँ तो बड़ा क्यों नहीं हुआ ? मुझे चैन क्यों नहीं आ गया ? पच्चीस-तीस वर्ष की आयु के बाद आदमी को थोड़ा-थोड़ा चैन आ जाता है और यूँ थोड़ा-थोड़ा करके जब उसे पूरा चैन आ जाता है तो वह मर जाता है। परंतु मेरे साथ यह हो रहा है सीमा, कि हर वर्ष के अंत में मेरी बेचैनी नए सिरे से वैसे ही शुरू होकर बढ़ती जाती है।''

''अरे तुम तो ठीक उसी पात्र के समान बातें कर रहे हो साहू !''' क्या ? नहीं, तुम वह नहीं हो।''' तुम तो अपने पात्र के बाप हो।''

अपनी बड़ी आयु के उल्लेख से मैं चिढ़-सा गया हूँ, हालाँकि जब मेरा बेटा कभी मुझसे किसी समकालीन का-सा निःसंकोच व्यवहार करता है तो मुझे ठीक नहीं लगता।

''मैं तुम्हारा बाप हूँ मेरे बेटे !'' (वह भी मेरी जीती-जागती कहानी का पात्र है)

''यह तो केवल संयोग है डैडी, हो सकता है मैं आपका बाप होता। हमारी जींस तो वही एक हैं डैडी, आप बाप हुए तो क्या और मैं बेटा हुआ तो क्या।'' मेरा बेटा बायोकैमिस्ट्री में पोस्टग्रैज्युएशन कर रहा है–''ऑल प्रेज़ेंट लाइफ़ बिलोंग्स टू दी सेम एज। इस दृष्टि से डैडी हम इनसानों की अपेक्षा जानवरों का लिविंग ज़्यादा साइंटिफ़िक है। ह्यूमन कल्चर ने छोटी और बड़ी आयुओं की अलग-अलग पहचान करके लाइफ़ को इतना छोटा बना दिया है।''

मैं अपने बेटे की गहरी सोच से बहुत प्रभावित हो जाता हूँ और मुझे मालूम होता है कि वह मुझसे अधिक प्रौढ़ है और मेरी आयु से उतने ही साल बड़ा है जितने साल इस समय उसकी आयु है। और अपनी परिपक्व आयु के बावजूद या शायद उसके ही कारण प्रफुल्लित है क्योंकि जीवन में शाश्वत प्रफुल्लता इस पर निर्भर है कि उसकी चेतना पुरानी होती चली जाए–''आओ बेटा, मेरे साथ बैठकर शराब पियो, ताकि पहले हम ज़रा-से शराबी हो जाएँ और फिर लिविंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के स्तरों को नए सिरे से जाँचें··· ''

''हाऊ फुलिश ! शराब पीना हो डैड तो सिर्फ़ शराबी होने के लिए पीते हैं, अगर सोचना-जाँचना है तो ब्लडप्रेशर को डिस्टर्ब करने की क्या ज़रूरत है ?''

मेरा बेटा सचमुच मेरा बाप है। यह ग़लत नहीं कि उसका मेरा बेटा होना केवल संयोग है। हमारे सारे रिश्ते, गहरे रिश्ते भी केवल संयोग से शारीरिक रूप धारण कर लेते हैं। यह भी संयोग है कि मैं अपनी पत्नी का पति बना, वरना संयोग से किसी और की पत्नी भी मेरी पत्नी हो सकती थी और यदि कोई और स्त्री मेरी पत्नी होती तो इस बेटे का बाप होने की बजाय मैं किसी और बेटे का बाप होता, किसी अज्ञात बेटे का। यह भी संयोग है कि वह पैदा ही नहीं हुआ। यदि पैदा हो जाता तो मेरा बेटा होता, नहीं हुआ तो है ही नहीं··· या यदि है तो शायद सीमा के ख़ून में मुझसे काँटेक्ट करके अपना कोई रूप धारण करने के लिए व्याकुल है। हर शक्ल वास्तव में किसी कामना की पूर्ति की द्योतक है और जो शक्लें बनने से रह जाती हैं, उनसे केवल यही पता चलता है कि कामनाएँ पूरी होने से रह गई हैं।

वह दिन !

मैं जाने क्या सोच रहा था, शायद सीमा के बारे में सोच रहा था,. या शायद सोच रहा था कि उसे भुला दूँ या शायद उसे एक ही समय याद कर रहा था और भुला रहा था।

थोड़ी देर में मुझे सीमा के हँसने की आवाज सुनाई दी और मैंने अपने-आपको वार्निंग दी—लो अब नौबत यहाँ तक आ चुकी है, सीमा तुम्हारे सिर पर चढ़कर तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाने लगी है।

''भई हद हो गई साहू।'' नहीं, वह सचमुच मेरे सामने खड़ी थी—''इतनी देर से यहाँ तुम्हारे कमरे में आई हुई हूँ मगर तुम्हें ख़बर तक नहीं।''

''आओ बैठो।'' जब वह मेरे सामने आ खड़ी होती है तो मानो मेरे जकड़े हुए दिमाग़ को आज़ाद करके वहीं से प्रकट होती है और उसे देखकर मुझे अपनी नसों के ढीलेपन के एहसास से बड़ा सुख महसूस होता है।

''अब कहीं जाके अपने चेहरे में लौटे हो।'' वह बैठ गई—''अब तुम्हारा रूप नज़र आने लगा है, वरना अपने चेहरे में तुम दूर-दूर तक नज़र नहीं आ रहे थे।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"क्या नज़र आ रहा था ?"

"विश्वास करो साहू, मैं मज़ाक़ नहीं कर रही हूँ। मैं तुम्हारे चेहरे की तरफ़ घूर-घूरकर देख रही थी परंतु मेरी आँखों में तुम्हारी कोई शक्ल बनने में ही नहीं आ रही थी। तुम मेरे सामने बैठे हुए थे और तुम्हारी सूरत साफ़ मेरे मस्तिष्क में थी, पर तुम्हारे चेहरे से कोई भी सूरत न बन रही थी··· आश्चर्य है ! मैं तो··· "

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है सीमा··· तुम्हें··· " मैं रुक गया।

"हाँ, हाँ, कहो··· "

मेरी गाड़ी मानो झटका खाकर तेज़-तेज़ दौड़ने लगी है।

"सीमा, मेरी आँखें तुम्हें अपने सामने देख लेती हैं तो मेरे चेहरे के सारे चिह्न जहाँ भी हों तुम्हें देखने के लिए दौड़कर चेहरे में लौट आते हैं, और तुम्हें इतने चाव से देखने लगते हैं कि मेरा रूप बन जाता है।"

"क्या··· ?" (कहीं तुम मुझसे··· क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो साहू ?)

प्रेम ! यदि इसी शब्द के कारण मुझे मालूम हो जाए कि मैं तुमसे क्या करता हूँ तो मेरे दम में दम आ जाए··· "सीमा, मैं तुमसे··· "

सीमा के आश्चर्य व्यक्त करने पर अपनी बात शुरू करके मैं रुक गया था और यथापूर्व रुका हुआ था। सहसा वह खिलखिलाकर हँस पड़ी—

"तुम कुछ कहने जा रहे थे साहू, अचानक यह चुप्पी क्यों साध ली ?" उसकी हँसी अब पीठ मोड़ रही थी परंतु उसकी पीठ से भी साफ़ पता चलता था कि वही है। "जब तुम किसी को अपने पास बुलाते हो तो ऐसा लगता है कि तुम उसे अपनी किसी कहानी का पात्र समझ लेते हो जो अपने शरीर में भी हो और तुम्हारे दिल और दिमाग़ में भी। शायद इसीलिए तुम आधी बातें अपने बाहर करते हो और आधी अपने अंदर।"

"तो मेरी बाक़ी बात सुनने के लिए मेरे अंदर क्यों नहीं चली आतीं ?"

सीमा ने ज़रा चौंककर मेरे अंदर झाँकना चाहा और मैं घबरा गया और घबराकर झट से अपनी खिड़कियाँ और दरवाज़े बंद कर लिए और किसी चौकीदार की कोरी मुसकराहट से उसकी ओर देखने लगा।

मैं चाहता था कि सीमा इतनी निडर हो कि मेरी खिड़कियाँ और दरवाज़े तोड़कर ज़बरदस्ती मेरे अंदर घुस आए, मुझपर हावी हो जाए और फिर मैं अपने-आपको समझाऊँ कि मैंने तो कुछ भी नहीं किया, मैं तो···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नौ

मैं वास्तव में बड़ा कायर हूँ किंतु मुझे यह डर नहीं है कि सीमा मेरे अंदर घुसकर मुझे क़ाबू कर लेगी। वह तो उस दिन से मेरे अंदर है जब मैंने पहली बार उसे देखा था। मैंने अपने सारे किवाड़ इसलिए बंद रखे हैं कि मुझे डर है कि वह बाहर न चली आए, मेरा भेद न खुल जाए।

एक बार सीमा मेरे साथ जुड़कर बैठी मुझे किसी चित्रकार के चित्र दिखा रही थी कि अचानक शंकर कहीं से आ गया और मुझे घबराया हुआ पाकर हँसने लगा।

''साहू, तुम तो यूँ घबरा गए हो जैसे सीमा से प्रेम करते हो !''

मेरा नंगा-धड़ंगा ज़िद्दी बालक मेरे आगे-आगे दौड़ रहा था और मैं अपना दो-शब्दित वस्त्र पहने उसके पीछे-पीछे—''नहीं तो... '' और फिर मैंने खिसियाना होकर शंकर की ओर देख मानो अपने-आपसे कहा—''शट-अप !''

''शाबाश !'' शंकर लगातार हँस रहा था—''अपने-आपको डाँट-डपटकर एकदम सीधा कर दो, बच्चालोग लाड़-प्यार से एक बार बिगड़ जाएँ तो सारी उम्र हाथ नहीं आते।''

''बच्चालोग के बच्चे, मुँह में लगाम देकर बात करो।''

''यदि इनसान भी पालतू घोड़े बन जाएँ मेरे दोस्त तो तुम्हें अपनी कहानियों के संवाद लिखने की बजाए सड़कें कूटने का काम करना पड़ेगा।''

सीमा भी शंकर के साथ हँसने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मुझसे तुम्हें कोई ख़तरा नहीं सीमा, क्योंकि मैंने सारी उम्र कुँआरा रहने की सौगंध ले रखी है परंतु हमारे इस प्यारे भाई के मुँह एक बार खून लग चुका है, बस इससे बचकर रहो।"

मैंने सीमा से नज़रें बचाने की कोशिश में सहसा उसकी आँखों में देखा, और मेरी आँखों में न जाने क्या पाकर उसके मुँह से बरबस निकल गया—"हमारा साहू कोई जंगली जानवर तो नहीं शंकर !"

"जंगली नहीं, शहरी जानवर है। अपनी दो टाँगें लटकाकर तीसरी से खेलता रहता है और चौथी से सिर खुजाता रहता है। कमाल का जानवर है, इसीलिए तो चार खूँट प्रसिद्ध है। पर मादाम सीमा, दूर से देखकर उसपर जी भरके रीझ लो, बस पास न आओ। जो पास आया, उसकी भूख की भेंट हो गया।"

"तो फिर तुम अभी तक क्यों ज़िंदा हो ?"

"मेरी बात और है, मैं कोई स्त्री थोड़े ही हूँ।"

मैं चुपचाप अपनी जानवर की गर्दन लटकाकर अपने बारे में उन दो इनसानों का संवाद सुन रहा था कि सीमा का वाक्य सुनकर मेरा जी चाहा, हवा में दुलत्तियाँ मारने लगूँ।

सीमा के कामरहित प्यार से मुझे लगता है कि हम दोनों ने अपनी गाड़ी न्यूट्रल गीयर में स्टार्ट कर रखी है और इसे ईंधन देने के लिए थ्रॉटल पर पाँव रखा है। रास्ता एकदम समतल है, इंजन पूरी स्पीड से चल रहा है, गाड़ी की साँस फूली हुई है, किंतु वह वहीं-की-वहीं खड़ी है। गीयर क्चल में जाए तो गाड़ी में गति आए। मेरी एक गाड़ी थी जिसकी गीयर-ट्रबल से मैं लाचार हो गया था··· सीमा और मैं जहाँ खड़े हैं, नाहक़ पैट्रोल जल रहा है··· इंजन को बंद करो··· यह खड़-खड़ शोर बंद करो !

जिस कहानीकार के पात्र बेधड़क होते हैं उसे स्वयं धड़का लगा रहता है कि पता नहीं क्या हो जाएगा। मेरे पात्र भी प्रायः बोल्ड हैं। जो मन में आए कह देते हैं और कहकर ही रहते हैं, जो होगा देखा जाएगा। कई बार तो उनके बोल लिख-लिखकर मैं चौंककर क़लम रोक लेना चाहता हूँ कि मूर्खों को व्यर्थ ही भुगतना पड़ जाएगा। किंतु वे इतने गतिशील हैं कि मैं इधर ज़रा ठहर भी जाऊँ, तो वे उधर न मालूम कहाँ-के-कहाँ जा पहुँचें, और लाख कोशिश करने पर भी उनका पता न मिले। वे अपने प्रेम में सबकुछ कर गुज़रते हैं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किंतु मुझमें यह साहस नहीं। मैं बड़ा सावधान, परिणामदर्शी और मंद गतिशील हूँ और विरक्त प्रेम करता हूँ और प्रेम करते हुए प्रेम करना भूलकर सोचना शुरू कर देता हूँ। मुझ-जैसा व्यक्ति प्रेम कैसे कर सकता है ? मेरी योग्यता तो केवल प्रेमियों की कहानियाँ लिखने तक सीमित है। प्रेमी आँखें बंद करके अंतरिक्ष को पार कर जाते हैं परंतु मैं आँखें खोलकर असीम अंतरिक्षों के विस्तार को इंचों की सुगम नाप में बयान कर सकता हूँ और बस। प्रेम की सारी सीमाओं से परिचित हूँ परंतु प्रेम नहीं कर सकता।

यदि मैं सचमुच सीमा से प्रेम करता हूँ तो उससे प्रेम क्यों नहीं करता ?

परंतु क्या मैं सचमुच सीमा से प्रेम करता हूँ ?

उस दिन सीमा के अचानक पूछने पर मैं बौखला-सा गया।

"साहू, क्या तुमने अपने जीवन में कभी किसी से प्रेम किया है ?"

सीमा मुझ पर लेख लिख रही थी इसलिए उसके प्रश्न पर चकित तो न हुआ किंतु मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या उत्तर दूँ। सीमा के मैं इतना निकट था कि उसे सारा क़िस्सा सुनाकर मैंने उसी से क्यों न पूछ लिया—बताओ, मैं अपने प्रेम को प्रेम समझूँ या क्या समझूँ ?

मेरी किसी कहानी के एक पात्र ने अपने प्रेमी से यही प्रश्न किया था। उसने झट उत्तर दिया था—"हाँ बीसियों बार प्रेम कर चुका हूँ किंतु अब मुझे लगता है कि ज़िस-जिससे भी प्रेम किया और वह जो भी थी वास्तव में तुम ही थीं।"

परंतु मैं तो केवल अपना ही हूँ।

नहीं, तुम मेरी प्रेमिका भी हो—और मैंने बार-बार अपनी प्रेमिका को चाहा है। तुमसे मुझे क्या मतलब ?

मैं भी उस प्रेमी की तरह कई प्रेम कर चुका हूँ और इन छोटे-छोटे प्रेमों से भरकर मेरा जाम परिपूर्ण होके छलक रहा है और मैं अपने सूखे होंठों पर जीभ फेर रहा हूँ किंतु मुझे यह नहीं सूझ रहा कि प्याला उठाके मुँह से लगा लूँ या शायद मुझे डर लग रहा है कि इतना तगड़ा जाम चढ़ाकर मैं अपनी दो टाँगों पर सीधा खड़ा न रह सकूँगा। मुझे लड़खड़ाना नहीं आता। यदि लड़खड़ाना हो गया तो कैसे लड़खड़ा पाऊँगा और यदि ऐसा कर पाया तो क्या मेरी आयु अब लड़खड़ाने की है ?··· काश मैं अपना बेटा होता और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमा से आँखें चार होते ही निडरता से उसे अपनी बाँहों में ले लेता, किंतु बुरा हो बड़ी आयु की समझ-बूझ का, जिससे प्रेम के रंग पक्के तो हो जाते हैं किंतु जो इन पक्के रंगों से होली खेलने से रोकती भी है कि धोए न धुले तो रँगें कपड़ों पकड़े जाएँगे। काश मैं अपना बेटा होता और अपने कच्चे-पक्के रंगों से बेझिझक खूब होली खेलता।

(''क्या तुमने कभी किसी से प्रेम किया है ?'')

सीमा मुझसे पंद्रह-सोलह बरस छोटी है परंतु छोटे या बड़े हमारे आपसी भाव ही होते हैं। बाप और बेटी हो, भाई और बहन हो या प्रेमी और प्रेमिका हो, हर दो के भाव जब जन्म लें तो एक ही समय जन्म लेते हैं। उम्रें तो संबंधों की होती हैं, संबंधी छोटे-बड़े कैसे हो सकते हैं ?··· यदि सीमा भी मुझसे प्रेम करती है तो हम जहाँ भी हों, जैसे भी हों, हम दोनों के स्वस्थ और पुष्ट भाव न मालूम कहाँ—किंतु कहीं न कहीं—आलिंगन में बँधे होंगे और यूँ, एक रंग, एक आत्मा, हमउम्र हो गए होंगे।

मेरा एक परिचित है, भोपाली। सारी आयु कुँआरा रहा किंतु साठ के क़रीब पहुँचकर विवाह कर लिया और विवाह के बाद एक दिन बताने लगा—''मैं बहुत खुश हूँ साहू साहब। बुढ़ापा पूरा करके अब कहीं जवानी में क़दम रखने की नौबत आई है।''

''तो क्या हम लाठी टेक-टेककर भी जवानी में क़दम रखते हैं ?''

''साहू साहब, जवानी उस समय तक प्रतीक्षा करवाती है जब तक किसी से प्रेम न हो जाए। कोई बीसवें बरस में जवान होता है, कोई चालीसवें में और कोई सत्तरवें में। मैं बीस साल का था तो बहुत बूढ़ा हो चुका था, परंतु भगवान का शुक्र है कि आख़िर बुढ़ापे से मुक्ति प्राप्त हुई।''

(''क्या तुमने कभी किसी से प्रेम किया है साहू ?'')

हमारा भूमंडल जब जवान और तप्त था तो यहाँ जीवन संभव न था और फिर ज़रा बूढ़ा होकर ठंडा पड़ने लगा तो पूर्ण जीवन से भरकर जवान हो गया। उसके सृजनात्मक गुण उग-उगकर उसकी सतह से फूट पड़े और अपने आसपास उन्मत्त आँखों से देखते हुए वह चंद्र को अपना दिल दे बैठा—न मालूम धरती और चाँद का प्रेम कब शुरू हुआ··· अभी-अभी मुझे ग़लत विचार आया है कि आयुएँ संबंधितों की बजाय संबंधों से होती हैं··· संबंध भी बेउम्र होते हैं। धरती और चाँद के प्रेम का इतिहास प्रतिदिन आज से, अब से शुरू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता है और अब से शुरू होकर फिर अब से शुरू होता है, इसीलिए समुद्र में हर बार नए आवेग से ज्वारभाटा प्रकट होता है और आकाश में हर बार बादल यूँ उमड़ आते हैं मानो पहली बार आए हों। मैं भी सीमा से लाखों-करोड़ों, न जाने कितने वर्षों से प्रेम करता हूँ।

("तुमने कभी किसी से प्रेम किया है साहू ?")

हाँ किया है !

("किससे ?")

केवल तुमसे सीमा ! हमारा प्रेम इतना पुराना है कि उसकी कोई निशानी नहीं रही, इतना पुराना कि भूल-भूलकर बार-बार उसका नित नवीन एहसास होता है, जैसे मैंने अभी-अभी तुम्हें देखा हो और अभी-अभी पहली नज़र में ही तुम्हारे प्रेम में गिरफ़्तार हो गया हूँ। हमारे विश्व के समान मेरे प्रेम की भी उम्र वेहिसाब है। इसलिए मैंने तुम्हें हमेशा उसी क्षण बेतहाशा चाहा है जब चाहा है···

"क्या तुगने सचमुच कभी किसी से प्रेम नहीं किया साहू ?" सीमा को अभी तक अपना जवाब नहीं मिला था।

"नहीं सीमा।"

"आश्चर्य है !"

इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? शंकर ने उस दिन सीमा की सांत्वना के लिए उसे बताया—"हमारे साहू की स्वर्गीय पत्नी की कोख से जो बेटा पैदा हुआ वह इसलिए चाँद-सा है कि साहू ने उसे कर्तव्य समझकर पैदा किया।"

"बकवास बंद करो शंकर !"

"बकवास नहीं कर रहा हूँ मेरे दोस्त," शंकर ने मुझे जवाब दिया, "प्रेम से औलाद पैदा नहीं की जा सकती है। औलाद पैदा करना है तो अपना कर्तव्य पालन करो। महात्मा गाँधी ने कहा है कि··· "

"क्या बोर कर रहे हो !"

"नहीं, वड़ी ईमानदारी से अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूँ परंतु क्योंकि तुम स्त्री की सृजनात्मक योग्यता से वंचित हो इसलिए मेरे बच्चे की माँ नहीं बन सकते।"

सीमा हँसी से लोटपोट हो रही है, और मैं सोच रहा हूँ कि इसमें कोई संदेह नहीं। सीमा मुझे बहुत चाहती है परंतु यूँ जैसे कोई नवयुवती अपने बड़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाई को या वयोवृद्ध मित्र को। (तुम्हारी नई कहानी मुझे बहुत पसंद आई है साहू, तुम्हारी समझ इतनी पुरानी और पकी हुई है जितना इनसान का इतिहास। मैं तो सोचती हूँ कि तुम्हारे सामने कितनी मूर्ख हूँ और यह सोचकर तुम्हारे सामने मूर्खता की कोई बात करते हुए मुझे झिझक होती है⋯) परंतु शंकर के सामने वह बेझिझक मूर्ख-सी बन जाती है।

''शंकर, यदि तुम मेरे पति होते तो मैं तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार करती मानो तुम गधे हो।''

''मादाम, यदि मैं तुम्हारे साथ विवाह करने पर राजी हो जाता तो सचमुच किसी गधे से कम न होता।''

शंकर और सीमा विवाह करने का निर्णय न भी करें, उनके स्वभाव प्रायः अपना क्षणिक ब्याह रचा लेते हैं, शायद यह मेरी प्रौढ़ता का चिह्न है कि शंकर से सौतिया डाह की भावना महसूस करने की बजाय मुझे विचार आया है कि उन दोनों का विवाह हो जाए तो क्या ही अच्छा हो, खेल-खेल ही में अपने सारे जीवन का काम पूरा कर दें।

''बाबा⋯'' मैं दो घोड़े की गाड़ी पर बैठा हूँ कि जानवर हवा से बातें करने लगे हैं।

''तुम्हारे दोनों घोड़े बड़े कमाल के जानवर हैं।''

''एक घोड़ा है, माई बाप ! और एक घोड़ी। गाड़ी खींच-खींचकर दौड़ते हैं तो ऐसा लगता है कि बोझ खींचने की बजाय इश्क कर रहे हैं।''

''इश्क कर रहे हैं ?''

''हाँ माई बाप, मैं अपने नटखट बच्चों की रग-रग पहचानता हूँ, अभी-अभी कोई प्यारा झगड़ा शुरू करने के लिए खुसर-पुसर कर रहे थे⋯ अब यदि मैं उनकी लगामें ढीली छोड़ दूँ⋯ यह देखिए ज़रा-सी ढीली छोड़ दी है तो आकाश की ओर उड़ने लगे हैं। ज़रा और छोड़ूँ तो, माई बाप, बेक़ाबू हो जाएँ। पर एक बात बोलूँ—अव्वल तो झगड़-झगड़कर थकते नहीं और यदि थक जाते हैं, मैं उन्हें एक जगह खड़ा कर देता हूँ, तो एक बड़ी मुहब्बत से दूसरे को अचानक आँख मार देता है और दोनों मुसकराने लगते हैं और इसमें अपना चारा भी खाना भूल जाते हैं।''

''शंकर,'' शंकर मेरे साथ अकेला ही बैठा हुआ है, ''मेरी मानो और सीमा से विवाह कर लो।'' मुझे अपने-आपपर क्रोध आ रहा है कि मैं सीमा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के पिता का कर्तव्य निभा रहा हूँ।

"तुम मेरे मित्र हो, मेरे मित्र ! परंतु इसका अर्थ यह तो नहीं कि चुपचाप तुमसे एक्सप्लॉयट होता रहूँ।"

"एक्सप्लॉयट ? क्या मतलब ?"

"तुम वास्तव में यह चाहते हो साहू कि तुम्हारी यह बोझल इच्छा मैं अपने ऊपर लाद लूँ ? क्या तुमने मुझे बच्चा समझ रखा है कि मुझे इतना भी मालूम नहीं ?··· तुम सीमा को चाहते हो··· "

—द डैविल इनकारनेट। मेरे बारे में वह, वो सब जानता है जिससे मैं भी शायद अनभिज्ञ हूँ।

"तुम कुँआरे हो शंकर, और मुझसे कई वर्ष छोटे हो।"

"मेरी इंसल्ट मत करो साहू, बौद्धिक दृष्टि से मैं तुमसे बहुत बड़ा हूँ और इसका प्रमाण यह है कि मुझे अपने कुँआरे रहने की पूरी ज़िम्मेदारी स्वीकार है, किंतु तुममें अपने दूसरे विवाह की इच्छा पूर्ण करने का साहस नहीं··· " उसने अपनी ख़ास शरारतभरी गंभीरता से मेरी ओर देखा है—"यदि तुममें उससे विवाह करने का साहस नहीं तो उसे केवल उस हद तक याद रखो कि जब चाहो भूल जाओ··· " और अब वह बड़े नटखट मूड में आ गया है—"बड़े मूर्ख हो साहू ! चलो मान लिया कि तुम्हारी इच्छा से मैंने सीमा से शादी कर ली, परंतु मेरी इच्छा पूरी होने से तुम्हारी कामना क्योंकर पूरी होगी ?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दस

हर मनुष्य को इसलिए अपनी आयु लंबी मालूम होती है कि उसे मालूम नहीं कि वह कब मर जाएगा, अगले क्षण, अगले वर्ष, दस वर्ष बाद या पचास वर्ष बाद। परंतु कोई लंबा या छोटा समय निश्चित हो तो उसके बीत जाने का खटका लगा रहता है।

सीमा के लौटने के दिन भी निकट आ रहे हैं। कोई दो वर्ष पहले न जाने वह कहाँ गई थी–थी भी या नहीं (वे नहीं होते जो होते है : होते वे हैं जिनका हमें पता चल गया हो)¨ इतनी बड़ी दुनिया है, किसे मालूम कौन हैं, कौन नहीं है¨ और फिर जब मैं उससे मिल लिया तो मुझे ऐसा लगा कि केवल वह ही वह है। सारी दुनिया केवल पृष्ठभूमि है और वह¨ और अब वह चली जाएगी तो उसे ढूँढ़ने के लिए मेरी आँखें सारी दुनिया पर टिकटिकी बाँध लेंगी, सारी दुनिया एक दृश्य बन जाएगी और उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते सारी सृष्टि मेरी समझ में आ जाएगी। भगवान के प्रेम को शायद इसीलिए ब्रह्मज्ञान कहते हैं। सीमा न जाने कहाँ होगी, किंतु जहाँ भी होगी मेरे पास ही होगी। उसे खोकर मुझे दोनों जहान मिल जाएँगे। यह अच्छा ही हुआ है कि वह जा रही है।

"शंकर, मैं चली जाऊँगी तो मुझे कभी याद करोगे ?" मुझे महसूस हो रहा है कि सीमा का प्रश्न शंकर की बजाय मुझे संबोधित है।

"नहीं," शंकर ने दोटूक कहा है, "मैं केवल उसी को याद रखता हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो मेरी दो आँखों के सामने हो।''

''जिसे तुम अपने सामने देख रहे होते हो मूर्ख, उसे याद रखने की नौवत ही कब आती है ?'' मैं वास्तव में सीमा से संबोधित हूँ। ''याद तो उसी की आती है जो ओझल हो जाए।''

''और आ-आके जब थक जाती है तो आना बंद कर देती है।'' शंकर ने मुझे टोका है—''और फिर जानते हो क्या होता है ? जिसे तुम याद कर-करके निढाल हो जाते हो उसका भूत तुम्हारे पास आना शुरू कर देता है··· न बाबा, मुझे भूतों की सोहबत बिल्कुल पसंद नहीं।''

शंकर ने सच कहा है, मुझे यही मालूम होता है कि सीमा को याद कर-करके मुझे सीमा के सिवा और कुछ न सूझेगा और फिर उसका भूत चुपके से इस द्वार से आ घुसेगा···

''साहू !''

''सीमा !'' मैं आँखें बंद करके उसे बरबस बाँहों में भर लूँगा—''सीमा ! सीमा··· सी··· !'' आँखें खोलूँगा तो मुझे पता चलेगा कि मैं मसहरी के लोहे के फ्रेम से सीना छील रहा हूँ, किंतु मुझे विश्वास होगा कि हो न हो वह सीमा का भूत ही था।

सीमा का भूत मुझे प्रतिदिन शाम के समय मिलने आया करेगा और··· और किसी शाम को अचानक वह स्वयं ही आ निकली तो मुझे यही लगेगा कि मेरे सामने उसका भूत ही खड़ा है।

''आज फिर तुम इतनी लेट क्यों आई सीमा ? देखो छह बजकर छह मिनट हो गए हैं··· छह मिनट··· छह दशक··· देखो तुम्हारी प्रतीक्षा करते-करते मैं इन छह मिनटों के अंदर बूढ़ा हो गया हूँ, मेरे बाल बर्फ हो गए हैं और मैं सोच रहा था कि मुझे किसकी प्रतीक्षा है, वह क्यों नहीं आ रहा है ? और इसी बीच तुम मेरे मस्तिष्क में चली आईं और मुझे मालूम हुआ कि यह तुम हो··· वास्तव में तुम ही हो ! मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा ही थी सीमा ! आओ, आओ सीमी !''

अरे ! सीमा तो सचमुच यहाँ मेरे सामने खड़ी है। ''आओ सीमा, कब आईं ?''

''पूरे पाँच मिनट से यहाँ तुम्हारे सामने खड़ी हूँ, एक बार तो तुमने मेरी ओर नज़र भी उठाई परंतु तुम्हारा दिमाग़ न जाने किसे देख रहा था··· ''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मेरा दिमाग़ भी तुम्हें देख रहा था सीमा और आँखें भी। किंतु मुझे लगा कि तुम्हें केवल मेरा दिमाग़ देख रहा है, तुम्हारी बजाय मेंर सामने मेरा ख़याल खड़ा है।"

सीमा की आँखें डबडबा आई हैं और वह धीरे से निकट आ रही है (अब ! ?) और बड़े बेचैन धैर्य से मेरा बायाँ हाथ अपने दायें हाथ में लेकर अपने गाल से लगा लिया है (अब ? !) और बड़ी उदास मुहब्बत से, अपनी डूबी-डूबी नज़रों से मेरी ओर देखने लगी है।

और मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि बादलों के शांत झुरमुट से मौसम ने अपनी साँस रोक ली है—सहसा बिजली कौंधेगी, गड़गड़ाहट शुरू हो जाएगी, घुटन टूट जाएगी और मूसलाधार वर्षा होने लगेगी, चारों ओर जल-ही-जल।

अपनी इस मस्त बेचैनी में चुपचाप बैठे रहना मुझे परिहासपूर्ण लग रहा है और मैंने समुद्र में छलाँग लगा दी है और समुद्र के निवासियों की घूरती हुई आँखों को उपेक्षित करके मैं तैरने लगा हूँ¨ शायद थोड़ा-सा पीछा करके वे कहीं गहरे पानियों में अदृश्य हो गए हैं और मैं आगे-ही-आगे तैरता चला जा रहा हूँ और उसी एक क्षण में हज़ारों मील पार करके अपनी नई दुनिया के किनारे आ लगा हूँ और बड़ा खुश हूँ कि आख़िर मैंने नई दुनिया पा ली है, किंतु¨ !

"आज शाम की गाड़ी से मैं यहाँ से जा रही हूँ साहू !"

मैंने मुसकराकर—या शायद नहीं मुसकराया हूँ—अपना सिर हिलाया है¨

समुद्र इसीलिए इतना गहरा होता है कि सारे का सारा अपने अंदर ही अंदर होता है। मैं अपने-आपको समझा रहा हूँ कि समुद्र के समान गहरे प्रेम का अस्तित्व भी अपने बाहर नहीं, अपने अंदर ही अंदर होता है—सीमा के यहाँ, वहाँ या कहीं भी होने से क्या होता है ?

"तुमसे दूर जाकर मैं बहुत उदास हो जाऊँगी साहू, किंतु मेरी आँखें तुम्हारी कहानियों के अक्षरों को छू-छूकर पढ़ा करेंगी तो¨ "

आत्मप्रवंचना ! मैं अपनी कहानी हूँ या स्वयं आप ? झूठमूठ हूँ या सचमुच ? मुझे क्या पता, मेरी कहानी के अक्षर को कहाँ-कहाँ किस-किसकी आँखें छूती रहती हैं। मुझे तो यही पता है कि मैं यहीं रह जाऊँगा और सीमा पता नहीं कहाँ चली जाएगी¨ समुद्र अपने अंदर-ही-अंदर रह जाता है और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाज़ ज़रा-का-ज़रा रुककर कहीं दूर जाने का निश्चय कर लेते हैं और समुद्र अपनी सतह को ख़ाली-ख़ाली पाकर अपनी ही गहराइयों में डूब जाता है, डूबा पड़ा रहता है।

"साहू !"

मैंने उसकी ओर देखा—

"मुझे हर जगह तुम्हारी उपस्थिति का एहसास रहेगा साहू !"

नहीं ! सीमा को मैंने इस तरह खोज लिया है जैसे कोई जोगी सच्चाई को खोज लेता है। सच्चाई झूठ नहीं बोल सकती। समुद्र हमेशा जहाज़ के साथ रहता है। सीमा जहाँ भी होगी, मैं उसके साथ-साथ रहूँगा। मैं अपनी मँझधार-सोचों में डूबा रहा तो मुझे मालूम न होगा कि वह मेरे किस किनारे पर जाकर लंगर डाल देगी··· अपने प्रेम के कारण मुझे अब अंदर से, मँझधार से निकलकर चार खूँट दृष्टि रखनी है, दूर विस्तृत किनारों तक देखते चले जाना है, वरना मेरी सच्चाई मुझसे छिन जाएगी, मैं अभौगोलिक होकर अपने चिह्न से भी वंचित हो जाऊँगा···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्यारह

कोई डेढ़ घंटे में सीमा की गाड़ी छूटनेवाली है।—

मैं सोच रहा हूँ कि उठूँ और चाय पीकर कपड़े बदल लूँ। सीमा को विदा करने मुझे स्टेशन पहुँचना है।

"महबूबी !" मैंने आवाज़ दी है, "चाय लाओ महबूबी !"

मेरी स्वर्गवासी पत्नी महबूबी को दहेज में लाई थी—

"मेरी माँ ने महबूबी को मेरे साथ भेज दिया है, हम दोनों के लिए।"

"किंतु मेरे लिए तो तुम ही एक काफी हो शांता।"

"शर्म नहीं आती ?"

"चलो आ गई। परंतु इसे साथ लाने की क्या ज़रूरत थी ?"

"मान लो मैं मर जाऊँ साहू, तो फिर··· ?"

"तो फिर क्या मैं तुम्हारी महबूबी से विवाह कर लूँगा ?"

"मैं चाहती हूँ साहू, कम-से-कम तुम्हें मेरी मर्ज़ी का खाना तो मिलता रहे।"

शांता की मृत्यु के बाद मुझे सचमुच यही लगा कि मेरी दो-तिहाई पत्नी मरी है और एक-तिहाई महबूबी में ज़िंदा रह गई है।

महबूबी के संबंध से मेरी एक-तिहाई पत्नी का मुहावरा शंकर के मस्तिष्क की उपज है।

"महबूबी··· " वह उसका पकाया हुआ खाना खूब जी-भर खा लेता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है तो अपनी पसंद और उसकी प्रशंसा को व्यक्त करने के लिए कहता है, ''यदि तुम साहू की बजाय मेरे पिता की एक-तिहाई पत्नी होती तो वे भी मेरे समान शादी करने से दोटूक इनकार कर देते¨ ''

''तो फिर तुम कैसे पैदा होते ?''

''जैसे तुम हो गए हो। क्या तुम्हें विश्वास है कि वैध या अवैध संतान केवल इस पर निर्भर है कि सौ-पचास आदमियों के सामने कोई व्यक्ति उच्च स्वर में किसी नारी के साथ रहने की शपथ ले ले ?''

महबूबी चाय ले आई है।

''अजय बेटा की कोई चिट्ठी आई है बाबू ?''

अरे हाँ, कल मेरे बेटे की दिसंबर की छुट्टियाँ शुरू हो गई होंगी—सीमा के जाने के ख़याल में मैं अजय को भूल ही गया। पर अजय की चिट्ठी क्यों नहीं आई ?

''हा—ई—ई—डैड—डै— !''

वही—

''अजय बेटा।''

मैं और महबूबी दरवाज़े की ओर लपके हैं (सीमा जा रही है¨)—

''अजय, तुमने चिट्ठी क्यों नहीं लिखी ?''

मैंने उसे ज़ोर से भींच लिया है मानो उसे नए सिरे से अपनी हड्डियों और खून में जज़्ब कर लेना चाहता हूँ। परंतु वह मुझसे अधिक बलवान निकल आया है। मुझे लग रहा है कि अबके तीन-चार महीनों में वह अचानक लड़के से मर्द बन आया है और अब जबकि हम दोनों एक-दूसरे से सीने से सीना लगाये खड़े हैं तो मेरा अस्तित्त्व उसमें जज़्ब हो रहा है।

(सीमा आज जा रही है¨)

''बोलो, तुमने अपने आने की चिट्ठी क्यों नहीं लिखी ?''

''बस यों ही, डैडी¨ ''

अपने बेटे से कई बातों के उत्तर सुनकर मुझे लगता है कि अब मेरे चिंतन की अधिकांश समस्याएँ अनावश्यक हो चुकी हैं¨

''तुम्हारी दिल्ली का क्या हाल है ?'' अजय दिल्ली में पढ़ रहा है।

''हमारी दिल्ली¨ दिल्ली अभी यथावत् आपकी ही जैनरेशन के क़ब्ज़े में है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाहजहान ने बड़े प्यार से औरंगज़ेब की ओर देखा है मानो बेचैन है, परंतु बच्चा है। अपनी आयु से पहले कैसे बड़ा हो सकता है ?

"अम्मा⋯ " अजय महबूबी को अम्मा ही कहा करता है, "तुमने मुझे अभी तक गले क्यों नहीं लगाया ?" महबूबी एक ओर खड़ी अजय के चेहरे पर टकटकी बाँधे खुशी से काँप-सी रही है–"आओ अम्मा !" उसने स्वयं ही बढ़कर महबूबी को बाँहों में ले लिया है।

"अरे !" मुझे याद आ गया है कि सीमा जा रही है–"जल्दी करो अजय, मुँह-हाथ धोकर जल्दी से चाय पी लो, हमें स्टेशन जाना है।"

"परंतु मैं तो आ गया हूँ डैडी।"

"किंतु सीमा जा रही है बेटे।"

"कहाँ ?" वह चौंक पड़ा है।

"अपने घर, और कहाँ ?" उसका चौंकना न जाने मुझे क्यों बुरा-सा लगा है–"जल्दी करो।"

अजय मेरी हड़बड़ी बड़े आनंद से देखते हुए मुसकराने लगा है।

"असीमा का थीसिस पूरा हो चुका है डैडी ?"

("अजय बेटा," मैंने उससे पिछली बार कहा था, "सीमा का नाम लेकर नहीं बुलाया करो।"

"किंतु मैं तो असीमा कहता हूँ, उसका नाम कहाँ लेता हूँ ?"

"वह तुमसे बड़ी है।"

"नहीं डैडी, मुझे तो वह अपने से कई वर्ष छोटी मालूम होती है।")

"असीमा चली गई डैडी तो शंकर चचा किसे गाइड करेंगे ?⋯ अपने-आपको ?" वह हँसने लगा है, "सच्च डैडी, शंकर चचा को चाहिए अब रिसर्च स्कॉलरों को छोड़कर अपने-आपको गाइड करें।"

"चलो जल्दी तैयार हो जाओ, शंकर भी वहाँ स्टेशन पर मिल जाएगा।"

"मैं तो तैयार ही हूँ, जितनी जल्दी आप जाना चाहते हैं उसी तेज़ी से आप तैयार हो जाइए।"

उसने अपना सूटकेस और बिस्तर उठाकर पूछा है, "मेरा कमरा खुला है या ताला लगा हुआ है ?"

"मैं खोल आई हूँ बेटे।"

"थैंक यू, अम्मा डार्लिंग।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं जल्दी से तैयार होने लगा हूँ ! थोड़ी ही देर में अजय बाहर से नूर कोचवान को लेकर आया है। मैं कमीज़ पहन रहा हूँ और पहनकर देखता हूँ उसके ऊपर के बटन टूटे हुए हैं और उसे उतारते हुए मैंने अपने-आपको इस तरह डाँटा है जैसे अजय की माँ डाँटा करती थी—"कहीं जाना हो साहू तो तुम्हें बच्चों की तरह तैयार करना पड़ता है।"

मैंने अपने-आपको तैयार करने के लिए कपड़ों की अलमारी में मुँह लटका लिया है। जबसे शांता मरी है, मैं खुद ही अपनी पत्नी बनकर अपने-आपको पुचकार-पुचकारकर तैयार कर लेना चाहता हूँ पर मुझे अपने-आपको पुचकारना नहीं आता—"चलो नखरे छोड़ो और जल्दी तैयार हो जाओ… और नहीं होना है तो न हो… " अपने-आपसे अन्याय बरत-बरतकर मैं सैल्फ़-पिटी का शिकार हो जाता हूँ और मेरा जी चाहने लगता है कि अपने नगर के सारे अनाथ बच्चों की देखभाल स्वीकार कर लूँ।

"चलो जल्दी करो।"

मैंने अपने-आपको धमकी दी है कि इतनी तेज़ी करोगे तो सबकुछ छोड़-छाड़के बैठ जाओगे।

"बैठ जाओ, मेरा सिर क्यों खाते हो ?… मैं तुम्हारा क्या लगता हूँ ?"

हाँ, जब मेरी पत्नी ही नहीं रही तो मेरा अपने-आपसे क्या संबंध ? अरे ! मैं अपना समय क्यों नष्ट कर रहा हूँ… मैंने जल्दी-जल्दी कोई दूसरी कमीज़ पहन ली है—हाँ इसके बटन ठीक हैं… मैंने खुशी से कोई दुखभरा शे'र गुनगुनाना शुरू कर दिया है और कुर्सी पर बैठकर मोज़े पहनने के लिए झुक गया हूँ, इसके बाद जल्दी-जल्दी जूते पहनना शुरू कर दूँगा। तस्मे बाँधते हुए ज़रा सतर्कता से काम लूँगा, पहले ही टूट-टूटकर उँगली-भर रह गए हैं… और फिर… फिर… और मुझे क्या करना है… और क्या करना है ? जो करना था सो हो गया, जाओ अब मज़े से स्टेशन पर पहुँचकर सीमा को विदा कर आओ… मेरी आँखें रो देना चाहती हैं और मैं बड़ा खुश हूँ। आज मेरा बेटा घर आया है (सीमा जा रही है !) मैं यथापूर्व खुशी-खुशी वही दुखभरा शे'र गुनगुनाए जा रहा हूँ और मुझे पता नहीं चल रहा है कि मैं क्या गा रहा हूँ या गा भी रहा हूँ कि नहीं… और तैयार होकर बाहर ताँगे के पास आ खड़ा हुआ हूँ—"चलो भई।"

"अस्सलाम-अलैकुम !" कोचवान ने मानो मुझसे कहा है कि आप बोलने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का कष्ट न करें, आपके बेटे ने मुझे बता दिया है कहाँ जाना है, जल्दी से पिछली सीट पर बैठ जाइए।

"चल बेटे !" नूर बाबा ने लगाम को झटका देकर ढीला छोड़ दिया है।

नूर बाबा का जानवर गति में आ गया है, फिर दौड़ने लगा है, फिर उसकी दौड़ में एक रिद्म-सी पैदा हो गई है और फिर यह रिद्म गहरी होने लगी है। रास्ता साफ है, घोड़ा दौड़ रहा है। रिद्म और गहरी होती जा रही है।

"बाबा, तुम बनारस के अदंर-ही-अंदर रहते हो," अजय ने नूर बाबा से पूछा है, "कभी यह भी ख़याल आया है कि अपना ताँगा लेकर बनारस से कहीं बाहर, कहीं दूर निकल जाओ ?"

"यह दुष्ट काम तो रेलगाड़ियों का है अजय कक्का¨ चल बेटे !¨ हम तो आदमी के खून के माफिक बदन के अंदर-ही-अंदर घूमते फिरते हैं¨ चल बेटे !¨ तुम ही बताओ कक्का, जो खून शरीर से बाहर निकल गया वह किस काम का ?"

"सीमा¨ !¨ !"

मेरा मुँह तो बंद है, फिर मुझे अपनी यह आवाज़ क्योंकर सुनाई दी है ?

"चल बेटे¨ !"

"नहीं बाबा, खून को बोतलों में भी सुरक्षित कर लिया जाता है।"

ताँगा शहर की किसी गुंजान सड़क पर मुड़ गया है, इसलिए बाबा ने अजय की बात पर ध्यान नहीं दिया है। इस मेन रोड पर जगह-जगह पर कई छोटी-छोटी सड़कें, गलियाँ और रास्ते बिछे हुए हैं, और जीवन हर रास्ते पर एक ही समय इस प्रकार गतिशील है जैसे हमारी रगों में खून और जिसे जिधर जाना है स्वयं उधर ही उतर रहा है क्योंकि उसे वहीं पहुँचना है। उसके किसी और रुख को अपनाने या रुक जाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। निर्धारित लक्ष्य ही जीवन का उद्देश्य है। इस मेन रोड से एक तंग रास्ते पर उतरकर मुझे लगा है कि मेरा खून मस्तिष्क की ओर मुड़ गया है। यह रास्ता सीधा स्टेशन पर ला खड़ा करता है। यहाँ बहुत भीड़ है। नूर बाबा के जानवर की गति टूट चुकी है और टूटकर अब ऐसी हो गई है जैसे खड़ी हो¨ अब और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धीरे··· अब ज़रा खुली राह मिली है तो अचानक तेज़··· अब फिर भीड़ ने आ लिया है··· वह स्टेशन का गेट नज़र आ रहा है··· वहाँ तक भीड़-ही-भीड़ है··· नूर बाबा का जानवर लगाम की अटूट खींच-ढील से हाँप रहा है, इस हालत में गति में रिद्म कहाँ ?

"चल बेटे !"

और हम स्टेशन आ पहुँचे हैं··· (तो सीमा जा रही है··· !)

"क्या कोई अज़ीज़ आ रहा है बाबूजी ?" नूर बाबा ने किराया पाकर मुझसे पूछा है !

"नहीं, जा रहा है !"

"फी अमान अल्लाह !" बाबा को अपनी ज़बान में ठीक से बोलना नहीं आता परंतु ईमान का कितना प्यारा है !

अजय और मैं तेज़-तेज़ डग भरते हुए रेलवे प्लेटफॉर्म पर जा पहुँचे हैं और बौखलाई-सी निगाहें पीछे दौड़-दौड़कर सीमा को ढूँढ़ने लगी हैं और अचानक किसी बँधी निगाह से टकराकर प्लेटफ़ॉर्म के नीचे रेलवे लाइन पर गिरने से बड़ी मुश्किल से बची हैं।

"वह है !"

सीमा की आँखों ने न मालूम मुझे क्या कहा है और मेरी आँखों ने न मालूम उसे क्या जवाब दिया है और मेरा बेटा पीछे से मेरे आगे आ गया है और उसे देखकर सीमा की आँखों में खुशी की लहर दौड़ गई है मानो उसने क्षण-भर के लिए मेरी बेचैन सुंदर जवानी को मेरे आगे-आगे चलता हुआ देख लिया हो।

"अ-सीमा !"

"ओ··· ओ··· तुम ?"

और क्या मैं ?—मैंने दिल ही दिल में उसको उत्तर दिया है।

अजय और सीमा ने एक-दूसरे के हाथ थाम लिए हैं—"तुम तो पूरे मर्द निकल आए हो अजय !"

"तो क्या तुम समझती थीं कि लड़के से मैं पूरी स्त्री बन जाऊँगा ?"

दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े हैं।

और मुझे ख़याल आया है कि मैं यह रोल अदा करने के लिए वहाँ खड़ा हूँ कि दोनों पर अपने आशीर्वाद की वर्षा आरंभ कर दूँ—खुश रहो, हरे-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भरे रहो, सुरक्षित रहो ! तुम्हारा हर संकट मुझ पर टूट पड़े !··· मेरा बाहरी तेज देखते-देखते मंद पड़ गया है।

"तुम्हारा चेहरा क्यों उतरा हुआ है साहू ?" सीमा को शायद अचानक मालूम हुआ है कि मैं अपना बेटा नहीं, खुद आप हूँ।

"हैलो, शंकर चचा !" अजय शंकर को इधर आते देखकर उसकी ओर ध्यान देता है।

"तुम कब आए शैतान के बच्चे ?" शंकर ने मेरी ओर देखकर अजय से कहा है, "एक बाप है जो अपने सारे शब्दों को फ़िक्शन में नष्ट कर देता है और एक बेटा है जिसने अपनी सारी भाषा, विज्ञान के लिए समर्पित कर रखी है। कोई चिट्ठी-विट्ठी ही लिख दी होती।"

"आपके लिए मेरे मुँह की भाषा ही काफ़ी है चचा। लिखी हुई भाषा को समझने की चेष्टा से आपके दिमाग़ पर जोर पड़ेगा।"

"अजय अभी इतना छोटा है साहू," सीमा मेरे पास आ गई है, "किंतु कितना बड़ा लग रहा है, और जितना बड़ा लगता है उससे भी बड़ी बातें करता है।"

"आख़िर तुम्हारे जाने का समय आ ही गया सीमा !"

"चले जाने से क्या होता है साहू ! बस आना-जाना बना रहे, सो वह बना ही रहेगा।"

हमारी दायीं ओर गाड़ी दम साधे खड़ी है और प्रतीक्षा में है कि सीटी सुनाई दे और वह भाग निकले। जहाँ यह गाड़ी जा रही है वहाँ प्रतिदिन जाती है और वहाँ से आती भी है··· सीमा ने ठीक कहा है कि आना-जाना बना रहे तो काफ़ी है। हर दम तो आदमी केवल अपने साथ ही रहता है—दूसरों से कभी-कभार मिल लिया, दो बातें कर लीं, पिछली मुलाक़ातों को ज़रा-सा दोहराकर खुश हो लिए, बस काफ़ी है··· अब यह गाड़ी जा क्यों नहीं रही है ? इसे जाना तो है ही, बस जाए ताकि हम भी जाएँ··· गाड़ी वैसे ही खड़ी है और मैं महसूस कर रहा हूँ कि खड़ी-खड़ी चल पड़ी है। मगर सीमा तो यहाँ खड़ी है··· नहीं, वहाँ खड़ी है, चलती हुई गाड़ी की खिड़की में झुकी हुई है और हमारी ओर देख-देखकर अपना रुमाल हिला रही है··· असली सीमा कौन है ? वह जो जा रही है, या यह जो जाने से रह गई है···

मैं और शंकर, अजय और सीमा बातें कर रहे हैं और मेरी समझ में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं आ रहा है कि हम क्या बातें कर रहे हैं··· और गाड़ी जा रही है··· मैं बहुत खुश हूँ कि मेरा बेटा आ गया है··· सीमा जा रही है··· किंतु सीमा को तो हर हाल में जाना ही था··· मैं सिर झुकाकर सीमा और शंकर और अजय की तरफ ध्यान देने की कोशिश करता हूँ।

"शंकर चचा, असीमा तो जा रही है, अब आप किसे गाइड करेंगे ?"

"कोई और सीमा आ जाएगी बेटे !"

"तो फिर आप स्वयं को कब गाइड करेंगे चचा, अपने लिए भी अपने-आपका लाभ उठाइए।"

"नहीं," सीमा बोली है, "शंकर इतना पढ़ा-लिखा है कि उसे अपने कमतर 'आप' से कोई लाभ पहुँच ही नहीं सकता।"

··· यह लड़की शंकर की शिष्या है या उसकी गुरु ?

"शंकर चचा, क्या आप सचमुच अपने-आपसे कमतर हैं ?"

वे सब हँस रहे हैं।

जो भी दो-चार मिनट रह गए हैं, हँस लो, बस दो-चार मिनट की तो बात है। मैं भी हँसने लगा हूँ और हँसते-हँसते डर-सा गया हूँ कि मेरा रोना न निकल जाए।

और गाड़ी खड़ी-खड़ी फिर चल पड़ी है।

गार्ड की सीटी की आवाज़ सुनाई दी है।

"चीअर अप, ओल्ड बॉय !" सीमा की मरमरी आवाज़ मेरे कानों में उतर रही है, "चीअर अप !"

सीमा वह है जो चलती हुई गाड़ी की खिड़की पर लटकी हुई है, या यह जो मेरे साथ रह गई है ?

गाड़ी प्लेटफ़ार्म से बाहर निकल रही है··· और आगे बढ़ गई है··· और आगे बढ़कर कहीं दायीं ओर मुड़ गई है··· गाड़ी चली गई है !

"आओ डैड, चलें अब ! शंकर चचा वहाँ गेट पर भी जा पहुँचे हैं।"

सीमा चली गई है !

मैं अपने जिस पात्र को भी शब्दबद्ध करके कहानी समाप्त कर लेता हूँ, वह चला जाता है। क्या मुझसे विदा होकर मेरे पात्रों को मेरी पीड़ा का बोध होता है ?

मैं खुश हूँ कि मेरा बेटा आज वापिस आ गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारह

(यह कौन है जो मेरे सामने खड़ी है ?)

मैं सारी दुनिया को अच्छी तरह जानता हूँ। सारी दुनिया मेरे लिए अजनवी है। यह लाखों-करोड़ों लोग, लाखों-करोड़ों टिमटिमाते सितारे, अँधेरे में चमकती हुई यह शांत रात्रि, यह मौन वार्तालाप, जीवन से संपर्क¨ बिस्तर पर टेक लगाते ही जीवन अपनी आँखें खोल लेता है और सारा विश्व परिचित मालूम होने लगता है, किंतु सूर्य का आक्रमण होते ही संपर्क के पुल टूट जाते हैं, ठहरा-ठहरा वार्तालाप दिन के कोलाहल में डूबने लगता हैं, सितारे चुँधिया देनेवाले प्रकाश में खो-खोकर ओझल हो जाते हैं, कोई किसी को दिखाई नहीं देता, और जो दिखाई देता है वह अजनबी मालूम होता है।

(यह कौन है जो मेरे सामने खड़ी है ?)

मैं सीमा को भूला नहीं हूँ परंतु उसके बारे में सोच-सोचकर मुझे लगता है कि वह मेरा एक ख़याल है और बस¨ और ख़याल अरूप होते हैं¨ सीमा का रूप शायद मेरे मस्तिष्क से निकलता जा रहा है, यद्यपि वह मेरे साये की तरह हर दम मेरे साथ रहती है। मेरे आगे-पीछे, दायें, या बायें, यहीं कहीं, किंतु न जने कहाँ¨

सीमा !

और मैंने मानो अपने-आपको उत्तर देने के लिए दोहराया है—सीमा !

जब हम इतनी तीव्रता से किसी को याद करते हैं तो क्या वह जहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी हो वहीं रुककर अनायास होंठ हिला देता है—"हाँ !" और आश्चर्य से आसपास देखने लगता है ?

"क्या आपने मुझे बुलाया है पप्पा ?"

"नहीं बेटी¨ "

"तो क्या आपने बुलाया है मम्मी ?"

"नहीं सीमा !"

"तो मुझे किसने बुलाया है ?"

टेलीफ़ोन की घंटी बेतहाशा वजने लगती है। सीमा भागकर टेलीफ़ोन उठाती हैं—

"कौन ?¨ न जाने कौन है¨ पप्पा, लीजिए आपको बुला रहे हैं।"

किंतु सीमा को अचानक शरीर में टेलीफ़ोन की घंटी लगातार वज रही मालूम होने लगती है।

"हैलो !"

"हैलो, सीमा !"

"अरे !¨ सा-हू ! साहू तुम हो ?"

"हाँ, मैं, सीमा !"

(अव समझ में आया कौन बुला रहा था) "ज़रा ऊँचा बोलो साहू, मेरे मस्तिष्क में इतना शोर मच रहा है कि तुम्हारी आवाज़ का पता ही नहीं चलता¨ और साफ़ बोलो¨ तुमसे मिलकर हमेशा यही दुख रहा कि तुम कभी साफ़ और खुली आवाज़ में न वोले। यदि तुम सचमुच मुझसें प्रेम करते हो तो¨ तो झट से दो कदम आगे बढ़कर तुमने बरबस मुझे गले क्यों न लगा लिया ? मेरी यह कामना मेरे मन में ही रह गई कि तुम्हारी नज़र तुम्हारी आँखों से निकलकर तुम्हारी वाँहों में आ जाए और तुम्हारी वाँहें मुझे भींच लें¨ हैलो !¨ है-ल्-ल-ो¨ !"

टेलीफोन डैड हो गया है।

(मैं इस स्त्री को अच्छी तरह जानता हूँ, किंतु यह मुझे स्पष्ट दिखाई क्यों नहीं दें रही है¨ यह कौन हो सकती है ?¨ कौ-न ?)

"पोस्टमैन !"

"असीमा की चिट्ठी होगी डैडी¨ "

"तुम उसकी चिट्ठी की राह देख रहे थे अजय ?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं डैडी, मुझे कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं होती। जो भी आ जाए, मालूम होता है उसी की प्रतीक्षा थी··· "

वह दरवाज़े की तरफ़ मुड़ रहा है और मैं अपने-आपको बता रहा हूँ कि जवानी वास्तव में किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। जवानी के दोनों हाथ हर क्षण अनगिनत कामों से भरे रहते हैं। प्रतीक्षारत हम उस समय होते हैं जब ख़ाली हाथ होकर रह जाते हैं। मैंने एक नई कहानी लिखी है : एक व्यक्ति हर समय अपने काम में मग्न रहता हैं। उसके व्यस्त होने का यह हाल था कि उसे यह भी मालूम नहीं रहता वह क्या कर रहा है, बस धुन में करता रहता··· और फिर उसने चाहा कि करने से पहले सोच लिया करे। यह सोचकर वह सबकुछ छोड़-छाड़ विचारों की प्रतीक्षा में बैठ गया, बैठा रहा और अंत में जब विचारों की बारात ने उसके मस्तिष्क की ओर रुख किया तो उसमें इतनी भी शक्ति न रही थी कि अपने शरीर का बोझ उठाकर उनके स्वागत को ही खड़ा हो जाए··· और नए-नवेले व्यवस्थित विचार उसके सामने आ खड़े हुए थे और उन्हें पता नहीं चल रहा था कि कहाँ उतरें, एक कन्फ्यूज़न-सा पैदा हो गया था···

"चिट्ठी नहीं डैडी, मनीआर्डर है, यहाँ साइन कर दीजिए।"

किसी पत्रिका से मेरी कहानी का पारिश्रमिक आया था।

"ये पैसे मैं ही रख लेता हूँ डैडी। मुझे आरजी की वर्षगाँठ पर अलार्म पीस खरीदना है, ताकि उसके सपने दिन निकलते ही टूट जाया करें।"

आरजी अजय की एक भोली-भाली कामना की पूर्ति थी कि उसके भी बहन होती।

मेरा भी यही हाल है अजय। सूर्य सिर के ऊपर चढ़ आया है पर मैं अभी तक धूप में गहरे सपने देख रहा हूँ। मेरे लिए भी कोई अलार्मपीस लाओ, ऐसा अलार्मपीस कि जिससे क्षण-प्रतिक्षण की बजाए सारे-का-सारा टाइम एक समय बज उठे और मैं सोया-सोया अपनी आँखें खोल लूँ···

मैं अपनी आँखें खोल लूँगा तो मेरी आँखें सदा खुली रहेंगी, क्योंकि सारा समय एक ही समय बज रहा होगा, मेरी अटूट जागृति से जीवन मुझे अपने अंदर जज़्ब कर लेगा, मैं अपने विवेक से एकरूप हो जाऊँगा और सपनों से बच जाऊँगा··· मैं सो रहा हूँ बेटा, ज़रा झटककर मुझे जगा दो, नींद मुझे डिस्टर्ब कर रही है। मेरी आँखें खोल दो···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(यह कौन है, यदि मैं जाग रहा हूँ तो साफ़ नज़र क्यों नहीं आती ?)

जो कुछ मुझे जागते में नज़र आता है वह सपने में दिखाई देता महसूस होता है। और जो कुछ सपने में, वह जागते में··· मैं जाग रहा हूँ न सो रहा हूँ, इसलिए मैं अपने कर्मों का उत्तरदायी नहीं हूँ। मुझे सीमा से प्रेम है। मैं सीमा को भूल जाना चाहता हूँ, अपने कर्मों का उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहता हूँ।

''हे-हे-हा··· '' शंकर के हल्के-फुल्के कहकहे इस प्रकार तेज़ दौड़ते हैं मानो ज़रा-सा दौड़कर औंधे मुँह गिर पड़ेंगे—''साहू, न मैं अपने कर्म से जन्मा और न मैं अपने कर्म से अपनी मृत्यु को रोक सकता हूँ, अपने होने या न होने में मेरी इच्छा को अधिकार नहीं तो मैं अपनी छोटी-छोटी दैनिक इच्छाओं की जिम्मेदारी क्यों स्वीकार करूँ ?''

''क्योंकि वे इच्छाएँ तुम्हारी हैं, मेरी या किसी और की नहीं।''

''नहीं मेरे दोस्त, वही इच्छाएँ भूख के समान सबको लगती हैं, किंतु जो भूखे रह जाते हैं वे अपनी ही इच्छाओं का आरोप उन पर लाद देते हैं जो अपनी भूख मिटा चुके हों। कौन उत्तरदायी और कौन अनुत्तरदायी ? हर पूर्ण जीवन की निर्भरता इस पर है कि बिना-झिझक दिल की आवाज़ के पीछे-पीछे हो लिया करें।''

''किंतु दिल में शोर ही शोर मच रहा हो तो उसकी आवाज़ कैसे सुनाई दे ?''

''इस तरह कि लाठी लेकर दिल में घुस जाओ, शोर की क्या मज़ाल कि बंद न हो। शोर भी बंद हो जाएगा और सारी बात भी समझ में आ जाएगी।''

(बात यह है कि यह स्त्री मेरे सामने उपस्थित नहीं··· यह शरीर मेरे मस्तिष्क से पैदा होकर हवा में बन गया है और क्योंकि सृजन में मैं इतना शक्तिशाली नहीं, इसलिए इसके अस्तित्व के कुछ चिह्न मेरे मस्तिष्क में ही रह गए हैं और···)

और शंकर ने मुझे बताया है कि उसे सीमा का पत्र मिला है : शंकर माई डीयर, मेरा विवाह हो रहा है। मेरा भावी पति एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक है। यदि वह बड़ा वैज्ञानिक न होता तो हमारे साहू के समान एक बड़ा कहानीकार होता। जैसे साहू पॉप्युलर झूठ की नाप-तोल करके उसकी सच्चाई पर नज़र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रखता है, वैसे दिलीप का काम पॉप्युलर सच्चाई के झूठ को भाँपना है—तुमसे पहले मैं यह पत्र साहू को लिखना चाह रही थी पर ऐन वक़्त पर तुमसे संबोधित हो रही हूँ, अब तुम ही उसे बता दो। उसी के प्रेम ने महानता को पहली बार मेरी सपाट-सी राह पर डाला था, उसे अपनी राह से हटाना मेरे बस की बात नहीं, सो मैंने उससे विवाह कर लेने का निर्णय कर लिया है। दिलीप बहुत अच्छा है। मैं चाहती हूँ कि हम दोनों विवाह के बाद तुम लोगों से मिलने आएँ··· विवाह के बाद ? विवाह के बाद क्या होता है शंकर ? किंतु तुम्हें क्या पता ? तुमसे तो मुझे ही ज़्यादा पता होगा कि मैंने विवाह की चाप को महसूस करना शुरू कर दिया है, किंतु तुम्हारे आसपास तो क्या, दूर-दूर भी विवाह का चिह्न तक नहीं···

(मेरे सामने हवा में बनी हुई स्त्री का अपूर्ण और धुँधला ख़ाका और धुँधला हो रहा है।)

शंकर डीयर, आखिर तुम्हें विवाह से इतनी चिढ़ क्यों है ? या शायद तुम्हें अपने व्यक्तित्त्व के उस रूप से डर लगता है जिससे विवाह के बाद तुम एक से दो हो जाओगे। बड़े डरपोक हो··· साहू भी डरपोक है···

(उस धुँधली स्त्री का अस्तित्त्व और बटकर और अस्पष्ट हो गया है। एक—नहीं, दो आधे, तीन तिहाई, चार चौथाई : एक चौथाई मेरे मस्तिष्क में··· मैं अपने मस्तिष्क की चीरफाड़ कैसे करूँ ?··· दो चौथाई वह अजनबी वैज्ञानिक, जिससे मैं कभी मिला भी नहीं, और एक चौथाई, यह धुँधला ख़ाक़ा जिसका ओरिजिनल कहीं सैंकड़ों मील दूर न जाने कहाँ है—इस धुँधलाहट को पहलू में कैसे लिटाऊँ ? इसका सिर कहाँ है ? पैर··· ? और··· ?)

मैं अपनी कहानी पढ़ रहा हूँ और मेरे सामने बीसियों लोग बैठे हैं और मेरे मस्तिष्क में एक चौथाई सीमा··· और मुझे अपनी कहानी का सिर-पैर दिखाई नहीं दे रहा है और लोग वाह-वाह कर रहे हैं और मेरे मस्तिष्क में एक चौथाई धुँधलाहट कहानी पर कान धरे हुए है··· नाक की परछाईं में दो दहकते हुए अधखिले होंठ, मैं इन्हें चूम लेना चाहता हूँ परंतु मेरी चाह बट रही है। होंठों को चूमने का फैसला करके मैं उन्हें चूमना भूल गया हूँ। मैं अपने प्रेम को भूलता-सा जा रहा हूँ और मेरे दिल में दर्द उठ रहा है, उठते-उठते आधा उठकर वहीं रुक गया है।··· वाह ! क्या सुंदर कहानी है ! मैंने मुसकराकर धन्यवाद किया है।··· मेरा दर्द बैठता है न पूरा उठता है, बस अटककर रह गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरह

हर सुबह आँख खोलते ही मेरे सामने एक ही फ्लैश में अपना सारा बीता हुआ जीवन आ जाता है और उसके बाद मैं इस योग्य होता हूँ कि अगले क्षणों का जीवन जीना शुरू करूँ''' और मेरा विचार है कि जब मैंने पहली बार दुनिया में आँख खोली होगी तो मुझे अपना सारे-का-सारा विगत जीवन यों ही एक फ्लैश में दिखाई दिया होगा, और इसी तरह हर जीवन में शुरू में मैंने अपने विगत जीवन को एक ही क्षण में जी लिया होगा। यही कारण है कि मैं अपने-आपसे इतना परिचित हूँ।

मैं प्राचीन काल का जीव हूँ और आदिकाल से मौजूद हूँ और आदिकाल से वर्तमान तक एक बार भी, एक पल के लिए भी कभी अपने-आपसे अलग नहीं हुआ हूँ।

मेरी बात नाहक उलझ गई है। कहना मैं वास्तव में यह चाहता हूँ कि सीमा मेरे व्यक्तित्त्व का कोई महत्त्वपूर्ण पहलू अपने साथ ले गई है।

मेरे घर का फ्यूज़ अचानक उड़ गया है और मैं अकेला बैठा हुआ हूँ और सोच रहा हूँ कि मेरा भी कहीं अपने-आपसे कांटैक्ट ढीला पड़ गया है, इसी कारण मैंने निरंतर जलने की बजाय जलना-बुझना शुरू कर दिया है। मुझे अपनी सारी वायरिंग को बड़े ध्यान से रि-चैक करना चाहिए''' बड़ा बारीक काम है, किंतु मुझे यह करना ही होगा वरना मैं वह का वह न रहूँगा और बदल-बदलकर अपने-आपसे जुदा होना शुरू हो जाऊँगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं अँधेरे में अपनी तार-तार खोल रहा हूँ। बाहर से सबकुछ अपनी जगह सैट मालूम होता है। शिकायत के कोई कारण दिखाई नहीं दे रहे हैं··· तो फिर मैं जलते-जलते अचानक बुझ क्यों जाता हूँ ?··· सीमा !··· वह मेरा क्या है जो सीमा अपने साथ ले गई है··· मुझे··· मुझे सीमा से एक बार मिलना चाहिए···

मैं अँधेरे में अकेला बैठा हूँ और उन घटनाओं की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जो आ के जा भी चुकी हैं। मुझे प्रतीक्षा से बेचैनी हो रही है। मुझे सीमा से एक बार ज़रूर मिलना चाहिए··· शायद··· शायद मैं जगमगाने लगूँ···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौदह

साहू की आँखें कितनी बड़ी-बड़ी मालूम होती हैं। इतने दिनों बाद उससे मिलकर मुझे मालूम हुआ है कि मैं उसकी आँखों में··· इस सजे-सजाए ड्राइंग रूम में आ बैठी हूँ।

"हम पूरे एक वर्ष चार महीने बाद मिल रहे हैं साहू !"

"हाँ, सीमा।"

"इस बीच तुम्हें अपनी कहानियों से कब फुरसत मिलती होगी ?"

"क्या करने की फुरसत ?"

"मेरे बारे में सोचने की," मैं हँस रही हूँ कि साहू क्या उत्तर देगा—मैं हर समय तुम्हारे ही बारे में सोचता रहता था !··· !··· या—हाँ सीमा, कहानी लिखते हुए मुझे और कुछ याद ही नहीं रहता··· मैं··· मैं···

मुझे लग रहा था कि हमारी चाह नंगे मुँह ओट से बाहर निकल आई है—हाँ, जो है सो है, तुम्हें मालूम तो था मैं यहीं ओट में खड़ी हूँ।

"मैं··· बिल्कुल वही साहू ! मैं··· मैं—मेरी समझ में नहीं आता सीमा, तुम्हें क्या उत्तर दूँ। तुम्हारे बारे में सोच-सोचकर मैं तुम्हारे वास्तविक अस्तित्व को भूल ही गया था। तुम इस पूरे समय में यहाँ थीं किंतु मुझे मालूम होने लगा था कि सीमा मेरे दिल और दिमाग़ में है, इसके सिवा और कोई सीमा है ही नहीं।"

"तो फिर तुम मेरे पास क्यों आए ?" मुझे अपने प्रिय मित्र पर दया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आ रही है और मैं सोच रही हूँ कि यदि मैं सचमुच उन दिनों हिम्मत करके उसे कहीं भगा ले जाती तो अच्छा होता। बनारस में मेरे दिल में अपनी सारी आयु साहू के साथ बिताने का ख़याल पैदा हुआ था। इस ख़याल के जन्म पर मुझे अपने अस्तित्व में कहीं कुदाल की एक नरम-सी चोट महसूस हुई थी और मेरी तहों से झरना फूट पड़ा था और घटनाओं का वसंत उमड़ आया था। मैं, मैं न रही। उसकी कहानी-सी बन गई : घनी, अजीब, जानी-पहचानी···

"बोलो न, मेरे पास क्यों आए हो ?" मैं अपने पति के बारे में भी सोच रही हूँ जो मेरे साथ ही लेटा होता है परंतु न जाने कहाँ होता है।

"मुझे मालूम नहीं सीमा, मैं क्यों चला आया हूँ··· इच्छा इतनी प्रबल हो तो रुककर सोचने का ख़याल ही नहीं आता··· आकर ही सोच आती है कि क्यों आए··· "

"क्या तुम्हें अब पश्चात्ताप हो रहा है कि क्यों आए ?" मुझे डर-सा लगने लगा है कि साहू कहीं हाँ न कह दे—जो मन में आए झट मुँह पर ले आता है··· "मुझे मालूम है साहू, तुम क्यों आए हो।" साहू मुझे बड़ा अच्छा लग रहा है और अपने लिए उसकी बेचैनी महसूस कर-करके मुझे चैन मिल रहा है। "एक बात कहूँ ? ··· (क्यों न कहूँ ?)··· साहू, उस सीमा को, मेरा मतलब है अपनी कल्पना को, लिख-लिखकर मस्तिष्क से निकाल दो और उसके स्थान पर मुझे अपने मस्तिष्क में डाल लो··· " हाय मैं कैसी बातें कर रही हूँ ? दिलीप को··· मैंने सिर झटक दिया है। मैंने कहा ही क्या है ? मैं दिलीप के सामने भी यह सबकुछ कहने को तैयार हूँ। मेरा और साहू का प्यार कुँआरा है और दिलीप का और मेरा प्यार ब्याहा जा चुका है··· मैं कुँआरी भी हूँ और ब्याहता भी। कुँआरी की अपनी कामना होती है और ब्याहता की अपनी। मैं किसी ब्याहता की कामना से साहू से थोड़े ही मिल रही हूँ—मैंने अपने-आपको बताया है··· किंतु यह भी तो हो सकता है कि··· कि··· कि मुझे गर्दन पर शायद किसी चींटी ने काटा है और मैंने उसे वहीं मसल दिया है··· यह कैसे हो सकता है ? मेरा और साहू का संबंध बौद्धिक है। हमारी बुद्धियों के हाथ-पैर कहाँ होते है जो वे किसी ऐसे-वैसे कर्म के दोषी हो सकें ? बुद्धियाँ तो बेचारी निरी-पुरी बुद्धियाँ हैं। दिलीप को हमारी बुद्धियों से क्या ख़तरा ? ख़तरा तो हमें स्वयं अपनी बुद्धि से है। यदि वह मुझसे बेपरवाही न बरते तो मैं साहू को अपना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाई मान लूँ और इक्का-दुक्का त्यौहारों पर उसकी आरती उतारूँ और उस समय तक दिलीप के बैडरूम का ग़लीचा बनकर बिछी रहूँ जब तक उसके पैरों के नीचे मेरे सारे फूल तार-तार न हो जाएँ, किंतु मैं क्या करूँ ? वह तो नंगे फ़र्श पर बैठा आँखें बंद किए तपस्या में मग्न रहता है कि तपस्वी के तेज से भस्म होकर रह जाऊँगी, किंतु वह मुझे भस्म भी नहीं होने देता, अपनी तपस्या से थक-हारकर अपने अल्प क्षणों में मेरे शरीर से ज़रा दिल बहला लेता है। मैं··· मैं उसके अल्प क्षणों की वस्तु हूँ··· उसका उत्तम समय उसकी तपस्या में व्यतीत होता है जब मैं उसके मस्तिष्क से पूरी तरह बाहर होती हूँ··· अब साढ़े-चार बजने को जा रहे है और डेढ़ घंटे में लोगों के ठट-के-ठट आ जाएँगे··· यदि वह अब तक आ जाता तो··· मैं टेलीफ़ोन करती हूँ--शायद वह भूल ही चुका हो कि आज हमारी शादी की वर्षगाँठ है—दो, एक—डैड्ड !···

जब दिलीप काम में लग हुआ हो तो हमारे सारे संबंध डैड्ड हो जाते हैं। उस समय हमारा संपर्क अपने-आप टूट जाता है।

''तुम इतनी परेशान क्यों हो सीमा ?''

''यदि मैं परेशान न भी हूँ, साहू, तो पता नहीं क्या हो जाऊँ !'' मेरा जी चाह रहा है कि मैं रो दूँ।

''क्या दिलीप से तुम्हारा कोई झगड़ा हो गया है ?''

''नहीं, वह मुझसे झगड़ता भी नहीं, बस हर समय अपने काम से प्यार करता है, काम से ही झगड़ा करता है। यदि वह मुझसे झगड़ा करता रहे तो मुझे उससे कोई शिकायत न हो, कुछ करे तो--शुरू-शुरू में मैं समझती रही कि मेरे लिए वह सबकुछ तज सकता है परंतु अब··· नहीं साहू मैं यह नहीं चाहती कि वह मेरे लिए सबकुछ छोड़-छाड़कर बैठ जाए किंतु··· '' मैं साहू को यह सबकुछ क्यों बता रही हूँ, और··· और मेरी बातें सुन-सुनकर साहू को दिलीप पर गुस्सा क्यों नहीं आ रहा ?

''हम सब अपने-अपने आदर्श के बंदी हैं सीमा।''

''नहीं साहू, मैं दिलीप को अपना जेलर बनने की इजाज़त नहीं दे सकती। उसे मेरा साथी बनना होगा। यदि वह मेरा साथी बन जाए तो मैं उसके लिए सबकुछ छोड़ सकती हूँ।'' मैंने अपने-आपको विश्वास दिलाया है कि साहू को भी छोड़ सकती हूँ। ''किंतु मैं अपने-आपको अपने आदर्श की कैद भुगतने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर तैयार नहीं कर सकती··· यदि दिलीप मुझे इसी तरह उपेक्षित करता रहा साहू तो··· तो··· " किंतु मैंने सोचा है, क्या फ़ायदा ? मैंने दिलीप को छोड़ दिया तो क्या साहू··· साहू और मैं··· मैं और साहू ? साहू बड़ी अच्छी कहानियाँ लिखता है किंतु उसके सारे परिणाम घटनाओं की परिणामहीनता की ओर संकेत करते हैं। यदि दिलीप ने मुझे छोड़ दिया तो शायद वह मेरी परिणामहीन ज़िंदगी को ही अपनी पूरी कहानी समझकर उसे यहीं छोड़ दे—"सीमा, अब तुम्हें दिलीप की सोहबत का एहसास उसकी जुदाई से हुआ करेगा।" अजीब है यह मेरा मित्र··· अपनी हालत पर रो देने की इच्छा होते हुए भी मैं मुसकराने लगी हूँ।

"मुसकरा क्यों रही हो सीमा ?"

"क्योंकि अपनी दोनों की समझ पर मेरा रो देने को जी चाह रहा है।"

"कैसे ?"

"अभी-अभी मुझे लगा है कि तुम मुझे समझा रहे हो—घबराओ नहीं सीमा, नेचर बड़ी उदार है, दिलीप ने यदि तुम्हें छोड़ दिया है तो क्या हुआ ? किसी से जुदा होकर भी उससे मिलना हो जाता है। मैंने मुसकराकर तुम्हें उत्तर दिया है—तुम ठीक कहते हो साहू, जुदाई मुलाक़ात का माध्यम है और मुलाक़ात जुदाई का। दिलीप से मिलकर मुझे यही एहसास होता है कि हम जुदा हो चुके हैं।" मुझे समझ में नहीं आ रहा कि मैं खुश हूँ या उदास···

"इतना सोचा मत करो सीमी, सोच-सोचकर आदमी अपनी सोच के लक्ष्य से वंचित रह जाता है।"

हाँ, मैं चाहती हूँ मैं सोचना बंद कर दूँ। मैंने साहू की बड़ी-बड़ी आँखों की ओर देखा है जो मुझे देख-देखकर मेरे अस्तित्व से भी बड़ी हो गई हैं और मेरा जी चाहा है कि मैं अपने-आपको, दिलीप को, अपनी शादी की वर्षगाँठ को भूलकर साहू की··· नहीं दिलीप की··· नहीं साहू की ? (दिलीप की आँखें छोटी होती हैं) आँखों में लंबी तानकर सो जाऊँ, और फिर वह अपनी आँखें बंद कर ले और मैं अंदर सोई पड़ी रहूँ, सुरक्षित और संतुष्ट··· मैं बहुत थक गई हूँ। दिलीप को मेरी थकन का ख़याल क्यों नहीं आता ? अब वह आ क्यों नहीं जाता ?··· मैंने अपनी घड़ी देखी है—पाँच ! और आधे घंटे में मेहमान आना शुरू हो जाएँगे परंतु यह महाशय बड़ी निश्चिंतता से अपनी ताला लगी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेबॉरेट्री में किसी विशेष बीमारी के कीटाणु स्टडी कर रहे होंगे। मुझे सहसा याद आया है कि पप्पा और मम्मी ने कहा था कि वे पाँच बजे तक आ जाएँगे—"साहू, मैं कपड़े बदलकर अभी आती हूँ।"

मैं तेज़-तेज़ ड्रेसिंग रूम में आ जाती हूँ और वार्डरोब खोलकर साड़ियों की ओर देखती हूँ। साहू को गहरा नीला रंग पसंद है और दिलीप को सफ़ेद। मैंने झट से एक सफ़ेद साड़ी पर हाथ रख दिया है जिसके किनारे गहरे नीले रंग के हैं। मैं जल्दी-जल्दी तैयार हो रही हूँ और अपने-आपको सावधान कर रही हूँ कि मुझे किसी प्रकार भी दिलीप से नहीं झगड़ना है! आज के दिन यदि हमारा झगड़ा हो गया तो मैं उसे कभी क्षमा न कर सकूँगी। वह आएगा तो मैं मुसकराकर आगे बढ़कर उसका हाथ थाम लूँगी, जैसे फिर से उसे अपने साथ विवाह करने का निमंत्रण दे रही हूँ। क्या··· क्या हम इसलिए वैडिंग एनीवर्सरी मनाते हैं कि सारे साल में यदि हम भूल से गए हों कि हमें सारी आयु इकट्ठा रहना है तो हमारी याददाश्त ताज़ा हो जाए और हमें नए सिरे से एक दूसरे से आशा बँध जाए।

अपनी साड़ी का नीला बार्डर मुझे बड़ा प्यारा लग रहा है और मैं सोचने लगी हूँ कि साहू अकेला बैठा-बैठा बोर हो रहा होगा। मैं और तेज़ी से तैयार होने लगी हूँ। शीशे के सामने बाल बनाते हुए मुझे अपना रूप भला लग रहा है और मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मैं अपना रूप नहीं देख रही, साहू मेरा रूप देख-देखकर मुझ पर मोहित हो रहा है और मुझे बड़ा आनंद आ रहा है। उसके दिल में न जाने क्या उठी है जो चुपचाप बनारस से यहाँ चला आया है। मैं जानती हूँ कि उसे नाटकीय ढंग से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना पसंद नहीं। वह तो अपनी श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर भावनाओं को भी मूक कर्म में छिपाकर रखता है मानो उनके प्रकट हो जाने से वह लज्जित होगा··· उस दिन हम बनारस के किसी बाज़ार से गुज़र रहे थे कि उसने हमें एक दुकान के सामने ठहरा लिया—

"अजय जब बहुत छोटा था सीमा, तो मैं इसी दुकान से उसके लिए गुब्बारे ले जाया करता था।"

"नमस्ते साहू साहब," दुकानदार ने उससे कहा, "आपके लिए एक बहुत सुंदर बुश्शर्ट दिखाऊँ ?"

"नहीं भई, अजय के लिए गुब्बारों का एक पैकेट दे दो। अबके वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिल्ली से आया तो उससे कहूँगा, पहले की तरह इन गुब्बारों से खेलकर दिखाओ बेटा।''

और अजय के आने से एक दिन पहले ही वह गुब्बारों को किसी दोस्त के बच्चों में बाँट आया।

''अजय को अपने भविष्य की प्रौढ़ आदतों की आवश्यकता है। मुझे उसका दोस्त बनकर उससे कुछ सीखने के अंदाज़ में उसे प्रौढ़ करना है। बचपन के तोतलेपन का अभ्यास करवाके अपनी ममता का विश्वास नहीं दिलाना।''

साहू मुझे अपने प्रेम का विश्वास दिलाने के लिए यहाँ नहीं आया है बल्कि मेरे प्रेम से विवश होकर यहाँ मेरे पास चला आया है—पूअर डीयर! यदि मैं उसकी मर्ज़ी से या मर्ज़ी के बिना एक बार उसे कसकर अपनी बाँहों में ले लूँ और··· वह अपनी विवशता पर काबू पा ले और··· और हमारी इस सृजनात्मक मुद्रा में मेरा विचार उसी एक में बह निकले कि अजय मेरी ही रगों में पल-पलकर बना है तो··· तो क्या हर्ज है ?··· क्या हर्ज है ? इससे दिलीप का क्या बिगड़ता है ?··· दिलीप अभी तक क्यों नहीं आया ?··· साहू आज पहली बार यहाँ आया तो ऐसे लगा कि जैसे प्रतिदिन बिल्कुल इसी समय सबकुछ छोड़-छाड़के आ जाता है, यह टाइम उसके हर रोज़ घर लौट आने का है। उसकी हर कहानी मेरी कोख से पैदा होती है। उसकी रचना पढ़कर मुझे सदा यही अनुभव होता है कि यही बात मेरी कोख में थी, उसकी रचना हमारी साँझी रचना है।

मैंने बेख़याली में अपने होठों की लाली को अधिक गहरा कर दिया है और उसे हल्का कर मुस्कराने लगी हूँ। दो-तीन दिन पहले दिलीप ने दफ़्तर से लौटकर बाहर लॉन ही में मुझे पकड़ लिया और मेरी लिपस्टिक से उसके होठ और ठोड़ी इस तरह लिथड़ गए जैसे किसी बच्चे ने रंग-बिरंगी स्वीट डिश खाके अपनी यह हालत बना ली हो।

''आओ अब भीतर जाके पहले तुम्हारा मुँह साफ़ करूँ, उसके बाद चाय मिलेगी।''

दिलीप की हर बात बचकाना है। इतना लापरवाह है कि लापरवाह न रहे तो मुझे कोई पराया मर्द मालूम होने लगे—लापरवाही की हद है। सवा पाँच हो रहे है किंतु अभी तक उसका अता-पता नहीं। कई बार कहा है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कम-से-कम फ़ोन ही कर दिया करो, किंतु आज मैं उससे बिल्कुल नहीं झगड़ूँगी।

मैंने आख़िरी बार शीशे में अपने-आप पर नज़र डाली है और इसमें मुझे यूँ लगा मानो दिलीप ने पीछे से मुझे अपनी पकड़ में ले लिया हो।

"छोड़ो, दरवाज़ा खुला है।"

मैं दरवाज़े से बाहर निकल आई हूँ।

दिलीप अभी तक क्यों नहीं आया ?

ड्राइंग रूम में पप्पा और मम्मी की आवाजें सुनाई दे रही हैं। मेरे क़दम जल्दी-जल्दी उठने लगे हैं... दिलीप अभी तक...

"पप्पा !... मम-ई !"

"हैलो डार्लिंग !"

वे मेरी ओर बढ़ रहे हैं और दोनों की नज़रें मेरी ओर उठी हुई हैं। उनकी आँखों में अपने लिए एक-सा प्यार महसूस करके मुझे लग रहा है कि वे एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं यद्यपि मेरा विचार है कि वे एक-दूसरे को पसंद नहीं करते। अपनी लंबी नापसंदी के कारण ही वे एक-दूसरे को इस तरह पसंद करते हैं।

"देखो हम तुम्हारे लिए क्या लाए हैं।"

मम्मी ने एक पैकेट खोला है।

"रबड़ की गुड़िया !... ब्यूटीफ़ुल !"

"तुम्हें पसंद है न, बेबी ?"

"हाँ, बहुत पसंद है, किंतु क्या तुम अभी तक मुझे नन्हीं बच्ची ही समझती हो मम्मी ?"

"नहीं, ज़रा बड़ी बच्ची !"

पप्पा हँसकर प्रशंसा की इच्छुक नज़रों से साहू की ओर देखने लगे हैं और साहू की समझ में नहीं आ रहा है कि वह भी हँसना शुरू कर दे या चुपचाप बैठा रहे—

"क्या आप साहू से मिल चुके हैं पप्पा-मम्मी ?"

"हाँ मिल चुके हैं," मम्मी ने साहू की ओर मुसकराकर सिर हिला दिया है और फिर अपनी गुड़िया की ओर खिंच गई है, "तुम्हें यह गुड़िया बहुत अच्छी लगी है ? है न बेबी ?"

"हाँ बहुत अच्छी !" गुड़िया की वेशभूषा नवजात शिशु की है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''तो फिर तुम अपने लिए ऐसी ही जीती-जागती गुड़िया क्यों नहीं उपलब्ध कर लेती ?''

मैंने शिकायत-भरी दृष्टि से साहू की ओर देखा है मानो मेरे निःसंतान होने का उत्तरदायित्व उसी पर हो··· दिलीप अभी तक क्यों नहीं आया ?

''चलो पप्पा, बाहर लॉन में चलते हैं। लोग अब आना शुरू हो जाएँगे।···

(कुछ भी हो, आज मैं दिलीप से झगड़ा नहीं करूँगी) ''पार्टी का प्रबंध बाहर ही किया गया है।''

हम बाहर आ रहे हैं और बाहर आते-आते मुझे सहसा मालूम हुआ है कि मैं गुड़िया को सीने से लगाए चल रही हूँ। मम्मी ने मेरी ओर मुसकराकर देखा है और मैं गुड़िया को अंदर रखने के लिए मुड़ गई हूँ और मुझे मम्मी की आवाज़ सुनाई दी है, ''अगली बार मैं तुम्हारी गुड़िया के लिए ढेर सारे खिलौने लाऊँगी बेबी।''

मैं कमरे से बाहर लौट रही हूँ। पप्पा साहू से पूछ रहे हैं कि तुमने हमारी बेबी पर क्या जादू कर रखा है ? तुम्हारे ही नाम की माला जपती रहती है··· और साहू ने शर्मीली-सी मुसकराहट से जाने क्या जवाब दिया है··· हमारे पड़ोसी मुहम्मद यूसुफ़ और उसकी पत्नी अपनी कार में बैठे गेट से प्रवेश कर रहे हैं। हम साथ-साथ ही रहते हैं परंतु एक-दूसरे से मिलने के लिए ऑटोमबील के आधीन हैं (अब भी दिलीप आ पहुँचे तो कोई बात नहीं···)

''तुम्हारा दिलीप कहाँ है बेबी ?'' पप्पा मुझसे संबोधित हैं—''उसे कहीं अपनी वैडिंग एनिवर्सरी का निमंत्रण देना भूल तो नहीं गई ?''

मुझे डर-सा लग रहा है कि कहीं मेरे आँसू न बह निकलें ! मेकअप ख़राब हो गया तो फिर अंदर जाना पड़ेगा।

''आइए यूसुफ़ साहब, आइए भाभी !''

''क्यों भई, क्या हम सबसे पहले आ गए हैं ?।''

(आप तो मेरे पति से भी पहले आए हैं) ''आइए ! वैलकम !''

(इनके स्वागत के लिए साहू ही क्यों नहीं मेरे साथ आ खड़ा होता ?)

कुछ और मेहमान भी गेट से प्रवेश कर रहे हैं। मेरे मस्तिष्क में एक कल्पना-सी उठी है कि अभी थोड़ी देर में (पौने छह से ऊपर बज चुके हैं)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दिलीप और अन्य मेहमान अंदर आ रहे होंगे और मैं और साहू यहाँ खड़े होकर सबका स्वागत कर रहे होंगे—वेलकम ! वेलकम ! आप सीधे ऑफिस से आ रहे हैं ? कोई बात नहीं, जाइए अंदर जाके मुँह-हाथ धोकर आइए… कोई बात नहीं, आपका अपना ही घर है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंद्रह

मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

दिलीप को आए कोई आधा घंटा हो चुका है।

जब वह आया तो लॉन में उपस्थित मेहमानों ने तालियाँ बजाना शुरू कर दिया और उन तालियों की गूँज में मेरा गुस्सा पिट-पिटकर स्वयं कहीं भाग गया··· अपने इन सभी मेहमानों को छोड़कर मैं कहाँ-कहाँ अपने गुस्से का पीछा करती।

वह मेरी ओर आ रहा था और उसके पीछे-पीछे उसकी सेक्रेट्री मिस अमीर अपने उखड़े-उखड़े कदम उठा रही थी। पुअर मिस अमीर ! मेरा दो-तिहाई काम तो वह, कर देती है वरना मुझे दिन-भर भी अपने लापरवाह पति की देखभाल करनी पड़ जाए तो पागल हो जाऊँ।

"आज मुझे अपने-आपको क्षमा कर देने दो सीमा, आगे ग़लती न होगी।"

मैं हँस पड़ी हूँ–

"तुम अपने-आपको सहर्ष क्षमा कर दो दिलीप, किंतु मैं अपने-आपको क्षमा न करूँगी।"

"तुमने किया ही क्या है ?"

"तुमसे शादी !"

"देख लो मिस अमीर," मुझे अपने पति का खुलापन बुरा नहीं लगता, "तुम नाहक दुखी रहती हो। यदि मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर देता तो तुम्हें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भी सीमा की तरह पश्चात्ताप होता।''

''मैं'' तुम'' तुम बहुत नॉटी हो डाक्टर'' '' मिस अमीर मानो बौखलाहट से अपनी साड़ी के अंदर-ही-अंदर अदृश्य हो जाना चाह रही थी और साड़ी में अपने-आपको ज्यों-का-त्यों पाकर बौखला रही थी।

''अरे दिलीप, इधर आओ, साहू से मिलो ! साहू, इधर आओ, दिलीप से मिलो !''

दिलीप ने साहू की ओर इस प्रकार देखा जैसे वह अपने पावरफुल माइक्रोस्कोप के नीचे अपने मतलब की वस्तु पाकर ज़रा चौंका हो और फिर अप्रसन्न हुआ हो—''यू आर वेलकम।''

साहू ने अपनी स्वप्निल दृष्टि के पट खोलकर उससे कहा, ''आ गए आप ? आइए !'' और तपाक से उससे हाथ मिलाने लगा।

मैंने साइंस और फिक्शन के तालमेल के लिए उन्हें अकेला छोड़ दिया है और मिस अमीर से कहा है कि अतिथियों की देखभाल में मेरी सहायता करे। उसने बड़ी गंभीरता से अतिथियों की देखभाल के लिए नज़र उठाई मानो दिलीप के किसी वैज्ञानिक प्रयोग की रीडिंग कर रही हो और मेरे साथ एक तरफ सरक आई।

सात बज रहे हैं। रात और दिन ने अपनी शादी रचा रखी है, या शायद वह भी अपनी वैडिंग एनीवर्सरी मना रहे हैं। दिन भी चौबीस घंटों में थोड़ी ही देर के लिए रात से मिलता है और उससे मिलकर रात भी ख़ुशी से गहरी होने लगती है तो थकन से दिन की आँखें मुँदना शुरू हो जाती हैं, किंतु इस समय रात और दिन दोनों जाग रहे हैं, गले मिल रहे हैं। मैं बहुत प्रसन्न हूँ और आनंद से परितृप्त होकर चाह रही हूँ कि आँखें भींच लूँ और अँधेरे में असंख्य तारे निकल आएँ और मैं उनकी नन्ही-मुन्ही चमक से परिपूर्ण हो जाऊँ और मेरे शरीर में नए जीवन का बीज पड़ जाए जिसके फूट पड़ने पर अगले प्रातःकाल का प्रकाश बिखरने लगे।

मैंने अपनी एक सहेली का बच्चा बाँहों में ले लिया है और मुझे इच्छा हुई कि सबसे अपना ध्यान हटाकर इससे प्यार करूँ। बच्चा बड़ा ही सुंदर है। मैंने उसे चूम लिया है, और मेरी सहेली के पति ने हम दोनों की ओर एक जानी-पहचानी-सी दृष्टि उठाई है और एक तीसरे व्यक्ति के समान अपने-आपको और अपनी सहेली के पति को देखकर मुझे महसूस हुआ है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कि मैं इस बच्चे की माँ हूँ और वह इसका बाप और मेरी सहेली कोई बाहर की स्त्री। मेरी सहेली ने हाथ बढ़ाकर अपने बच्चे को मुझसे ले लिया है और मैंने जाने क्यों साग्रह उसके पति से कहा है, "लीजिए, यह समोसा खाइए। आप तो कुछ भी नहीं खा रहे हैं।"

"नहीं, धन्यवाद, मेरा पेट भरा हुआ है।"

मैं आगे बढ़ गई हूँ और मुझे पता है कि वह अपनी रिझी-रिझी-सी आँखों से मेरी पीठ देखे जा रहा है, और मैं अपने पंख खोलकर हौले-हौले उड़ने के अंदाज में चल रही हूँ... मैं बहुत खुश हूँ और मुझे मालूम नहीं कि इतनी खुश क्यों हूँ—अपनी शादी की वर्षगाँठ के कारण, या साहू के आ जाने से या किसी और कारण जो मुझे मालूम नहीं या यों ही, या फिर क्यों ? मेरे पंख यथावत खुले हुए हैं, लेकिन पता नहीं मुझे कहाँ जाना है। इसी लॉन में कहीं जाना है ? नहीं इस लॉन में भी कहीं नहीं जाना है। जहाँ रुक गई, रुक गई। जहाँ उड़ गई, उड़ गई। अपनी खुशी में मेरा मन चाह रहा है कि कोई ऐसा काम करूँ कि पप्पा, मम्मी, दिलीप और... और साहू भी... सब स्कैंडलाइज्ड होकर रह जाएँ, लेकिन मैंने मम्मी बनकर अपने-आप को डाँटा है—शर्म नहीं आती ? ज़िम्मेवारी से काम लो ज़िम्मेवारी ? ज़िम्मेवारी क्या होती है ? मैं अपने पंख खोले आसमान के अंदर-ही-अंदर उड़ी जा रही हूँ और जब उड़-उड़कर बेदम हो जाऊँगी तो इतनी ऊँचाई से एकदम नीचे आ गिरूँगी और धरती की सतह पर पहुँचने से पहले ही मर जाऊगी। मुझे जीने-मरने की परवाह नहीं, परंतु जब तक मैं ज़िंदा हूँ बेपरवाह होकर जिए जाना चाहती हूँ... यह आज मुझे क्या हो रहा है ?... दिलीप मुझे अपनी सहूलियत के लिए इस्तेमाल किए जाना चाहता है और बस... मैं भी उसकी मिस अमीर हूँ... आज मुझे दिलीप से झगड़ा नहीं करना है, वह बहुत खुश है। मैं भी बहुत खुश हूँ... आज हमारी वैडिंग एनीवर्सरी है...

"हैलो सीमा !"

यह डाक्टर सरूप है, दिलीप का एक प्रोफ़ेशनल मित्र, जो अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद कैनेडा से योरपीय स्त्री ब्याह लाया था, परंतु उसकी पत्नी को भारत का जलवायु रास नहीं आया तो वह उसे छोड़कर वापिस कैनेडा चली गई। डॉ. सरूप हमारे घर हमेशा उस समय आता है जब दिलीप घर पर नहीं होता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मिसेज़ दिलीप, अगर मैं तुम्हें मेडम नाम से बुलाऊँ, तो कोई आपत्ति तो नहीं ?" उसने शुरू-शुरू में पूछा था।

"किसी को उसके अगले या पिछले नाम से बुलाया जाए तो उसमें आपत्ति की क्या बात हो सकती है ?"

"आपत्ति की बात तो नहीं, किंतु कोई और बात तो हो सकती है जिस पर आपत्ति की जा सके।"

"तो आपत्ति का प्रश्न उस समय पैदा होगा।"

डॉ. सरूप अपनी हर मुलाकात में आपत्ति का प्रश्न पैदा करना चाहता है परंतु अभी तक मैंने उसे कोई अवसर नहीं दिया, किंतु इस समय पता नहीं मैंने क्या किया है कि उसकी बाछें खिल गई हैं... शायद मैंने शरारत से अपनी एक आँख ज़रा-सी दबा दी है, या शायद कुछ भी न करते हुए बहुतकुछ कर दिया है, या शायद बहुतकुछ करके भी कुछ नहीं किया, पता नहीं क्या किया है...

"ओ... सीमा !"

किंतु मैं आगे बढ़ गई हूँ।

और मुझे मालूम है वह मेरी पीठ पर आँखें जमाए हुए है, जिसे मेरी नीले बार्डरवाली साड़ी ढाँपे हुए है। सारे आकाश में नीलाहट-ही-नीलाहट है और इस नीलाहट के पीछे से सितारों के झुंड-के-झुंड नाच-नाचकर चल रहे हैं और जब वे सारे-के-सारे बाहर निकल आएँगे तो एक बैडरूम में मैं और साहू चले जाएँगे और दूसरे में दिलीप और मेरा शरीर।

"मैं आपके लिए चाय तैयार करती हूँ अंकल।"

अंकल मुझे स्कूल के दिनों में हिंदी पढ़ाया करते थे। उनके दिमाग़ में मैं आज भी पंद्रह-सोलह वर्षीय कन्या हूँ जिसके निबंधों के बारे में उन्हें शिकायत थी कि उनमें प्रवाह नहीं होता। उनकी शिकायत उचित थी। आज तक मेरी सोच में क्रमबद्धता नहीं आ पाई और मुझे विश्वास है कि मेरा कोई वर्तमान निबंध भी उनकी दृष्टि से गुज़रे तो वे स्थान-स्थान पर लाल लकीरें खींचकर मुझसे पूछें कि आखिर तुम्हारे विचार इतने बिखरे-बिखरे क्यों हैं ? मैं आज भी उनके दिमाग़ में वही-की-वही हूँ। वास्तव में हम वही होते हैं जो दूसरों के दिमाग में हों, और जो कुछ हम दूसरों के दिमाग़ में होते हैं वे हमारी बजाय वही लोग होते हैं जिनके दिमाग में हम हों—जब मेरे यह मास्टरजी मुझे देखते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं तो यथार्थ में अपने-आपको देख रहे होते हैं इसी तरह दिलीप, साहू, सरूप सभी मुझे नहीं देखते, मुझे देख-देखकर अपना-आप ही देख रहे होते हैं। अपने-आप पर मेरा कोई बस नहीं। मैं सरूप की, दिलीप की, साहू की, अपने हर चाहनेवाले की संपत्ति हूँ।

"यह लीजिए अंकल, आपकी चाय !"

मैं प्रॉपर्टी हूँ। प्रॉपर्टी का अपने ऊपर कोई अधिकार नहीं होता। प्रॉपर्टी पर उसके स्वामी का अधिकार होता है। स्वामी की इच्छा हो तो ज़मीन को खेलने-कूदने के लिए खाली पड़ा रहने दे, और इच्छा हो तो खेतीबाड़ी करे।

मैं दिलीप के पास लौट आई हूँ। वहाँ साहू भी खड़ा है, और मेरे मम्मी-पप्पा भी और मेरी मम्मी दिलीप से कह रही है, "हम चाहते हैं दिलीप, अगले वर्ष हम तुम्हारे घर ढेर सारे खिलौने लाएँ। हमारी कामना पूरी करोगे न ?"

"हाँ मम्मी, तुम खिलौने लाओगी तो तुम्हारी गोद में बैठकर मैं घंटों खेलता रहूँगा।"

"और तुम्हारी गोद में भी एक गुड्डा होगा नॉटी ब्वॉय !"

"आजकल किस विषय पर काम कर रहे हो दिलीप ?"

"इतने सबजैक्ट हैं पप्पा कि समझ में नहीं आता किस-किस पर काम करूँ।" फिर उसने मेरी ओर मुँह मोड़ लिया है, "तुम आज्ञा दो सीमा तो मैं अपनी सेक्रेट्री से छोटी-सी शादी करके दो-चार साल दिन-रात लेबॉरेट्री में पड़ा रहूँ।"

"एक-एक करके अपने काम करो नादान।"

"आयु बहुत छोटी है पप्पा, इसलिए मुझे ही एक से दस बनना पड़ेगा। नेचर से शायद कहीं ग़लती हो गई है कि हमें इतना बड़ा मस्तिष्क दिया है और इतनी छोटी आयु।"

कई मेहमान जाने के लिए हमारी ओर आ रहे हैं।

"थैंक यू !"

"थैंक यू फॉर कमिंग !" (एंड फॉर गोइंग ! दिलीप मानों मन-ही-मन कह रहा हो¨)

मैं खुश हूँ कि हमारी शादी की वर्षगाँठ पर दिलीप आखिर पहुँच ही गया और सोच रही हूँ, मेरे लिए वह क्या लाया होगा ? कोई आकर्षक आभूषण ? नहीं, अपने काम से उसे अवकाश ही कहाँ मिला होगा ? वह तो बड़ी मुश्किल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से दफ़्तर से यहाँ पहुँच पाया है… और मुझे आभूषण लेकर करना भी क्या है ?… शायद आज उसने अपने-आपसे कोई नया वादा किया हो !… क्या वादा ?… कि… कि… नहीं, वह इतना अविश्वसनीय है कि मैं भरोसे से उसके बारे में कुछ सोच ही नहीं सकती। यह झूठ नहीं कि वह मुझे चाहता है किंतु कई और वस्तुएँ भी हैं जिन्हें वह बहुत चाहता है और जो उसे हमेशा भूली रहती हैं—काश वह एक की बजाए दो होता। एक वैज्ञानिक और दूसरा मेरा पति… उसे याद ही नहीं रहता कि वह पति भी है… क्या… क्या यह संभव नहीं कि मैं भी भूल जाऊँ कि मैं पत्नी हूँ।

आज मैं उससे झगड़ा नहीं करूँगी।

मुझे प्रतीक्षा है कि सब लोग चले जाएँ तो हम अकेले अपने बैडरूम में बातें करें। आज हम बहुत बातें करेंगे… मेरी आँखों में मम्मी की दी हुई गुड़िया की तसवीर घूम गई है (बच्चों के चेहरे तुरंत मेरे हृदय पर अंकित हो जाते हैं) जिसे मैं अपने बैड पर रख आई थी और रखके मुड़ी तो मुझे लगा था कि गुड़िया ने अपने नन्हें-मुन्ने हाथ उठाकर मुझे बुलाया है किंतु मैं तेज़ी से बाहर निकल आई थी।

गुड़िया अभी तक हमारे पलंग पर प्रतीक्षा कर रही होगी। मुझे प्रतीक्षा है कि…

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोलह

"फिर ?"

साहू सामने की कुर्सी पर से हड़बड़ा कर उठा है और मेरे पलंग की पायँती आ बैठा है।

"फिर मैंने दिलीप को साफ-साफ बता दिया कि हम दोनों का इकट्ठा रहना असंभव है। यदि तुमने ऑपरेशन करवा रखा था तो मुझसे शादी क्यों की, या शादी से पहले मुझे बताया क्यों नहीं ? क्या मैं उसकी रखैल हूँ साहू ? उसने मुझसे शादी करके मेरा अपमान किया है, मेरा उससे कोई संबंध नहीं··· मेरे पहलू का पलंग खाली पड़ा है। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मैंने दिलीप के साथ एक साल नहीं बिताया, बस एक रात बिताई है और सूर्य निकलने से पहले ही वह सबकी नज़रें बचाकर चला गया है। सारी रात मैं न मालूम क्या सोचती रही, न मालूम कब सो गई और डूब-डूबकर हाथ-पैर मारती रही और अब आँख खुली है तो वह जा चुका है। अपनी लेबॉरेट्री के सिवाय और कहाँ जाएगा ? अब वह शायद मेरे पास कभी नहीं आएगा, वहीं मिस अमीर के साथ सो जाया करेगा, कभी आ निकला तो एक ही रात के लिए आएगा—बस एक रात और काट लेने दो, जो चाहे ले लो, किंतु केवल एक रात और··· एक साल और···

"घबराओ नहीं सीमा !" साहू मुझसे कह रहा है—सब ठीक हो जाएगा, हम मिलकर सोचेंगे कि हमें क्या करना है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम दोनों मिलकर सोचते हैं किंतु करती केवल मैं ही हूँ। तुम भी कुछ क्यों नहीं करते¨ यदि साहू इस समय मुझसे कहे—आओ मेरे साथ, तो मैं किसी से, अपने-आपसे भी पूछे बिना उसके साथ हो लूँ किंतु वह मुझे अपने साथ नहीं रखता, अपने ख़यालों में रखता है। उसका ख़याल बड़ा विशाल है और उसके बिना इतनी विशालता में रह-रहकर मेरा दम घुटता है।

"लो, पहले चाय पियो सीमा।"

उसने चाय का कप मेरी ओर बढ़ाया है और मैंने उसकी आँखों में देखा है और हमेशा की तरह मुझे मालूम हुआ है कि मैं वहीं बैठी हूँ, उस वीरान विशालता में, जहाँ मैं ही मैं हूँ, वह नहीं है।

मैंने चाय का कप ले लिया है—

"रात को दिलीप सो गया साहू, तो मुझे एक विचित्र-सी सोच आई, नहीं इतनी विचित्र भी नहीं, क्योंकि जब यह सोच आई तो ज़रा भी अजनबी मालूम न हुई। मैंने सोचा मैं तुम्हारी पत्नी हूँ और तुमसे छुपकर यहाँ दिलीप के पास चली आई हूँ¨ और¨ और जानते हो क्या ? मैं अपने बिस्तर से उठी और तुम्हारे कमरे के सामने आ खड़ी हुई¨ तुम्हारा दरवाज़ा खुला था। मुझे मालूम था कि तुम्हारा दरवाज़ा मुझ पर कभी बंद न होगा। कमरे में प्रवेश कर यदि मैं अचानक सँभल न जाती तो¨ तो तुम्हारे साथ लेट जातीं और लेटते ही मुझे नींद आ जाती।

"पहले चाय पी लो सीमा, ठंडी हो रही है।"

"तुम मेरे विषय में कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं सोच रहे साहू ? मैं बड़ी नेक स्त्री हूँ। मुझसे केवल ग़लती हुई है, पाप नहीं। मुझमें और तुममें यह अंतर है कि ग़लती करके मेरी आँख खुल गई है और तुमने क्योंकि कोई ग़लती नहीं की, इसलिए बराबर सो रहे हो।"

साहू ने सिगरेट सुलगाने के लिए दियासलाई जलाई है और सिगरेट सुलग गया है और दियासलाई को बुझकर चैन आ गया है। वह मेरी ओर सरक रहा है और सरक-सरककर अपने-आपको सरकने से रोक रहा है।

"सीमा, मैंने समझ रखा था कि हम दो आत्माएँ हैं जो अपने-अपने शरीर से निकलकर जाने कहाँ मिलती हैं। मुझे हमेशा उनके चोर-ठिकानों की तलाश रही है¨ तुम ठीक कहती हो। मेरी ग़लती यही थी कि मैं ग़लती से बचा रहा। आत्माओं की भेंट बिस्तर के बिना संभव नहीं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभी-अभी मैं अपने आपको रोने से रोक रही थी और अब मेरी रोने की इच्छा अनायास हँस दी है। साहू मेरे इतने निकट सरक आया है कि और सरकने की जगह नहीं रही है।

"सीमा, हमारी आत्माएँ अपने-अपने शरीर में लौट आई हैं। हमारे शरीर एक-दूसरे से अनजान बने रहे तो आत्माओं के अलग-अलग कारागृह बनकर रह जाएँगे¨ उसने मेरे दोनों हाथ थाम लिए हैं, हमारी आत्माएँ हमारे हाथों में आलिंगित हो रही हैं। हमारी शादी हो रही है। हमारे शरीरों में बाजे बजने लगे हैं। हम एक-दूसरे से लिपट गए हैं और लिपटकर हमें पता चला है कि हम लिपटना चाह रहे थे और हम लिपटकर लेट गए हैं और मेरी घोर उदासी ने आनंदविभोर हो अपनी आँखें बंद कर ली हैं और मम्मी की दी हुई गुड़िया मेरे मस्तिष्क में खिल उठी है।

और मैंने आँखें खोल ली हैं—

और जैसे कि मैं आँखें बंद किए भी जानती थी, साहू मेरे चेहरे पर टिकटकी बाँधे हुए है।

"क्या सोच रहे हो साहू ?"

"सोचना मुझे बेअर्थ लग रहा है सीमा, सोच-सोचकर मैं तुम्हें खो रहा था¨ " उसने अपना मुख मेरी ओर बढ़ाया है और बोलते-बोलते मेरे होंठ चूम रहा है—"और सोचे बिना तुम्हें पा लिया है¨ सीमा, मुझे विश्वास है कि जब तक मैं सोचना शुरू न करूँगा, तुम्हें पाए रखूँगा। तुम्हारे सिवा हर वस्तु महत्त्वहीन है, तुम हो तो सबकुछ है¨ "

मेरा बेटा अपने नन्हे-मुन्ने हाथ मेरे शरीर पर मार रहा है।

"सो जा मेरे बेटे, तुम्हारा बाप हमें हमेशा के लिए छोड़कर चला गया है।" "सीमा !¨ सी¨ !"

"दिलीप !¨ मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है दिलीप ?"—मैं सहसा रो पड़ी हूँ और ढलान की तरफ बह निकली हूँ और फूट-फूटकर बहते हुए प्रपात बन गई हूँ।

"दिलीप ! !"

और नीचे दूर-दूर सूखे हुए मैदान सिंचित हो रहे हैं¨

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्षरा फाउण्डेशन
सोराब हाउस, कोलाबा कॉज़वे
मुम्बई, द्वारा प्रदत्त
उपहार

सत्रह

साहू वापिस बनारस जा चुका है।

दिलीप लेबॉरेट्री से लौट आया है।

और मुझे आभास हो रहा है कि मेरी कोख में साहू का बच्चा पलना शुरू हो गया है दो-एक मास में पता चल जाएगा कि···

परंतु दिलीप ?

नहीं दिलीप को क्या आपत्ति होगी ? उसे तो खुश होना चाहिए कि जब वह अपने बड़े-बड़े कामों में उलझा हुआ था तो किसी और ने उसका यह छोटा-सा घरेलू कार्य पूर्ण कर दिया··· या शायद वह खुश हो न नाराज़ हो··· जो है सो है, उसे सहर्ष स्वीकार न करना अवैज्ञानिक आचरण है।

और मैं ?

नॉनसेंस ! मुझे क्या चिंता है ! मुझे विश्वास है साहू और मैं हमेशा एक-दूसरे से प्रेम करते रहेंगे··· दिलीप और मैं बड़े मज़े से, चुपके से पति और पत्नी बनकर गुज़ार देंगे··· और मैं साहू के पौधे को सींच-सींचकर ऊँचा करती रहूँगी, और दिलीप अपनी धुन में साइंस के महान आविष्कार करता रहेगा···

और···

और क्या, जो है सो है ही !

■■

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश
सारांश

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोगेंद्र पॉल

जन्म : 5 सितंबर 1925। स्थान : स्यालकोट (पाकिस्तान)। मर्रे कालिज, स्यालकोट से बी.ए.। एम.ए. (अंग्रेजी) की तैयारी के दौरान 1947 में देश-विभाजन पर हिंदुस्तान आना हो गया। यहाँ अंबाला में कोई साल-भर पिता की दुकान पर दूध का धंधा। उन्हीं के शब्दों में, "मैं हर रोज सुबह तारों की छाँव में साइकिल की दोनों ओर कैरियर पर बड़े-बड़े कैन बाँधे आसपास के देहात से दूध लाने निकल जाता और चालीसेक किलोमीटर तय करके लौटता। एक बार जंगल में एक डाकू ने आ लिया, मगर जब मैं गुस्से में चिल्लाया कि ले जाओ मेरी साइकिल को, और इस दूध भरे कैन को और... और मुझे भी, तो वो हँसने लगा और वहीं कहीं अपने घर ले जाकर उसने मुझे नाश्ता करवाया और फिर छोड़ दिया।"

1948 में कीनिया (पूर्वी अफ्रीका) के एक खाते-पीते भारतीय घराने की लड़की से शादी। 1955 में छः माह की छुट्टी पर भारत आए तो अपना एम.ए. (अंग्रेजी) पूरा किया। 1964 में कीनिया के शिक्षा मंत्रालय की सेवा से त्यागपत्र और स्वदेश वापसी। यहाँ औरंगाबाद, दकन के सरस्वती भवन कॉलेज में पहले साल प्रोफेसर और अंग्रेजी विभागाध्यक्ष और फिर 1978 तक यहीं प्राचार्य। प्राचार्य-पद से इसलिए इस्तीफा दिया कि "पढ़ा तो बहुत लिया, अब कुछ पढ़ भी लूँ।" तब से अब तक दिल्ली में रह रहे हैं। उर्दू कहानियों के सात संग्रह, लघु कथाओं की दो पुस्तकें, दो उपन्यासिकाएँ और तीन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। मोहम्मद अली सिद्दीक़ी (डान का 'एरियल') ने इनके फ़न पर अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए लिखा है, "कुछ लोग उर्दू से सिर्फ इसलिए मोहब्बत करेंगे कि जोगेंद्र पॉल जैसा फ़नकार इस ज़बान में अपनी फ़िक्र के मोती बिखेर रहा है।"

CC-0. Chandigarh Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सारांश प्रकाशन की स्थापना एक उद्देश्य को समर्पित संस्था के रूप में की गई है—एक ऐसी संस्था के रूप में जो मुद्रण एवं प्रस्तुतीकरण के स्तर पर ही नहीं बल्कि रचना एवं रचनाकार के स्तर पर भी उत्कृष्टता की प्रतीक बने; जिसके लिए प्रकाशन कर्म एक सामाजिक सरोकार हो, उत्तरदायित्व हो; जो हिन्दी साहित्य के प्रकाशन के साथ-साथ, भारतीय तथा विश्व-साहित्य के अनुवादों और समाज-संस्कृति-अर्थ-राजनीति से जुड़े ज्वलंत सवालों पर वैचारिक लेखन के प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध हो।

सारांश प्रकाशन

भारतीय एवं विश्व साहित्य का प्रगतिशील मंच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant